३०
१

भाषातत्त्वदीपिका

अर्थात्

हिन्दी भाषा का व्याकरण

जिसको

मध्य देश के साहब डैरेक्टर बीरेश की आज्ञानुसार

हरिगोपालोपाध्याय बी०ए०मध्य देशीय असिस्टएटइन्स्पेक्टर ने बनाया

और

अब उक्त महाराज की आज्ञा से देवीप्रसाद हेडमास्टर माडलस्कूल अमीनाबाद ने अवध देशीय पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये यथोचित रूपान्तर किया

पश्चिमोत्तरदेशऔर अवधके श्रीमान् इन्स्पेक्टर जनरलबीरेशकी आज्ञानुकूल

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के यन्त्रालय में छपा

फ़रवरी सन् १८८१ ईसवी

——oo——

Bhásha Tatwa Dípiká,

OR

A HINDI GRAMMAR,

FOR

THE USE OF NATIVE STUDENTS OF THE SCHOOLS IN THE PROVINCE OF OUDH.

BY

Hari Gopálopádhyáya, B. A.

Assistant Inspector of Schools Central Provinces.

Revised by

PANDIT DEVI PRASADA

Head Master Model School Aminábád

——oo——

LUCKNOW:

PRINTED AT THE NAVALA KISORA—PRESS.

February 1881.
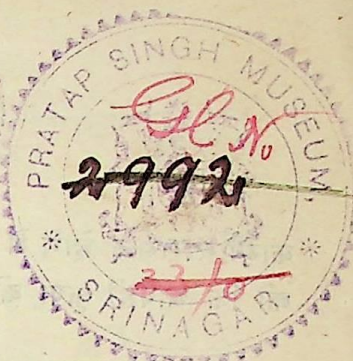
भूमिका

प्रकट होय कि हिन्दी भाषा के व्याकरण पर कई एक ग्रन्थ बने हैं, एक आदम साहब कृत व्याकरण, दूसरा भाषा चन्द्रोदय, तीसरा भाषा तत्वबोधिनी, यद्यपि इन ग्रंथों में सामान्यतः विवेचन अच्छी प्रकार किया है तथापि कईएक स्थलों में अशुद्धता, न्यूनता, अप्रयोजनता देखकर, बहु विद्या निपुण, गुणग्राहक, दयानिधान, परोपकारक, मध्य देशके पौरजान पदीय शालोपदेशक श्रीयुत कालिन्ब्रौनिङ्ग साहब एम० ए० इन्स्पेक्टर जनरल वीरेश ने निर्दोष, उत्तम, व्याकरण की रचना के निमित, सागर हैस्कूल के संस्कृत प्रोफ़ेसर पण्डित हरिगोपालोपाध्याय बी० ए० को यथा विधि अपने इस रचना के सङ्कल्प से प्रबुद्ध कर साधन भूत दो तीन पुस्तकें कृपा कीं; और पूर्वोक्त उपाध्याय जी ने उनकी गुणग्राहकता से आनन्दित होय बहु परिश्रम से फार्बस साहब कृत व्याकरण, दादो साहब कृत मरहटी व्याकरण, हावर्ड कृत, अर्नाल्ड कृत ग्रंथ, मोरेल कृत वाक्य पृथक्करण और एथरिङ्गटन साहब कृत व्याकरण आदि ग्रंथों के सविचारावलोकन रूप मथन से सारांश भूत नवनीत निकाल यथामति भाषा तत्वदीपिका रच-ए कर गत तीन वर्ष के अवसर में कि उक्त श्रीयुत, कालिनब्रौनिङ्ग साहब नाम० ए० अवध देशीयपाठशालाध्यक्ष वीरेश हैं नीराजन किया; और श्री महाराजा ने अति आनन्दित होय, अवध देश पश्चिमोत्तर देश और मध्यदेशादि में इसको प्रकाशित और प्रचार कराय ग्रंथकार का पारि-मषिकादि प्रतिष्ठा से परिश्रम सफल कराया; परन्तु महाशय वीरेश को अवध देशीय यात्रामें विद्यार्थियोंकी परीक्षा और विद्वज्जनों के परिभाषण, समागम से इस ग्रन्थके किसी २ स्थल में काठिन्यतादि विदित हुईं और व्याकरण के चतुर्थ भाग छन्दो बोधक भी अति अनुराग हुआ तो ग्रन्थ-कार से इसकी संक्षेप रचना का अभिप्राय प्रकट किया; जोकि उनको

कार्य्यान्तरासक्त होने से इस अवसर में सावकाश न था महाशय से प्रार्थना की कि आपही कृपा करें ॥

इस कारण महाशय की अनुमति से पण्डित देवीप्रसाद हेडमास्टर माडल स्कूल अमीनाबाद की द्वारा यह ग्रन्थ अगम्य कठिन स्थलों से निर्द्वन्द्व और छन्दोंबोध से अलङ्कृत होय विद्यार्थियों के शृङ्गार के लिये पुनः मुद्रित हुआ वही अब पश्चिमोत्तर व अवधदेश की पाठशालाओं के इन्स्पेक्टर बीरेश की आज्ञानुकूल छापा गया—निश्चय है कि विद्वज्जन अंगीकार करें ॥

आज्ञा ॥

जो कि यह पुस्तक सर्व साधारण है अर्थात् नार्मल तहसीली और देहाती सब पाठशालाओं में व्याकरण का बोधक है इसलिये महाशय धीरेश की आज्ञा है कि देहाती और तहसीली शाला के पाठक विद्यार्थियों का अधिकार देखकर सन्धि, समास आदि प्रकरणों को ग्रंथकी परि समाप्तिमें पढ़ावें और छन्दोबोध की देहाती में आवश्यकता नहीं ॥

इति

सूचीपत्र ॥

इति

श्री सच्चिदानन्द मूर्त्तये नमः ॥

भाषा तत्त्वदीपिका

अर्थात्

हिन्दी भाषा का व्याकरण ॥

व्याकरण का लक्षण और उसके भाग ॥

प्रश्न व्याकरण क्या है और उससे क्या लाभ होता है ?

उत्तर व्याकरण एक शास्त्र है कि जिससे शुद्ध बोलने और लिखने का ज्ञान होताहै ॥

प्र० इस शास्त्र के मुख्य भाग कौन २ हैं ?

उ० **वर्ण विचार, शब्द विचार, वाक्य रचना,** और **छन्दोरचना** ये चार भाग हैं ॥

---

१ पाठ

वर्ण विचार और वर्णों की गणना ॥

प्र० वर्ण विचार में किसका वर्णन कियाजाता है ?

उ० वर्ण विचार में वर्णोंका **लक्षण, संयोग, उच्चारण स्थान,** और **सन्धि** इनका वर्णन कियाजाता है ॥

प्र० वर्णों के कितने भेद हैं ?

उ० **स्वर** और **व्यंजन** ये दो भेद हैं ॥

प्र० स्वर किन वर्णों को कहते हैं ?

उ० स्वर उन वर्णों को कहतेहैं कि जो केवल आपही बोले जांय,

और उनको संस्कृत में अच् कहतेहैं; जैसा अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ*, ए, ऐ, ओ, औ, इन तरह अक्षरों को स्वर कहते हैं ॥

प्र० व्यञ्जन किनको कहतेहैं?

उ० व्यञ्जन उनको कहते हैं कि जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता बिना न होसके, और उनको संस्कृत में हल् कहते हैं ॥

	व्यञ्जन	संज्ञा.		व्यञ्जन	संज्ञा.
१	क् ख् ग् घ् ङ्	कवर्ग.	२	च् छ् ज् झ् ञ्	चवर्ग.
३	ट् ठ् ड् ढ् ण्	टवर्ग	४	त् थ् द् ध् न्	तवर्ग.
५	प् फ् ब् भ् म्	पवर्ग.	६	य् र् ल् व्	अन्तस्थवर्ण.
७	श् ष् स् ह्	ऊष्मवर्ण.			

इन ३३ अक्षरों को व्यञ्जन कहते हैं और इनका स्पष्ट उच्चारण स्वरके योग से, होता है; जैसा, क्+अ=का, अ+क्=अक् इत्यादि ॥

इन व्यञ्जनो में (अ) मिलाकर शिक्षक लोग व्यञ्जन बतलाते हैं, जैसा क, ख, ग, घ, ङ, इत्यादि ॥ इस तरह से व्यञ्जन बताने में कुछ हानि नहीं, पर व्यञ्जनों के मूल रूप में अ केवल स्पष्ट उच्चारण के लिये जोड़ा जाता है, यह ध्यान में रखना चाहिये + ॥

---

२ पाठ

स्वरों के भेद ॥

प्र० स्वरों में कौन २ ह्रस्व, कौन २ दीर्घ, वा संयुक्त हैं ?

उ० अ इ उ ऋ ऌ ये पांच **ह्रस्व हैं,**

आ ई ऊ ॠ ये चार **दीर्घ हैं,**

ए ऐ ओ औ ये चार **संयुक्त हैं** और **दीर्घ** भी कहाते हैं,

इनको संयुक्त कहने का कारण सन्धि प्रकरण में स्पष्ट किया जायगा ॥

---

* ऌ यह अक्षर देवनागरी वर्णमाला का नहीं है, संस्कृत ग्रन्थ में भी यह अक्षर कभी नहीं आता, फिर हिन्दी में कहां से आवेगा ? इसलिये ऌ वर्ण को यहां नहीं लिखा ॥

+ किसी अक्षर के आगे कार जोड़ने से वह अक्षर समझा जाता है जैसा अकार कहने से अ समझते हैं ॥

इन में से अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ ये मूल स्वर अथवा प्रधान स्वर कहाते हैं ॥

प्र० स्वरों का और कोई भेद है ?

उ० स्वरों का तीसरा भेत प्लुत है; **ह्रस्व दीर्घ** और **प्लुत** ये भेद मात्रा से होते हैं, और मात्रा का अर्थ परिमाण अर्थात् उच्चारण काल का मापना जाना जाता है ॥

प्र० मात्रा किसको कहते हैं ?

उ० ह्रस्व स्वर के उच्चारण में जो काल लगता है उसे एक मात्रा कहते हैं, और दीर्घ स्वर के उच्चारण में ह्रस्व से दूना काल लगता है और प्लुत के उच्चारण में तिगुना काल लगता है, इसी से ह्रस्व को **एकमात्रिक** दीर्घ को **द्विमात्रिक** और प्लुत को **त्रिमात्रिक** कहतेहैं ॥

प्र० प्लुत का उच्चारण किस जगह होता है ?

उ० जहां किसी को दूर से पुकारते हैं वहां प्लुत बोला जाता है; जैसा अय कृष्ण ३ कृष्णारे ३, यहां कृष्ण शब्द के अंत्य स्वर को और अरे के अंत्य एकार को प्लुत बोलते हैं और उसकी पहचान के लिये ३ का अंक लिख देते हैं ॥

प्र० स्वर निरनुनासिक वा सानुनासिक हैं या नहीं ?

उ० सब स्वर निरनुनासिक और सानुनासिक के भेद से दो प्रकारके होते हैं ॥ जिनका उच्चारण केवल मुख से होवे वे निरनुनासिक, जैसा अ आ, और जो नासिका सहित मुख से बोले जांय, वे सानुनासिक जैसा अँ आँ, इ० ॥ सानुनासिक का चिन्ह ँ यह है ॥

प्र० अनुस्वार और विसर्ग किनको कहते हैं ?

उ० नासिका से जिसका उच्चारण होता है और जिसको बताने के लिये स्वर के सिर पर (ं) ऐसा चिन्ह करते हैं उसे अनुस्वार जानो, अनुस्वार का उच्चारण स्वर के उच्चारण के पश्चात् होता है स्वर के आगे जो (:) ऐसा दो बिंदुओं का चिन्ह लिखा जाता है, उसे विसर्ग कहते हैं, और कंठ से वह बोला जाता है, इससे स्पष्ट है कि इन दोनों चिन्होंका

उच्चारण स्वर के साथ होनेसे दो प्रकार के रूप हुए जैसा अ अं अः, इ इं इः ॥

प्र० हिन्दी भाषा में कौन स्वर आते हैं ?

उ० ऋ ॠ ऌ इन तीनों को छोड़ शेष दश स्वर हिन्दी भाषा में आते हैं और ये तीन केवल संस्कृत में आते हैं

---

३ पाठ

वर्ण माला ॥

प्र० व्यञ्जन के साथ स्वर मिलने से कैसा रूप बनता है ?

उ० व्यञ्जनके साथ स्वर मिलने से वर्णमाला बनती है, पर इस मेल में अ को छोड़ शेष स्वरों के रूप बदल जाते हैं॥ स्वरके (ा) इस रूपान्तर को मात्रा कहते हैं, ये मात्रा रूप व्यञ्जन को जोड़ने से वर्णमाला बनजाती है; ॥

जैसा व्यञ्जन को स्वर की मात्रा मिलने से सिद्ध अक्षर हुआ है ॥

क्	अ	~	क
क्	आ	ा	का
क्	इ	ि	कि
क्	ई	ी	की
क्	उ	ु	कु
क्	ऊ	ू	कू
क्	ऋ	ृ	कृ
क्	ॠ	ॄ	कॄ
क्	ऌ	ॢ	कॢ
क्	ए	े	के
क्	ऐ	ै	कै
क्	ओ	ो	को
क्	औ	ौ	कौ
क्	अं	ं	कं
क्	अः	ः	कः

प्र० व्यञ्जनों में से कौन २ व्यञ्जन हिन्दी में नहीं आते है ?

उ० ङ् ञ् ण् ष् ये चार नहीं आते केवल संस्कृत में आते हैं, परंतु हिन्दी भाषामें संस्कृत शब्द बहुत मिलेहैं इस लिये इनका जानना अवश्यहै ॥

---

४ पाठ

संयुक्त अक्षर

प्र० संयोग किसे कहतेहैं ?

उ० दो अथवा तीन आदि व्यंजनों के मिलने को संयोग कहतेहैं जैसा, शब्द, माहात्म्य, यहां ब् द का संयोग और त् म् य का संयोग जानो, ऐसे अक्षरों को संयुक्ताक्षर कहतेहैं ॥

प्र० संयुक्ताक्षर कैसे लिखा जाता है ? +

उ० संयुक्ताक्षर सामान्यतः ऐसा लिखा जाताहै कि पहिले व्यंजन में का ना न होवे तो उसका आधा रूप लिखकर उसके नीचे वा कभी २ आगे जैसा द् + य,=द्य, ड् + य = ड्य और का ना होवे तो गिराकर उस वर्णके आगे दूसरा स्वर युक्त अक्षर पूरा लिखा जाता है ङ्+ग=ङ्ग, ग्+म=ग्म, इत्यादि ॥ दूसरे वर्ण में स्वर न होवे तो उसका भी पूर्वोक्त रीति से आधारूप लिखकर तीसरा स्वरयुक्त वर्ण लिखतेहैं जैसा त्+म्+य= त्म्य, ल्+प्+य=ल्प्य इत्यादि; ङ छ ट ठ ड ढ ये अक्षर संयोग की आदि में संपूर्ण लिखे जाते हैं ॥ जैसा ट्म, ङ्क्ष, द्व इ० ॥ और क्ष और ज्ञ को मूल व्यंजनों में गिनतेहैं, पर ये अक्षर संयुक्त हैं, क्योंकि क् और ष मिल

+ वर्णमाला के अक्षर दो स्वरूप से लिखे जाते हैं (१) खड़ी पाई समेत. यथा क, ख, ग, घ, च, ज, झ, ण, त, थ, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, ल, श, ष, स, और (२) विना खड़ी पाई के जैसा ङ, छ, ट, ठ, ड, ढ, द, र, ह, खड़ी पाई के अक्षर जब किसी अक्षर में मिलतें हैं तो वे अपने आधे स्वरूप से मिलते हैं परंतु अन्त के अक्षर का स्वरूप पूराही बना रहता है जैसे स्पष्ट शब्दमें दोनों रूप दिखाई देते हैं, और बिना खड़ी पाई के र को छोड़ सब अक्षर जब किसी अक्षर में मिलतेहैं तो वे अपने पूरेही रूपसे लिखे जाते हैं, जैसे छुट्टा परंतु र सदैव आधे रूपसे लिखा जाता है जैसे कर्म आदि, निस्स्वर अक्षर अगले वर्ण में मिलता है ॥

कर ञ्च, ज्+ञ=ज्ञ बने हैं, इसलिये इनको संयुक्ताक्षर कहना चाहिये॥

प्र० र् का संयोग कैसे होता है ?

उ० जिस व्यंजन में काना नहीं है उसके नीचे (्र) ऐसा चिन्ह लगाते हैं जैसा ड्र द्र इत्यादि; और कानावाले व्यंजन को (्र) ऐसा चिन्ह जोड़ते हैं जैसा प्+र=प्र, और कभी दूसरे अक्षर के आदि में मिले तो उसके सिरपर ऐसा (र्‍) चिन्ह करते हैं और उसे रेफ बोलते हैं जैसा गर्ब वर्ण सर्ब इत्यादि॥

प्र० (श) को व्यंजन में जोड़ना होवे तो कैसा लिखते हैं ?

उ० श्, श, इन दोनों रूपों से मिलाते हैं जैसा प्रश्न प्रश्न॥

---

५ पाठ

स्थान विचार॥

प्र० वर्णों का उच्चारण स्थान किसे कहते हैं ?

उ० मुखके जिस भाग से जिन वर्णों का उच्चारण होवेगा, उसी भाग को उन वर्णोंका स्थान कहते हैं॥

प्र० किन२ अक्षरों के कौन२ स्थान हैं ?

उ० अ आ क ख ग घ ङ ह और विसर्ग इनका कंठ स्थान है और कंठ्य कहलाते हैं॥

इ ई च छ ज झ ञ य श ये तालु से बोले जाते हैं और तालव्य कहाते हैं॥

ऋ ॠ टवर्ग र ष ये मूर्द्धा अर्थात् तालु से कुछ ऊपर जीभ लगाने से बोले जाते हैं और मूर्द्धन्य कहाते हैं॥

ऌ तवर्ग ल स इन का दन्त स्थान है और दंत्य कहलाते हैं॥

उ ऊ पवर्ग इनका ओष्ठ स्थान है और ओष्ठ्य कहाते हैं॥

ए ऐ कंठ और तालुसे बोले जाते हैं और उनको कंठ तालव्य कहते हैं॥

ओ औ कंठ और ओष्ठ से बोले जाते हैं और कंठोष्ठ्य कहाते हैं

वदांत और ओष्ठ से बोला जाता है और दन्तोष्ठ्य कहाता है॥

ङ ञ ण न म ये स्ववर्गोक्त स्थान और नासिका से बोले जाते हैं और अनु नासिक कहाते हैं ॥

---

६ पाठ

संधि विचार

स्वर संधि ॥

यह सन्धि प्रकरण संस्कृत भाषा के व्याकरण का भाग है; शुद्ध हिन्दी में सन्धि नहीं होती है; पर हिन्दी में संस्कृत शब्द बहुत हैं और तुलसी दास कृत रामायणादि ग्रंथों में सन्धियां बहुतसी आती हैं, इसलिये मुख्य २ नियम जानना अवश्य है ॥*

प्र० संधि किसे कहते हैं ?

उ० दो वर्ण परस्पर निकट आकर एकरूप से वा रूपान्तर से मिले तो उस मेल को संधि कहते हैं ॥

प्र० संधि कितने प्रकार की हैं ?

उ० स्वरसंधि और व्यञ्जन संधि ये दो प्रकार हैं ॥

प्र० स्वरसंधि और व्यञ्जन संधि किनको कहते हैं ?

उ० दो स्वरों की सन्धिस्वरसंधि कहाती है; व्यंजन और स्वर की सन्धि, वा दो व्यंजनों की व्यञ्जन सन्धि कहाती है ॥

प्र० स्वरसन्धि किस प्रकार से होती है ?

उ० अ इ उ ऋ ह्रस्व अथवा दीर्घ इनके परे सजातीय ह्रस्व वा दीर्घ स्वर यथा क्रमसे आवें तो दोनों मिलकर दीर्घ आदेश होता है; ॥ जैसा

अ वा आ + अ वा आ=आ	इ वा ई + इ वा ई=ई
उ वा ऊ + उ वा ऊ=ऊ	ऋ वा ॠ + ऋ वा ॠ=ॠ

---

* पाठक को उचित है कि इस प्रकरण को पुस्तक के अन्त में विचार पूर्वक शिक्षा करे ॥

उदाहरण

मूलस्थिति	सिद्धरूप	मूलस्थिति	सिद्धरूप
ज्ञान + अभाव	=ज्ञानाभाव	धर्म + आज्ञा	=धर्माज्ञा
गङ्गा + ऐर्षा	=गङ्गैर्षा	सीता + आश्रय	=सीताश्रय
हरि + इच्छा	=हरीच्छा	करी + इन्द्र	=करीन्द्र
भानु + उदय	=भानूदय	भू + ऊर्ध्व	=भूर्ध्व
पितृ + ऋण	=पितृण इत्यादि		

प्र० विजातीय स्वरोंकी संधि कैसी होती है ?

उ० अ अथवा आ इनके आगे इ अथवा ई आवे तो दोनों मिलकर ए आदेश होता है; इसी तरह उ वा ऊ आवे तो ओ; ऋ वा ॠ; आवे तो अर; ऌ होवे तो अल्; ए वा ऐ आवे तो ऐ; ओ वा औ होवे तो औ; आदेश होते हैं ॥ जैसा

अ वा आ + इ वा ई=ए	अ वा आ + उ वा ऊ=ओ
अ वा आ + ऋ वा ॠ=अर्	अ वा आ + ऌ=अल्
अ वा आ + ए वा ऐ=ऐ	अ वा आ + ओ वा औ=औ

उदाहरण

देव + इन्द्र	=देवेन्द्र	रमा + ईश	=रमेश
सूर्य + उदय	=सूर्योदय	महा + ऊर्मिला	=महोर्मिला
महा + ऋषि:	=महर्षि:	तव + ऌकार	=तवल्कार
एक + एक	=एकैक	महा + ऐश्वर्य	=महैश्वर्य
चित्त + औदार्य्य	=चित्तौदार्य्य	गंगा + ओघ	=गंगौघ इत्यादि

प्र० स्वरों में से अ आ को छोड़ कर बाक़ी स्वरों के परस्पर आगे पीछे होने से कैसी संधि होती है ?

उ० इ वा ई, उ वा ऊ, ऋ वा ॠ, ऌ, इनके परे विजातीय स्वर होवे तो य् व् र् ल् ये आदेश पूर्व इकारादिकों के स्थान में क्रम से होते हैं ॥

इ वा ई + { अ वा आ = य वा या, उ वा ऊ = यु वा यू, ऋ वा ॠ = यृ वा यॄ, ए वा ऐ = ये वा यै, ओ वा औ = यो वा यौ }

उ वा ऊ + { अ वा आ = व ० वा, इ ० ई = वि ० वी, ऋ ० ॠ = वृ ० वॄ, ए ० ऐ = वे ० वै, ओ ० औ = वो ० वौ }

ऋ वा ॠ + { अ वा आ = र वा रा, इ ० ई = रि ० री, उ ० ऊ = रु ० रू, ए ० ऐ = रे ० रै, ओ ० औ = रो ० रौ }

ऌ० + { अ ० आ = ल ० ला, इ ० ई = लि ० ली, उ ० ऊ = लु ० लू, ए ० ऐ = ले ० लै, ओ ० औ = लो ० लौ }

उदाहरण

प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर; सु + आगत = स्वागत

देवी + आश्रय = देव्याश्रय मनु + अन्तर = मन्वन्तर

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा ऌ + आकृति = लाकृति

ए, ऐ, ओ, औ, से परे कोई स्वर आवे तो उनके स्थान में क्रम से अय्, आय्, अव्, आव्, आदेश होते हैं, इन आदेशों का पहिला स्वर पीछे के व्यञ्जन के साथ मिलता है; जैसा

ए + अ, आ, इ० = अय, अया इ०॥ ओ + अ, आ, इ० = अव, अवा इ०॥

ऐ + अ, आ, इ० = आय, आया इ०॥ औ + अ, आ, इ० = आव, आवा इ०॥

उदाहरण

शे + अन = शयन, नै + अक = नायक

गो + उत्साह = गवुत्साह, पौ + अक = पावक

८ पाठ

व्यञ्जन सन्धि ॥

प्र० व्यञ्जनों की सन्धि के नियम और उदाहरण अलग २ कहिये ?

उ० सुनो ॥ १ ॥ प्रथम नियम (क्, च्, ट्, प्,) इनके परे कोई स्वर अथवा वर्ग का तीसरा वा चौथा वर्ण वा य्, र्, ल्, व्, ह् इनमें से कोई आवे तो क्रम से अपने २ वर्ग के तीसरे ग्, ज्, ड्, ब् वर्ण में बदल जाते हैं; जैसा वाक् + ईश = वागीश, दिक् + भाग = दिग्भाग, अप् + जा = अब्ज, षट् + रिपु = षड्रिपु, अच् + आदि = अजादि, अच् + वत् = अज्वत इ० ॥

॥ २ ॥ त्, द्, के आगे च्, छ्, आवे, तो त् और द् के स्थान में च् आदेश; ज्, झ्, होवे तो ज्; ट्, ठ्, आवे तो ट्; ड्, ढ्, हों तो ड् आदेश होते हैं; जैसा एतत् + चन्द्र मण्डल=एतच्चन्द्र मण्डल, महत्+ चक्र = महच्चक्र, महद् + छत्र = महच्छत्र, तत् + टीका = तट्टीका, उद् + डान = उड्डान, सत् + जन = सज्जन इ० ॥

॥ ३ ॥ न् के परे ज् वा झ् आवे तो ञ्; और ट् वा ठ् आवे तो ण् आदेश होतेहैं; जैसा महान् + जय = महाञ्जय, महान् + डमरु = महाण्डमरु इ० ॥

॥ ४ ॥ न् के पीछे च् वा ज् होवे तो न् को ञ् आदेश होता है; जैसा याच् + ना = याञ्चा, यज् + न = यज्ञ इ० ॥

॥ ५ ॥ त्, थ्, के पूर्व में ष होवे तो ट्, ठ् आदेश क्रम से होते हैं जैसा आकृष् + त = आकृष्ट, षष् + थ = षष्ठ इ० ॥

॥ ६ ॥ त्, द्, वा न्, के परे ल्, आवे तो उनके स्थान में ल आदेश होता है, और न के पूर्वाक्षरके सिर पर ऐसा ँ चन्द्र बिन्दु लिखते हैं; जैसा तत् + लीला = तल्लीला, महान् + लाभः = महाँल्लाभः इ० ॥

॥ ७ ॥ त्, द्, वा न्, इनके आगे श् होवे तो श् की जगह में छ् और त् वा द् के स्थान में च, और न् के स्थान में ञ् आदेश होतेहैं; जैसा सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र, तद् + शरीर = तच्छरीर, धावन् + शशः = धावञ्छशः इ० ॥

॥ ८ ॥ वर्गों के अन्त्य वर्ण को छोड़कर बाक़ीजो वर्णहैं, उनसे आगे ह्

आवे तो पूर्व वर्ण के वर्ग का चौथा वर्ण विकल्प से ह् कारके स्थान में होता है; जैसा ॥

वाक् + हरि ग घ = वाग्घरि अथवा वाग्हरि
अच + हल ज झ = अज्झल् वा अज्हल्
षट् + हृदय ड ढ = षड्ढृदय वा षड्हृदय
तत् + हवि द ध = तद्धवि वा तद्हवि
अप + हरण ब भ = अब्भरण वा अब्हरण

॥ ९ ॥ म् के परे अन्तस्थ वर्ण वा ऊष्म वर्ण आवे तो म् अनुस्वार में बदल जाता है; जैसा सम् + योग = संयोग इ० ॥

॥ १० ॥ म् के आगे स्पर्श वर्ण होवे तो म् विकल्प से अनुस्वार अथवा उत्तर व्यञ्जन के वर्ग के अनुनासिक वर्ण में बदल जाता है जैसा सम् + कल्प = संकल्प वा सङ्कल्प- मृत्यु म् + जय = मृत्युंजय वा मृत्युञ्जय इत्यादि ॥

॥ ११ ॥ अनुस्वार के आगे कवर्गादि वर्ण होवे तो उसी वर्ण के वर्ग का अन्त्य वर्ण विकल्प से आदेश होता है; जैसा सं + गत = सङ्गत, सं + ग्राम = संग्राम, सं + धि = सन्धि, सं + पात = सम्पात इ० ॥ कभी २ संगत, संग्राम, संधि, संपात ऐसा भी लिखते हैं ॥

॥ १२ ॥ त के आगे कोई स्वर अथवा ग घ्, द ध्, ब भ्, य र्, व ह्, इनमें से कोई आवे तो द में बदल जाता है; जैसा जगत् + आदि = जगदादि; भवत् + दर्शन = भवद्दर्शन, तत् + भय = तद्भय, महत् + भाग्य = महद्भाग्य, तत् + गत = तद्गत, इत्यादि ॥

॥ १३ ॥ वर्गोंके, प्रथम वर्णों के आगे न्, म् इनमें से कोई वर्ण होवे तो पूर्व वर्ण को अपने वर्ग का तीसरा या अन्त्य वर्ण आदेश विकल्प से होगा, **मय मात्र** परे होवे तो अन्त्य वर्ण नित्य होगा; जैसा वाक् + मन = वाङ्मन वा वाग्मन, षट् + मास = **षड्मास,** वा षण्मास तत् + नेत्र = तन्नेत्र वा तद्नेत्र, तत् + मय = तन्मय, तत् + मात्र = तन्मात्र इत्यादि ॥

॥ १४ ॥ छ से पूर्व स्वर होवे तो छ को पूर्व में च् आगम होता है; + जैसा आ + छादन = आच्छादन, आगम मित्रवत् अवयव रूपी होता है ॥

॥ १५ ॥ विसर्ग के आगे च, छ, ट, ठ, त, थ, आवें तो क्रमसे श् ष् स् आदेश विकल्प से होते हैं; जैसा नि: + शेष = निश्शेष, नि: + संशय = निस्संशय, नि: + चय = निश्चय, नि: + षंढ = निष्षंढ, क: + ट = कष्ट इत्यादि ॥ कभी २ नि:शेष, नि:संशय ऐसा लिखते हैं ॥

॥ १६ ॥ विसर्ग के पूर्व अ होवे, और वर्ग का तीसरा चौथा या पांचवां वर्ण वा य् र् ल् व् ह् इन में से कोई वर्ण उसके आगे आवे, तो अ सहित विसर्ग के स्थान में ओ आदेश होता है; जैसा मन: + भाव = मनोभाव; तेज: + मय = तेजो मय इ० ॥

॥ १७ ॥ अ और आ को छोड़ कर शेष स्वरोंमें से कोई स्वर विसर्ग के पीछे आवे और उसके परे कोई स्वर अथवा वर्ग का तीसरा चौथा वा पांचवां वर्ण और य र ल व ह इनमें से कोई वर्ण रहे, तो विसर्ग को र आदेश होता है; जैसा नि: + धन, = निर्धन, दु: + नीत = दुर्नीत इत्यादि ॥

दो र् एकत्र आवें तो पूर्व र का लोप होकर उसके पीछे का स्वर दीर्घ + होता है; जैसा, निर् + रस, = नीरस, निर् + रोगी = नीरोगी इत्यादि ॥

॥ १८ ॥ ऋ ॠ र् ष् इनसे आगे न होवे अथवा इन के बीच में स्वर कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार और य् व् ह् इनमें से कोई एक वा दो तीन वर्ण आवें तो भी न को ण आदेश होता है; जैसा विस्तीर् + न = विस्तीर्ण, विकीर् + न = विकीर्ण, भर् + अन = भरण, पोष् + अन = पोषण, अर्प + अन = अर्पण, इत्यादि इन शब्दों को भाषा में अपभ्रंश से, विस्तीर्न, विकीर्न, भरन, पोषन, अर्पन, ऐसा नकारोच्चारण से बोलते हैं ॥

+ मित्र के समान नजदीक रहता है ॥

+ ये शब्द हिन्दी में प्राय: ह्रस्व लिखे जाते हैं यथा निरस, निरोगी ॥

१ पाठ

शब्द विचार

शब्दों के प्रकार ॥

प्र० शब्द विचार किसे कहते हैं ?

उ० शब्दों की **जाति, साधन, व्युत्पत्ति** और दूसरे शब्दों के साथ उनका सम्बन्ध इनके विवेचन को शब्द विचार कहते हैं ॥

प्र० शब्द किसे कहते हैं ?

उ० मुख से निकला हुआ सार्थ ध्वनि अर्थात् जिसका अर्थ होवे, उसे शब्द कहते हैं; और वह लिखा हुआ भी शब्द कहाता है, सार्थक कहने से अनर्थक शब्द अर्थात् अर्थ रहित ध्वनि इस व्याकरण में बे काम है ॥

प्र० शब्द कितने प्रकार के हैं ?

उ० शब्द दो प्रकार के हैं **सिद्ध** और **साधित** ॥

प्र० सिद्ध शब्द किसे कहते हैं ?

उ० जो दूसरे शब्द से न बना हो वह **सिद्ध** शब्द जैसा घोड़ा, बैल, बाप; संस्कृत शब्द बहुत से अपभ्रंश होकर हिन्दी में आये हैं इसकारण से सिद्ध शब्द बहुत कम हैं ॥

प्र० साधित शब्द किसे कहते हैं ?

उ० जो दूसरे शब्द से बने हैं वे **साधित** शब्द हैं जैसा, शास्त्री, विद्यार्थी, शिक्षक इत्यादि ॥ सामासिक साधित शब्द का एक भेद है; वह दो वा अधिक शब्दों के योग से होता है; जैसा चक्रपाणि, पीताम्बर इत्यादि ॥

प्र० व्याकरण में साधन क्रिया से शब्दों के मुख्य भेद कितने हैं ?

उ० दो भेद हैं **सविभक्तिक** और **अविभक्तिक** ॥

प्र० सविभक्तिक किसको कहते हैं ?

उ० जिन शब्दों से विभक्त्यादि कार्य होते हैं वे **सविभक्तिक** कहलाते हैं; जैसा घोड़ा, अच्छा, मैं, करता है इत्यादि ॥

प्र० अविभक्तिक किसको कहते हैं ?

३ पाठ

लिङ्ग विचार ॥

प्र० लिङ्ग किसे कहते हैं ?

उ० लिङ्ग चिन्ह को कहते हैं अर्थात् सजीव, वा निर्जीव, पदार्थ पुरुष वाचक वा स्त्री वाचक है यह पहचानने का चिन्ह ॥

प्र० लिङ्ग कितने हैं ॥

उ० पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग ये दो लिङ्ग हैं, नपुन्सक लिङ्ग तीसरा अन्य भाषा में आता है, हिन्दी भाषा में नहीं आता ॥

प्र० पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग किसे कहते हैं ?

उ० जिस नामसे पुरुषत्व का बोध होय उसे पुंल्लिङ्ग कहते हैं, जैसा घोड़ा, गधा, गाड़ा, सोंटा इत्यादि ॥

॥ जिस नाम से स्त्रीत्वका बोध होय वह, स्त्रीलिङ्ग; जैसा घोड़ी, भैंस, खाट, कृपा, गाड़ी, घड़ी इत्यादि ॥

प्र० प्राणि वाचक पदार्थों का लिङ्ग भेद शीघ्र समझ में आताहै, पर अप्राणि वाचक पदार्थों का लिङ्ग किस रीति से समझना चाहिये ?

उ० लिङ्ग का निर्णय तो वहुत कठिन है, परंतु इस विषय में कुछ नियम लिखता हूं ॥

॥ १ ॥ संस्कृत में जो शब्द पुंल्लिङ्ग और नपुन्सक लिङ्ग हैं वे हिन्दी में बहुधा पुंल्लिङ्ग होतेहैं जैसा सागर, रत्न, जल, मुख; रत्न और जल और मुख संस्कृत में नपुन्सक लिङ्गी हैं ॥ जो शब्द संस्कृत में स्त्री लिङ्ग हैं वे हिन्दी में भी प्राय: स्त्रीलिङ्ग होते हैं जैसा कृपा; माया, गति, बुद्धि इत्यादि ॥

॥ २ ॥ आकारान्त नाम जिसका उपान्त्य वर्ण त् न होय और आकारान्त हिन्दी नाम प्राय: पुंल्लिङ्ग हैं; जैसा विघ्न, पत्थर, बैल, घोड़ा, लड़का, कपड़ा इ० ॥

॥ ३ ॥ जिन शब्दों के अन्त में ई वा त होवे वे प्राय: स्त्रीलिङ्ग हैं

परंतु घी, पानी, जी, दही इत्यादि शब्द छोड़ कर; जैसा घोड़ा, टोपी, कुरसी, हवेली, रात, बात इत्यादि ॥

॥ ४ ॥ जिस नाम के अन्त में **आवट** वा **आहट** प्रत्यय हो वह सदा स्त्री लिङ्ग जानो; जैसा सजावट, बनावट, घबराहट इत्यादि ॥

॥ ५ ॥ सामासिक शब्दों का लिङ्ग निर्णय बहुधा अंत्य शब्द के लिङ्गानुसार होताहै, और बहुव्रीहि समास में अन्य पदार्थवत् लिङ्ग होगा ॥ जैसा दयानिधि यह पुंल्लिङ्ग है क्योंकि निधि शब्द पुंल्लिङ्ग है ॥ इसी तरह से भूत दया उपकार बुद्धि ये स्त्रीलिङ्ग हैं कुमति पुरुष अर्थात् जिस की मति खराब है ऐसा पुरुष यहां कुमति यह विशेषण पुंल्लिङ्ग है कुमति स्त्री यहां कुमति यह विशेषण स्त्री लिङ्ग है ॥

---

४ पाठ

पुंल्लिङ्ग नाम से स्त्रीलिङ्ग नाम बनाने की रीति ॥

प्र० पुंल्लिङ्ग शब्द से स्त्रीलिङ्ग किस प्रकार से बनताहै ?

उ० ॥ १ ॥ प्राणि वाचक अकारान्त और आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द के अंत्याक्षर के स्थान में **ई** आदेश होने से स्त्रीलिङ्ग होताहै; जैसा देव, देवी; दास, दासी; लड़का, लड़की; घोड़ा, घोड़ी इत्यादि ॥

॥ २ ॥ कहीं २ **इया** आदेश होताहै वहां अंत्याक्षर द्वित्व होवे तो एक व्यञ्जन का लोप होजाताहै जैसा बुड्ढा, बुढ़िया; लट्ठ, लठिया; कुत्ता, कुतिया इत्यादि ॥

॥ ३ ॥ व्यापार करने वाले पुरुष वाची अकारान्त वा आकारान्त वा ईकारान्त शब्द अंत्याक्षर को **अन** वा **इन** आदेश करने से स्त्रीलिङ्गहोतेहैं ॥

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग		पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	
सोनार	सोनारिन,	सोनारन	कसेरा	कसेरिन,	कसेरन
लोहार	लोहारिन,	लोहारन	ठठेरा	ठठेरिन,	ठठेरन
कलवार	कलवारिन,	कलवारन	तेली	तेलिन,	तेलन
माली	मालिन,	मालन	धोबी	धोबिन,	धोबन

॥ ४ ॥ ब्राह्मणों के उपनाम वाची शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिये अंत्यस्वर को **आइन** आदेश विकल्प से करके आदि अक्षर केस्वर को ह्रस्व कर देते हैं पर ए ओ को ह्रस्व नहीं होता, एक पक्ष में **अन** आदेश होता है ॥

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
मिसर	मिसराइन, मिसरन	तिवारी	तिवारन, तिवारिन
दुबे	दुबाइन, दुबन	ओझा	ओझन
पांड़े	पंड़ाइन, पांडन	चौबे	चौबन

॥ ५ ॥ पुंल्लिङ्ग शब्द के अंत्य वर्ण को **अन आयन तायन नी आनी** ये आदेश होने से कभी २ स्त्रीलिङ्ग होते हैं; जैसा

पुंल्लिङ्ग	आदेश	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	आदेश	स्त्रीलिङ्ग
कूंजड़ा	अन	कूंजड़न	नायक	अन	नायकन
कवी	तायन	कवितायन	खतरी	आयन	खतरायन
				आनी	खतरानी
पण्डित	आनी	पण्डितानी	मेहतर	आनी	मेहतरानी
	आयन	पण्डितायन			

॥ ६ ॥ कई पुंल्लिङ्ग शब्दों का स्त्रीलिङ्ग भिन्न शब्दों से होताहै जैसा

पुं०	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०	स्त्री०
भाई	बहिन	पुरुष	स्त्री	पिता	माता
बाप	मा	राजा	रानी	मर्द	औरत
		बैल	गाय	नर	मादी

भाषा में हर एक नाम का लिङ्ग जानना बहुत कठिन है, इसलिये यह ध्यान में रखना चाहिये कि जिस नाम का लिङ्ग ज्ञात न होय उसका प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में करने से पुंल्लिङ्ग में करना उचित है ॥

---

५ पाठ

वचन का वर्णन ॥

प्र० वचन किसे कहते हैं और वे कितने हैं ?

उ० वचन संख्या को कहते हैं; वे दो हैं **एकवचन और बहुवचन** नामके जिस रूप से एक का बोध हो उसे एक वचन और जिस से एकसे अधिक का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं; जैसा लड़का, घोड़ा एक वचन, लड़के, घोड़े बहुवचन ॥

प्र० नाम का बहुवचन किसरीति से बनता है ?

उ० आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द के अंत्य **आ** के स्थान में **ए** आदेश करने से बहुवचन होताहै; जैसा एकवचन बहुवचन, ए-व ब-व ए-व ब-व-

घोड़ा	घोड़े	मोटा मोटे	दण्डा दण्डे
गधा	गधे	कोठा कोठे	लड़का लड़केइ०॥

शेष पुंल्लिङ्ग शब्दोंके एक वचन और बहुवचन के रूप एक से होते हैं; जैसा मर्द, पर्वत, माल, साधु इत्यादि ॥

सम्बन्धवाचक आकारान्त और इतर कई एक आकारान्त शब्द एक वचन और बहुवचन में समान रूप होते हैं जैसा बाबा, पिता, माता, सौदा, दर्या, दाना, दाता इत्यादि ॥

स्त्रीलिङ्ग इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त और ऊकारान्त शब्दों को छोड़ कर बाक़ी शब्दों के अंत्यस्वर के स्थान में सानुनासिक **एं** आदेश करने से बहुवचन होता है; जैसा

एकवचन, बहुवचन— ए—व— ब—व— ए—व— ब—व

औरत औरतें किताब किताबें तलवार तलवारें इत्यादि ॥

इकारान्त और ईकारान्त शब्दों के आगे **यां** प्रत्यय करके ईकारको ह्रस्व करने से बहुवचन होता है; जैसा ॥

घोड़ी, घोड़ियां; बकरी बकरियां, बुद्धि बुद्धियां इत्यादि ॥

आकारान्त स्त्रीलिङ्गी शब्दों के अंत्य **आ** पर प्रायः अनुस्वार देनेसे बहु-

वचन होता है; जैसा एकवचन बहुवचन ए-व- ब-व-
गैय्या गैय्यां, भैंसिया, भैंसियां इत्यादि ॥

बहुत से नामों के एक वचन और बहुवचन के रूप समान होते हैं इसलिये अनेकत्व का बोध करने के वास्ते लोग, गण, जाति इत्यादि बहुत्व वाचक शब्द नाम के साथ आते हैं; जैसा चाकर लोग, देवगण, पशु जाति इ० ॥

---

६ पाठ

विभक्ति और कारक विचार ॥

प्र० कारक और विभक्ति किनको कहते हैं ?

उ० क्रिया का सम्बन्ध जिस नाम वाचक शब्द में हो उसे कारक कहते हैं; और **क्रिया** और **कारक** का सम्बन्ध जिस रूपसे ज्ञात होवे उसको विभक्ति कहते हैं; और सम्बन्ध बोधक अक्षरों को विभक्ति प्रत्यय कहतेहैं ॥

प्र० कारक कौन २ हैं ?

उ० कारक छः हैं, कर्त्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण, इनका वर्णन आगे किया है ॥

प्र० विभक्तियां कितनी हैं ?

उ० ये विभक्तियां सात हैं, प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, और सप्तमी, ॥

प्र० विभक्ति प्रत्यय कौन २ हैं और उनकी योजना कैसी होती है ?

उ०

विभक्ति का नाम	प्रत्यय	विभक्ति का नाम	प्रत्यय
१ प्रथमा	०	५ पञ्चमी	से
२ द्वितीया	को	६ षष्ठी	का, की, के
३ तृतीया	ने, से	७ सप्तमी	में, पै, पर
४ चतुर्थी	को	८ सम्बोधन	०

प्रथमा विभक्ति में नाम से कुछ प्रत्यय नहीं होता जो मूल रूप है वही रहता है; प्रथमा के एक वचन का रूप और कभी २ बहुवचन का रूप-दोनों तुल्य होते हैं ॥

इतर विभक्तियों में प्रत्यय होते हैं, वे नाम वाचक के मूल रूप से या उस रूप में कुछ विकार होकर आगे जोड़े जाते हैं, जिस रूप से प्रत्यय जोड़े जाते हैं उसको **सामान्य** रूप कहते हैं, जैसा लड़का, लड़के को, लड़कों को, यहां लड़के और लड़कों ये लड़का शब्द के क्रम से एक वचन और बहुवचन सामान्य रूप हैं; द्वितीया आदि विभक्तियों में और सम्बोधन में इतना भेद है कि सम्बोधन में प्रत्यय नहीं है और अय, अरे, हे इत्यादि शब्द नाम के पूर्व लगाते हैं ॥ विभक्ति प्रत्ययों का योग करना विभक्ति कार्य कहलाता है ॥

प्र० प्रथमादि छः कारक और सम्बन्ध बोधक षष्ठी इनका पृथक् २ लक्षण कहिये ?

उ० क्रिया को जो करे उसे **कर्त्ता** कहते हैं; जैसा **देवदत्त** जाता है॥

क्रिया का फल जिस पर रहे उसे **कर्म** जानो; जैसे **देवदत्त** किताब को पढ़ता है ॥

क्रिया का साधन अर्थात् जिसके द्वारा क्रिया की जावे उसे **करण** समझो; जैसा **राम** ने रावण को **बाण** से मारा, यहां बाण करण है ॥

जिसको कुछ दिया जावे वा जिसके निमित्त कुछ दिया जावे उसे **संप्रदान** कहते हैं; जैसा मोहनलाल **ग़रीबों** को खाने को देता है ॥

जिससे वियोग क्रिया जावे उसे अपादान कहते हैं; जैसा बाजार से लाया है ॥

षष्ठी का अर्थ सम्बन्धहै, वह दो पदार्थों पर रहता है, एक कृत सम्बन्धी दूसरा सम्बन्धी॥ कृतसम्बन्धी से षष्ठीके प्रत्यय **का की के** होते हैं; सम्बन्धी पुंल्लिङ्ग एकवचन होतो कृत सम्बन्धीके आगे का; स्त्रीलिङ्ग हो तो की, पुंल्लिङ्ग बहुवचन हो तो **के** लगाते हैं, कृत सम्बन्धी सम्बन्धी का विशेषण होता है, उसका क्रिया में अन्वय नहीं होता, इसलिये षष्ठी कारक में नहीं ली; जैसा **राजा का घोड़ा, राजा की घोड़ी, राजा के घोड़े** इत्यादि ॥

सप्तमी का अर्थ **अधिकरण** अर्थात् आधार होता है; जैसा श्रीकृष्ण घरमें हैं, गोपाल **घोड़े** पै बैठकर गया है इत्यादि ॥

सम्बोधन=सम्मुखी करण अर्थात् किसी को चिता कर अपने सम्मुख करना, सम्बोधन के बोधक **हे, अरे, अय,** इत्यादि अव्यय नाम के पूर्व लगाते हैं, जैसा हेराम मेरा दुःख दूरकर, अरे मोहन, अब कृपाकर, इनका वर्णन कारक विचार में अच्छी तरह से किया जायगा ॥

प्र० नाम से विभक्ति कार्य कैसा होता है यह मेरे ध्यान में अच्छी तरह से नहीं आया इसलिये उदाहरण देकर मुझे समझाइये ?

उ० विभक्तिकार्य अच्छी तरह से समझ में आवे इसलिये पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग नामों के विभक्ति कार्यके विषय में पृथक् २ नियम लिखता हूं ॥

---

१ पाठ

पुंल्लिङ्ग नाम ॥

इननामों के दो गण किये हैं १ एक अकारान्त पुंल्लिङ्ग नाम; २ दूसरा आकारान्त पुंल्लिङ्ग नामों को छोड़ शेष पुंल्लिङ्ग नाम ॥

नियम ॥

१ आकारान्त पुंल्लिङ्ग नाम के अन्त्य **आ** को **ए** आदेश करने से प्रथमा का बहुवचन और एक वचन सामान्य रूप और सम्बोधन के एक वचन का रूप बनता है; अंत्य **आ** को **ओं** आदेश करने से बहुवचन सामान्य रूप, होता है, और सम्बोधन के बहुवचन में ओ आदेश होता है; सामान्य रूप के आगे प्रत्यय जोड़े जाते हैं ॥

२ अब शिष्ट पुंल्लिङ्ग नामों की प्रथमा के बहु वचन का रूप और एक वचन सामान्य रूप प्रथमा के एक वचन के रूपवत् होते हैं, द्वितीयादि विभक्तियों के बहुवचन में अंत्यवर्ण के आगे **ओं** आगम करके बहुवचन सामान्य रूप बनता है, सम्बोधन में केवल **ओ** आगम किया जाता है ॥ सामान्य रूप के आगे प्रत्यय जोड़ते हैं ॥

प्रथम नियम का उदाहरण ॥

आकारान्त पुंल्लिङ्ग लड़का शब्द ॥

विभक्ति	एक वचन	बहुवचन
प्रथमा	१ लड़का	लड़के
द्वितीया	२ लड़के को	लड़कों को
तृतीया	३ लड़के ने - से	लड़कों ने - से
चतुर्थी	४ लड़के को	लड़कों को
पञ्चमी	५ लड़के से	लड़कों से
षष्ठी	६ लड़के का - की - के	लड़कों का - की - के
सप्तमी	७ लड़के में - पै - पर	लड़कों में - पै - पर
सम्बोधन	८ अय लड़के	अय लड़कों

इसी रीति से आगे लिखे हुये नामों को छोड़ शेष सब आकारान्त पुंल्लिङ्ग नामों का विभक्ति कार्य जानो ॥

अपवाद—आकारान्त पुंल्लिङ्ग विशेषनाम, सम्बन्ध वाचक नाम, और संस्कृत शब्द ये पूर्वोक्त नियम के अपवाद हैं; इनका विभक्ति कार्य दूसरे नियम से होता है; जैसा, मोहना, रामा, भैय्या, काका, मामा, दाता, कर्त्ता इत्यादि ॥

	एक वचन	बहुवचन
प्रथमा	१ भैय्या	भैय्या
द्वितीया	२ भैय्या को	भैय्याओं को
तृतीया	३ भैय्या ने - से	भैय्याओं ने - से
चतुर्थी	४ भैय्या को	भैय्याओं को
पञ्चमी	५ भैय्या से	भैय्याओं से
षष्ठी	६ भैय्या का - की - के	भैय्याओं का - की - के
सप्तमी	७ भैय्या में-पै-पर	भैय्याओं में-पै-पर
सम्बोधन	अय भैय्या	अय भैय्याओ

द्वितीय नियम के उदाहरण ॥

अकारान्त पुंल्लिङ्ग—नाम +

द्वितीयादि विभक्तियोंके बहुवचन में अंत्य **अ** को **ओं** आदेश करके प्रत्यय जोड़ते हैं, सम्बोधन के बहुवचन में अंत्य **अ** को **ओ** आदेश किया जाता है ॥

अकारान्त पुंल्लिङ्ग बालक शब्द ॥

	एक वचन	बहुवचन
प्र०	१ बालक	बालक
द्वि०	२ बालक को	बालकों को
तृ०	३ बालक ने - से	बालकों ने - से
च०	४ बालक को	बालकों को
पं०	५ बालक से	बालकों से
ष०	६ बालक का-की-के	बालकों का-की-के
स०	७ बालक में-पै-पर	बालकों में-पै-पर
सं०	८ हे बालक	हे बालको

इसी प्रकार तालाब, मालिक, पालक, वृक्ष, पर्वत इत्यादि जानो ॥

इकारान्त औ ईकारान्त पुंल्लिङ्ग नाम ॥

इकारान्त पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्द शुद्ध हिन्दी नहीं हैं, पर जो हिन्दी में हैं वे संस्कृत से आये हैं; द्वितीयादि विभक्तियों के बहुवचन में अंत्य वर्णसे आगे **यों** आगम करते हैं सम्बोधन के बहुवचन में **यो** होता है, और अंत्यवर्ण दीर्घ **ई** होवे तो उसे ह्रस्व करते हैं ॥

इकारान्त पुंल्लिङ्ग कवि शब्द ॥

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	१ कवि	कवि
द्वि०	२ कवि को	कवियों को

+ धन, वन, बालक आदि शब्दों का उच्चारण कुछ हलन्त सा किया करते हैं पर इनके अंत्य अक्षर के नीचे व्यंजन का चिन्ह नहीं लगाते हैं और ये शब्द संस्कृत में बराबर अकारान्त हैं इसलिये उन्हें यहां भी अकारान्त माना है ॥

तृ०	३ कवि ने, से	कवियों ने, से
च०	४ कवि को	कवियों को
पं०	५ कवि से	कवियों से
ष०	६ कवि का—की—के	कवियों का—की—के
स०	७ कवि में — पै— पर	कवियों में — पै—पर
सं०	८ हे कवि	हे कवियो

इसी तरह से हरि, रवि, पति इत्यादि जानो ॥

+

ईकारान्त पुंल्लिङ्ग माली शब्द ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन	विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	माली	माली	५	माली से	मालियों से
२	मालीको	मालियों को	६	मालीका-की-के	मालियों का-की-के
३	मालीने-से	मालियोंने-से	७	मालीमें-पै-पर	मालियों में-पै-पर
४	मालीको	मालियों को	८	हे माली	हे मालियो

इसी तरह से धोबी, तेली, धनी इत्यादि जानो ॥

उकारान्त पुंल्लिङ्ग साधु शब्द ॥

१	साधु	साधु	५	साधु से	साधुओं से
२	साधु को	साधुओं को	६	साधु का-की-के	साधुओं का-की-के
३	साधुने-से	साधुओंने-से	७	साधुमें-पै-पर	साधुओंमें-पै-पर
४	साधु को	साधुओंको	८	अयसाधु	अयसाधुओ

इसी तरह से भानु, प्रभु आदि जानो ॥

ऊकारान्त पुंल्लिङ्ग भालू शब्द ॥

ऊकारान्त, के बहुवचन सामान्य रूप में अंत्य ऊ को ह्रस्व होजाता है ॥

१	भालू	भालू	३	भालूने-से	भालुओंने-से
२	भालू को	भालुओंको	४	भालूको	भालुओंको

+ कोई २ लोग द्वितीया आदि विभक्तियों के बहुवचन में ईकारान्त पुंल्लिङ्ग के रूप यों के बदले वों आगम करके बनाते हैं जैसा मालियों को मालिवों ने-से इ० ॥

५ भालू से	भालुओं से	७	भालूमें-पै-पर	भालुओंमें-पै-पर
६ भालूका-की-के	भालुओं का-की-के	८	अयभालू	अयभालुओ

एकारान्त पुंल्लिङ्ग नाम ॥

१	चौबे	चौबे	६	चौबेका-की-के	चौबेओं का-की-के
२।४	चौबे को	चौबेओंको	७	चौबेमें-पै-पर	चौबेओंमें-पै-पर
३।५	चौबेने, से	चौबेओंने, से	८	अयचौबे	अयचौबेओ

इसी प्रकार पांडे आदि शब्द जानो, और ऐ, ओ, औ, ये जिनके अन्त में हैं ऐसे शब्द हिन्दी भाषा में नहीं हैं ॥

---

८ पाठ

स्त्रीलिङ्ग नाम ॥

प्रथमा के बहुवचन को छोड़कर शेष विभक्तियों में स्त्रीलिङ्ग नामों का विभक्ति कार्य जो पुंल्लिङ्ग नाम आकारान्त नहीं हैं उनके समान होता है, स्त्रीलिङ्ग नामों के भी दो गण मान लिये हैं ॥

१ इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम ॥

२ शेष स्त्रीलिङ्ग नाम ॥

१ नियम ॥

इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नामों के अंत्य **इ** और **ई** को **इयां** आदेश करने से प्रथमा के बहुवचन का रूप बनता है, शेष रूप पुंल्लिङ्ग इकारान्त और ईकारान्त नामों के सदृश होते हैं ॥

२ नियम ॥

इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नामों को छोड़के शेष, स्त्रीलिङ्ग नामों में से कई नामों के अंत्य अत्तर को **ए** आदेश करने से प्रथमा के बहुवचन का रूप सिद्ध होता है, और कई नामों के प्रथमा के एकवचन और बहुवचन समान होते हैं ॥

उदाहरण १

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग बुद्धि शब्द ॥

विभक्ति	एक वचन	बहु वचन	विभक्ति	एक वचन	बहु वचन
प्र०१	बुद्धि	बुद्धियां	पं०५	बुद्धि से	बुद्धियों से
द्वि०२	बुद्धि को	बुद्धियों को	ष०६	बुद्धिका-की-के	बुद्धियोंका-की-के
तृ०३	बुद्धिने-से	बुद्धियोंने-से	स०७	बुद्धि में-पै-पर	बुद्धियोंमें-पै-पर
च०४	बुद्धि को	बुद्धियों को	सं०८	हे बुद्धि	हे बुद्धियो

इसी तरह मति आदि शब्द जानो ॥

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग घोड़ी शब्द ॥

१	घोड़ी	घोड़ियां	६	घोड़ीका-की-के	घोड़ियों का-की-के
२ । ४	घोड़ी को	घोड़ियों को	७	घोड़ीमें-पै-पर	घोड़ियों में -पै-पर
३ । ५	घोड़ीने-से	घोड़ियोंने-से	८	अय घोड़ी	अय घोड़ियो

२ गणनियम और उदाहरण ॥

अकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के अंत्य अक्षर को एं आदेश करने से प्रथमा के बहुवचन का रूप सिद्ध होता है, और शेष रूप अकारान्त पुंल्लिङ्गवत् ॥

अकारान्त स्त्रीलिङ्ग बात शब्द ॥

विभ-	एक वचन	बहु वचन	वि-	एक वचन	बहु वचन
१	बात	बातें	५	बात से	बातों से
२	बात को	बातों को	६	बात का-की-के	बातों का-की-के
३	बातने-से	बातोंने-से	७	बातमें-पै-पर	बातोंमें-पै-पर
४	बात को	बातों को	८	हे बात	हे बातो

इसी तरह किताब, चील, रात आदि जानो ॥

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के अंत्य आ के शिर पर अनुस्वार देने से प्रथमा के बहुवचन का रूप होता है, शेष रूप मुख्य नियम से बनतेहैं ॥

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के रूप ॥

विभ-	एक वचन	बहु वचन	वि-	एक वचन	बहु वचन
१	गैय्या	गैय्यां	२।४	गैय्या को	गैय्याओं को

३।५	गैय्याने-से	गैय्याओंने-से	७	गैय्यामें-पै-पर	गैय्याओंमें-पै-पर
६	गैय्याका-की-के	गैय्याओंका-की-के	८	हे गैय्या	हे गैय्याओ

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के रूप			ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के रूप		
१	धेनु	धेनु	१	झाड़ू	झाड़ू
२।४	धेनुको	धेनुओंको	२।४	झाड़ूको	झाड़ुओंको
३।५	धेनुने-से	धेनुओंने-से	३।५	झाड़ूने-से	झाड़ुओंने-से
६	धेनुका-की-के	धेनुओंका-की-के	६	झाड़ूका-की-के	झाड़ुओंका-की-के
७	धेनुमें-पै पर	धेनुओंमें-पै-पर	७	झाड़ूमें-पै-पर	झाड़ुओं में-पै-पर
८	हे धेनु	हे धेनुओ	८	हे झाड़ू	हे झाड़ुओ

जोरू शब्द की प्रथमा का बहुवचन **जोरुआं** होता है; एकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग में नहीं आता ॥

॥ ९ पाठ ॥

सर्वनाम विचार ॥

॥ पुरुष वाचक सर्व नाम ॥

प्र० सर्व नाम किसे कहते हैं ?

उ० नाम को एक वार कहकर फिर उसके कहने का प्रयोजन पड़े तो उसकी जगह जो शब्द आते हैं, उन्हें **सर्वनाम** कहते हैं; इससे बारम्बार नाम को कहने का काम नहीं पड़ता, और सर्व नामों की जगह आता है, इसलिये सर्व नाम यह सार्थक संज्ञा रक्खी गई है ॥ सर्वनामों को नामवत् लिङ्ग वचन और विभक्ति कार्य्य होता है ॥ पर लिङ्गभेद से उनके रूपों में कुछ भेद नहीं होता नाम के अनुरोध से सर्व नाम का लिङ्ग बूझा जाता है ॥

प्र० सर्वनाम कितने प्रकार के हैं ?

उ० सर्व नाम पांच प्रकार के हैं; **पुरुषवाचक, दर्शक, सम्बन्धी, प्रश्नार्थक, सामान्य** ॥

पुरुष वाचक सर्व नाम ॥

प्र० पुरुष वाचक सर्व नाम किसे कहते हैं ?

उ० **मैं तू वह** ये पुरुष वाचक सर्वनाम हैं, **मैं** यह अपने को वाचक बोलने वाले को बताता है, इसलिये उसे प्रथम पुरुष कहते हैं; **तू** यह जिसको बोलता है उसे बतलाता है, इस कारण से उसे द्वितीय पुरुष कहते हैं; और **वह** उक्त दोनों को छोड़ तीसरे का बोधकरता है; इस से उसे तृतीय पुरुष कहते हैं ॥

प्र० पुरुष वाचक सर्वनामों के रूप वचन भेद से कैसे होते हैं ?

उ० इनके रूप पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में एक से होते हैं पर वचनों में बदलते हैं ॥

पुंल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग		पुंल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग		पुंल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग	
एक वचन	बहुवचन	एक वचन	व-व-	ए-व-	व-व-
मैं	हम	तू	तुम	वह	वे

प्र० प्रथम पुरुष सर्वनाम की कारक रचनामें रूपकिसप्रकारसे होतेहैं ?

उ० प्रथमा के एक वचन में **मैं** और बहुवचन में **हम** होता है, और षष्ठी को छोड़ द्वितीयादि विभक्तियों के एक वचन में **मुझ** और बहु वचन में **हम** आदेश होकर आगे प्रत्यय जोड़ते हैं, द्वितीया और चतुर्थी के एक वचन में **ए** बहुवचन में **एं** प्रत्यय विकल्प से करके **मुझ** और **हम** सामान्य रूपों के अंत्य अकार का लोप होता है, तृतीया का **ने** प्रत्यय लगे तो मुझ आदेश न होगा मूल रूपों से जोड़ा जाता है, षष्ठी के एकवचन में प्रकृति को **मे** आदेश और **का की के** प्रत्ययों को + **रा री रे** आदेश क्रम से करते हैं बहुवचन में **हम** के अंत्य अ को दीर्घ करते हैं, सर्व नामों का सम्बोधन नहीं होता ॥

\+ षष्ठी के प्रत्यय रा री रे केवल प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्व नामों से होते हैं ॥ और ना नी ने निज का वाचक आप शब्द से होते हैं ॥ इन रूपों की योजना का की के प्रत्ययान्त रूपों के समान होती है ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	मैं	हम
२	मुझको, मुझे	हमको, हमें
३	मैंने, मुझ से	हमने, हमसे, हमोंसे
४	मुझको, मुझे	हमको, हमें
५	मुझे	हमसे
६	मेरा, मेरी, मेरे	हमारा, हमारी, हमारे
७	मुझमें, पै, पर	हममें, पै, पर

प्र० द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम के रूप कैसे बनते हैं ?

उ० प्रथमा के एक वचन में **तू** बहुवचन में **तुम** होते हैं, द्वितीयादि विभक्तियों के एक वचन में **तुझ** और बहुवचन में **तुम** आदेश होतेहैं, पर षष्ठी के एक वचन में **ते** और बहुवचन में **तुम्ह** आदेशहोते हैं, आदेशों के आगे प्रत्ययों का योग किया जाता है शेष कार्य पूर्ववत् ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	तू	तुम
२ । ४	तुझको, तुझे	तुमको, तुम्हें
३	तूने, तुझसे	तुमने, तुमसे
५	तुझ से	तुम से
६	तेरा, तेरी, तेरे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे
७	तुझ में	तुम में

प्र० तृतीय पुरुष के रूप किस प्रकार से होते हैं ॥

उ० प्रथमा के एक वचन में **वह** बहु वचन में **वे** होते हैं, शेष विभक्तियों के एकवचन में **उस** बहुवचन में **उन** वा **उन्हों** आदेश करके प्रत्यय जोड़ते हैं द्वितीया और चतुर्थी में कभी २ प्रत्ययों को **ए** वा **एं** आदेश पूर्ववत् करते हैं और बहुवचन में प्रकृति को **उन** आदेश करते हैं ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	वह	वे
२।४	उसको, उसे	उनको, उन्होंको, उन्हें
३	उसने, उस से	उनसे, उन्होंसे, उनने, उन्होंने
५	उससे	उनसे, उन्होंसे
६	उसका, उसकी, उसके	उनका, उन्होंका, की-के
७	उनमें, पै- पर	उनमें, उन्होमें, पै- पर

द्वितीय पुरुष और तृतीय पुरुष वाचक सर्व नामोंको आदरार्थ में आप आदेश करके विभक्तियां लगाते हैं और इस के रूप बहुवचन में होते हैं; जैसा १ आप २।४ आपको ३।५ आपने, से ६ आपका-की-के ७ आपमें-पै-पर ॥

आदरार्थक आप शब्द के साथ **लोग** शब्द का प्रयोग यथार्थ बहुत्व बताने के लिये करते हैं; जैसा आप लोगों को यह बात उचित है, आप लोगों में इत्यादि ॥

कभी २ आप इस सर्व नाम का प्रयोग तीनों पुरुषों में किया जाता है; तब वह शब्द निज का वाचक होता है इसलिये उसे सामान्य सर्व नाम कहना उचित है, उसके रूप ऐसे होते हैं कि एक वचन और बहु वचन में १ आप २।४ आपको आपने-को ३।५ अपने से, आपसे ६ अपना-नी-ने ७ आप में, अपने में, वह अपने घर को चला; मैं अपने बाप से कहता था, तुम अपने भाई से कहना ॥ **आपस** यह परस्पर बोधक है इससे प्रायः षष्ठी और सप्तमी विभक्तियों के प्रत्यय होते हैं जैसा आपस का-की-के आपस में, जैसा तुम लोग आपस में क्यों झगड़ा करते हो ॥

---

१० पाठ

दर्शक सर्व नाम ॥

प्र० दर्शक सर्वनाम किसे कहते हैं और उनसे विभक्ति कार्य कैसा होता है ?

उ० **वह** और **यह** दर्शक सर्व नाम कहलाते हैं, **वह** दूरकी बस्तु को बतलाता है और **यह** समीप की बस्तु को; **वह** के रूप तो लिख आये हैं, **यह** के रूप प्रथमा के एक वचन में **यह** बहु वचन में **ये** होता है, शेष विभक्तियों के एक वचन में **इस** बहुवचन में **इन इन्हों इन्ह** आदेश विकल्प से कर के प्रत्यय जोड़ते हैं ॥

विभक्ति	एक वचन	बहु वचन
१	यह	ये
२।४	इसको, इसे	इनको, इन्होंको, इन्हें
३।५	इसने, इससे	इनने, इन्होंसे, इनसे
६	इसका-की-के	इनका, इन्हों का-की-के
७	इसमें-पे-पर	इनमें, इन्होंमें-पे-पर

---

११ पाठ

सम्बन्धी सर्व नाम ॥

प्र० सम्बन्धी सर्व नाम किसे कहते हैं ?

उ० **जो** या **जौन** इसे सम्बन्धी सर्व नाम कहते हैं, क्योंकि जहां इसका प्रयोग होवे वहां **सो** वा **तौन** इस दर्शक सर्व नाम का प्रयोग करना अवश्य पड़ता है, वैय्याकरण लोग **जो सो** और **वह** इनको वा इनसे बने हुए शब्दों को परस्पर नित्य सम्बन्धी कहते हैं; जैसा जो कल आयाथा सो अच्छा था, जिसने यह काम किया है उसे इनाम दो, जैसा करोगे वैसा फल पाओगे ॥

प्र० सम्बन्धी सर्व नाम के रूप कैसे होते हैं ?

उ० प्रथमा के एक वचन में और बहु वचन में **जो** ऐसाही रहताहै शेष विभक्तियों के एक वचन में **जिस** बहुवचन में **जिन** वा **जिन्ह** वा **जिन्हों** आदेश पूर्ववत् होते हैं, और **सो** के रूप द्वितीयादि विभक्तियों के एक वचन में **तिस** बहु वचन में **तिन** वा **तिन्ह** वा **तिन्हों** आदेश होते हैं; आदेशों के आगे प्रत्यय जोड़े जाते हैं; शेष पूर्ववत् ॥

विभक्ति	एक वचन	बहु वचन
१	जो, जौन	जो, जौन
२।४	जिसको, जिसे	जिनको, जिन्होंको, जिन्हें
३	जिसने, से	जिनने, जिन्होंने, से
५	जिससे	जिनसे, जिन्हों से
६	जिसका-की-के	जिनका, जिन्होंका-की-के
७	जिसमें, पै-पर	जिन में, जिन्हों में-पै-पर

१	सो तौन	सो तौन
२।४	तिसको, तिसे	तिनको, तिन्होंको, तिन्हें
३।५	तिसने-से	तिनने-तिन्होंने-से
६	तिसका-की-के	तिनका- तिन्होंका-की-के
७	तिसमें-पै-पर	तिनमें-तिन्होंमें-पै-पर

१२ पाठ

प्रश्नार्थक सर्व नाम

प्र० प्रश्न र्थक सर्वनाम किसे कहते हैं और उन के रूप कैसे होतेहैं ?

उ० **कौन** और **क्या** ये प्रश्न के लिये आते हैं इस वास्ते प्रश्नार्थक सर्व नाम कहाते हैं ॥ केवल **कौन** शब्द सामान्यत: मनुष्य को और **क्या** अप्राणि वाचक को लगात्ते हैं; पर नाम के साथ आवे तो दोनों प्राणि वाचक और अप्राणि वाचक को लगाते हैं; जैसा किस तरह से; क्या दाना आदमी; किसका घोड़ा ? मेरा; क्या है ? चीज़ ॥

कौन शब्द को द्वितीयादि विभक्तियों के एक वचन में **किस** बहु-वचन में **किन किन्ह** वा **किन्हों** आदेश करके आगे प्रत्यय का योग होताहै, शेष पूर्ववत् जानो ॥

विभक्ति	एकवचन	बहु वचन
१	कौन	कौन
२।४	किसको, किसे	किनको, किन्होंको, किन्हें

३।५	किसने, किससे	किनने, किन्होंने, से
६	किसका-की-के	किनका-किन्होंका-की-के
७	किसमें-पै-पर	किनमें-किन्होंमें-पै-पर

क्या इसके रूप दोनों वचन में एकसेही होते हैं द्वितीयादि विभक्तियों में **काहे** आदेश होकर आगे प्रत्यय जोड़े जाते हैं जैसा १ क्या २।४ काहे को ३।५ काहेसे-ने ६ काहेका-की-के, काहे-में-पै-पर ॥

---

१३ पाठ

सामान्य सर्वनाम ॥

प्र० सामान्य सर्वनाम किसे कहते हैं और कैसा प्रयोग होता है ?

उ० **कोई, कुछ, आप** ये सामान्य सर्वनाम हैं; इनमेंसे केवल **कोई** इस का प्रयोग मनुष्य वाचक में होता; और **कुछ** का सामान्य पदार्थ मात्र में; पर नाम के पीछे विशेषण के सदृश आवें, तो प्राणि वाचक और अप्राणि वाचक में उनका प्रयोग किया जाता है; जैसा किसी को दो, किसी नगर में, कुछ पानी दे, कुछ लोग इत्यादि ॥

प्र० इनको विभक्ति प्रत्यय लगाने से कैसे रूप होते हैं?

उ० आप के रूपतो पुरुष वाचकों में लिख आये हैं, बाकी दोके ऐसे होते हैं कि **कोई** द्वितीयादि विभक्तियों में **किसी** आदेश और **कुछ** को **किसू**+ आदेश होते हैं और दोनों वचनों में एक से रूप जानो; जैसा १ कोई २।४ किसी को ३।५ किसीने- से, ६ किसी का-की-के,७ किसी में-पै-पर ॥ १ कुछ २।४ किसू को ३।५ किसूने-से ६ किसू का-की-के ७ किसू में-पै-पर ॥

प्र० और कोई शब्द सामान्य सर्वनाम होवें तो कहिये?

+ कोई २ कहते हैं कि कोई इन सामान्य सर्वनामके रूप द्वितीया आदि विभक्तियों को बहु वचन में नहीं हैं पर ऐसे वाक्य से देखो, हमारी पाठशाला की परीक्षा हुई तब किसी२ विद्यार्थीने अच्छे २ जवाब दिये, यहां स्पष्ट है कि किसी२ बहुत्व बतलाता है इसलिये बहु-वचन है किसी रूप की द्विरुक्ति करके आगे प्रत्ययों को जोड़कर बहुवचन बतलाते हैं ॥

उ० **एक दूसरा दोनों** और **सब** इनसे विभक्ति प्रत्यय होते हैं; द्वितीयादि विभक्तियों के बहुवचन में **सब** शब्द के ब को भ आदेश विकल्प से करते हैं; जैसा सबोंने कहा वा सभोंने कहा- सभों को दो ॥

कई सामान्य सर्वनाम हैं; कोई को विभक्ति प्रत्यय नहीं जोड़े जाते, पर कोई एक इस संयुक्त पद का विभक्ति कार्य होता है यदि इस पद का अर्थ बहुत्व बोधक है तो भी बहुवचन सामान्य रूप नहीं होता अर्थात् एक शब्द से प्रत्ययों का योग होता है; जैसा कोई एक को मैंने देखा कोई एकों को नहीं बोलते ॥

---

१४ पाठ

सर्व नामों के विषय में—स्फुट विचार ॥

प्र० नाम के साथ सर्वनामों की योजना किस प्रकार से होती है?

उ० नाम के पीछे सर्वनाम विशेषण के रूप से आवे तो यह नियम है कि विभक्ति प्रत्यय नाम से जोड़ देते हैं सर्वनाम से नहीं, नाम प्रथमान्त होवे तो सर्वनाम भी प्रथमान्त रहता है, नाम अन्य विभक्ति में होवे तो सर्वनाम का सामान्य रूप पीछे आता है, नाम के वचनानुसार सर्वनाम का वचन रहता है; जैसा क्या, तुम होशयार मनुष्य ऐसे फसे, वह बात मैंने सुनी, कौन जानवर है, कोई सरकारी नौकर रहता है, मुझ ग़रीब को धन दो, उस लड़के का हाथ टूट गया, मुझ निर्बुद्धि को इतना यश मिला यही बहुत है इत्यादि ॥

प्र० बहुवचन में द्वितीयादि विभक्तियों के दो २ रूप जो लिखे हैं उनके अर्थ में कुछ भेद होवे तो कहिये?

उ० ओकारान्त सामान्य रूप से जो रूप बनते हैं वे सदा बहुत्व बतलाते हैं, इन्हों को, उन्हों को, इत्यादि ॥ अन्य रूप कभी २ आदरार्थ

+ कोई २ कहते हैं कि कई यह पुरुषार्थक सर्वनाम है ॥ पर यह रूप पुरुष के नहीं आता है आता है और उसको कर्ता कहते हैं ॥

बहु वचन में आते हैं हमको, हमें, तुमको इत्यादि ॥ उक्त सर्वनामों का परिगणन कोष्ठक में पृथक् २ लिखता हूं ॥

पुरुषवाचक सर्व नाम	दर्शकसर्वनाम	सम्बन्धी सर्व नाम	प्रश्नार्थक सर्वनाम	सामान्य सर्वनाम	ये मुख्य हैं ॥
मैं, तू, वह	यह, वह, सो, तीन	जो, जौन	कौन, क्या	कोई, कुछ, आप	
0	0	0	0	0	इनमेंसेबाज़ेअन्यस-
0	0	0	0	एक दूसरा	र्वनाम वाचकके योग
0	0	0	0	दोनों और	से भी सर्वनाम और
0	0	0	0	बाज़े, बहुत	विशेषण बनते हैं; जै-
0	0	0	0	सब, हर, फ	सा जो कुछ जो कोई, दू
0	0	0	0	लान, कई	सरा कोई, हर एक इ०
0	ऐसा, वैसा,	जैसा	कैसा	कैसा ही	प्रकारार्थबोधक; इस,
0	तैसा			कितना ही	उस, इत्यादि रूपों
0	इतना, इ-	जितना,	कितना		के स को तन और
0	त्ता, उतना,	जित्ता,	कित्ता		ता आदेश करने से
0	उत्ता, तित-				बनते हैं ॥ वे परिमा-
0	ना, तित्ता				णबोधक कहाते हैं ॥

इनमें से प्रकारार्थ वा परिमाणार्थ वा दूसरा, फलाना, बाज़े, इनको स्त्रीलिङ्ग करना हो तो अंत्य वर्ण को ई आदेश करते हैं जैसा कैसा, कैसी इत्यादि और बहुधा सर्वनाम शब्द विशेषण भी होते हैं ॥

१५ पाठ

विशेषण विचार ॥

प्र० विशेषण किसे कहते हैं ?

उ० जिस शब्द से नाम का गुण वा धर्म समझा जाय उसे विशेषण

कहते हैं; जैसा धर्म शील मनुष्य, होशयार लड़का इत्यादि यहां धर्म शील और होशयार विशेषण हैं ॥ विशेषण को नाम के सदृश लिङ्ग वचन और विभक्तियां होती हैं ॥

प्र० विशेषण कितने प्रकार के हैं ?

उ० गुण वाचक और संख्या वाचक ये विशेषण के दो प्रकार हैं; जैसा अच्छा, बुरा, कमीना इत्यादि ॥ ये गुण वाचक विशेषण हैं; पदार्थ का संख्या रूप गुण जिससे समझा जाय वह संख्या वाचक विशेषण होता है; जैसा एक, दो, तीन इत्यादि ॥

प्र० विशेष्य किसे कहते हैं ?

उ० जिस नाम का गुण विशेषण बोधित करे वह उस विशेषण का विशेष्य होता है; जैसा काला घोड़ा, एक घोड़ा, यहां घोड़े का **काला** और **एक** विशेषण हैं और विशेषण बोधित विशेष्यता अर्थात् कालापन और एकत्व घोड़ेमें है, इससे घोड़ा यह नाम विशेष्य है॥ हिन्दीभाषा में विशेष्य के लिङ्ग वचनानुसार विशेषण के लिङ्ग वचन होते हैं और विशेषण विशेष्य के पहिले रहता है; जैसा काला घोड़ा, काली घोड़ियां ॥

गुण विशेषण ॥

प्र० गुण विशेषण किसे कहते हैं और उसके रूप लिङ्ग और वचन में कैसे होते हैं ?

उ० जिसमें केवल गुण पाया जाय वह गुण विशेषणहै ॥ उनमें आकारान्त विशेषणों को छोड बाकी विशेषणों के रूप विशेष्य के लिङ्ग वचन और विभक्ति के अनुसार नहीं बदलते हैं; जैसा **सुन्दर** मर्द, **सुन्दर** औरत, **सुन्दर** लड़का, **सुन्दर** लड़के इत्यादि ॥

प्र० आकारान्त विशेषण की योजना कैसी होती है ?

उ० विशेषण का रूप नामके लिङ्ग वचन और विभक्ति के अनुसार होता है अर्थात् विशेष्य पुंल्लिङ्ग और प्रथमा के एक वचन में होवे तो, विशेषण आकारान्त ही रहता है,विशेष्य पुंल्लिङ्ग और प्रथमा के बहु वचन मेंहो या द्वितीयादि विभक्त्यन्त अथवा सशब्द योगिक होवे तो विशेषण

के अंत्य आ को ए आदेश होता है विशेष्य स्त्रीलिङ्ग होवे तो विशेषण के अंत्य आ को ई आदेश होता है; जैसा कालाघोड़ा, काले घोड़े, कालेघोड़े को, कालेघोड़ों पर, कालीघोड़ी, वा काली घोड़ियां, अच्छे लड़के इत्यादि ॥

प्र० विशेषण विभक्ति का योग किस प्रकार से होता है?

उ० जब विशेषण तद्गुण विशिष्ट नाम वाचक के लिये आता है तब उसको नामके समान विभक्ति लिङ्ग वचन लगते हैं, विशेषण आकारान्त होवे तो आकारान्त नामवत् ईकारान्तादिकों को ईकारान्तादि नामवत् विभक्ति कार्य होता है ॥

पुंल्लिङ्ग भला शब्द ॥

वि०	एकवचन	बहुवचन	वि०	एकवचन	बहुवचन
१	भला	भले	६	भलेका-की-के	भलों का-की-के
२।४	भलेको	भलोंको	७	भलेमें-पै-पर	भलोंमें-पै-पर
३।५	भलेने-से	भलोंने-से	८	हेभला	हेभले

स्त्रीलिङ्ग भली शब्द ॥

वि०	एकवचन	बहुवचन	वि०	एकवचन	बहुवचन
१	भली	भली	६	भलीका-की-के	भलियोंका-की-के
२।४	भलीको	भलियोंको	७	भलीमें-पै-पर	भलियों में-पै-पर
३।५	भलीने-से	भलियोंने-से	८	हेभली	हेभलियो

तद्गुण विशिष्ट अकारान्त सुन्दर शब्द ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन	विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	सुन्दर	सुन्दर	६	सुन्दरका-की-के	सुन्दरोंका-की-के
२।४	सुन्दरको	सुन्दरोंको	७	सुन्दरमें-पै-पर	सुन्दरों में-पै-पर
३।५	सुन्दरने-से	सुन्दरोंने-से	८	हेसुन्दर	हेसुन्दरो

इसी तरह और विशेषण जानो ॥

---

१६ पाठ

उपमा वाचक और विशेषण का न्यून और अधिक भाव ॥

प्र० सादृश्यार्थक प्रत्यय किन २ शब्दोंसे होते हैं?

उ० सादृश्यार्थक और विशेष्यता बोधक **सा** प्रत्यय का योग नाम, सर्वनाम, और विशेषण के आगे क्रिया करते हैं विशेषण के साथ वह प्रत्यय आवे तो कभी २ अर्थ न्यूनत्व जनाता है जैसा तेरी कुतिया सी कुतिया, मेरी सी आंखें, छोटासा घर; इत्यादि ॥ सांत शब्द को आकारान्त विशेषण के समान लिङ्ग वचनादि कार्य होता है॥

प्र० एक पदार्थ में दूसरे से वा सब सजातीय पदार्थों से गुणाधिक्य या गुण न्यूनत्व होवे तो किस प्रकार से बतलाना चाहिये ?

उ० यह गुणाधिक्य बताने के लिये विशेषण का कुछ कार्य नहीं होता, पर जिसके साथ तुलना की जावे उस नाम को पञ्चमी का प्रत्यय **से** जोड़ा जाता है, और सब सजातियों से तुलना होवे तो उस नाम के पीछे सब यह शब्द लगादेते हैं; यह नियम हिन्दी में साधारण है; पर कभीर संस्कृत की रीति के अनुसार विशेषण को **तर** और **तम** प्रत्यय जोड़के पूर्वोक्त कार्य करते हैं; जैसा मोहन लाल सुन्दर लाल से बुद्धिमान है, विद्या द्रव्य से अच्छी चीज़ है, हमारी घोड़ी तुमारी घोड़ी से चालाक है, हिमालय पर्वत सब पर्वतों से ऊंचा है, गणपति अपने सब साथियों से होशियार है, पुण्य-पुण्यतर- पुण्यतम -प्रिय-प्रियतर -प्रियतम इत्यादि ॥

॥ १७ पाठ ॥

संख्या विशेषण ॥

प्र० संख्या विशेषण किसे कहते हैं और उसके रूप कैसे होते हैं ?

उ० संख्या जिस से बोधित होय उसे संख्या वाचक कहते हैं; जैसा एक, दो, तीन इत्यादि ॥ इन शब्दों का प्रयोग विशेष्य के साथ किया जावे तो रूप में कुछ भेद नहीं होता; जैसा एक मर्द को वा औरत को, दो तीन मर्दों ने इत्यादि ॥ दो **संख्या** वाचक से विभक्ति का योगकिया जावे तो ऐसेरूप होतेहैं; जैसा १ दोनों २।४ दोनोंको ३ दोनोंने ५ दोनों से ६ दोनोंका-की-के ७ दोनोंमें-पै-पर ८ हे दोनों—गणमेंसे कोई दो व्यक्तियां

लीजाय तो वहां केवल दो इस रूप को विभक्ति प्रत्यय जोड़ते हैं जैसा दोको-ने-से इ० ॥ बाक़ी एक तीन चार इ० ॥ अकारान्त वा आकारान्त इकारान्त ईकारान्त संख्या वाचकों से विभक्तियों का योग करते हैं तब तत्तद्वर्णान्त नाम के सदृश रूप होते हैं और कई एक संख्या विशेषण समूह वाचक विशेषण हैं जैसा गंडा, कोरी, सैकड़ा इत्यादि ॥ बहुत्व बताने में विशेष्य के पूर्व संख्या वाचक से ओं जोड़ते हैं, जैसा हज़ारों आदमी लाखों रुपये इत्यादि ॥

क्रम वाचक ॥

प्र० क्रमवाचकविशेषणकिसे कहतेहैं और उसके रूप भेद होतेकहिये?

उ० जो विशेषण क्रम बतावे उसे क्रम वाचक विशेषण कहते हैं; जैसा पहिला, दूसरा, हज़ारवां यहां सात से आगे संख्या वाचक को वां वीं वें आगम करने से क्रम वाचक बन जाता है, और एक से छः तकपहिला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पांचवां, छठवां, छठा इत्यादि आदेश होते हैं, और इन से लिङ्ग वचन और विभक्ति का योग करना हो तो आकारान्त विशेषण के समान रूप होते हैं; जैसा दसवां लड़का, दसवें लड़के को-से-का-की दसवीं लड़की, दसवीं लड़कियां,दसवींलड़कीको,दसवीं लड़कियोंको इत्यादि ॥

आवृत्ति वाचक ॥

प्र० आवृत्ति वाचक किसे कहते हैं ?

उ० संख्या वाचक से गुना प्रत्यय लगाने से औ प्रकृति का ह्रस्व वा न लोप वा ओकार आदि आदेश करने से आवृत्ति वाचक होते हैं, जैसा संख्या वाचक दो तीन चार पांच छः इत्यादि ॥

आवृत्ति वाचक दुगुना, तिगुना, चौगुना, पचगुना, छगुना इत्यादि ॥

संख्या वाचक को बार वा बेर प्रत्यय जोड़ने से भी आवृत्ति वाचक बनजाते हैं ॥ जैसा एक बार, दो बार वा बेर इ० ॥

संख्या वाचक ॥

प्र० संख्यांश वाचक किसे कहते हैं और वे कौन २ हैं ?

उ० संख्या का अंश अर्थात् भाग प्रदर्शक जो विशेषण उसे संख्यांश वाचक कहते हैं ॥

जैसा पाव, चौथे, चौथाई, तिहाई, आधा, आध, पौन, पौने, सवा, डेढ़, अढ़ाई ॥ कोई संख्या उत्तर अङ्कसे एक चतुर्थांश कम होवे वा अधिक होवे तो पौने, पौन, सवा क्रमसे पीछे आते हैं जैसा पौने दो, सवा दो इत्यादि, और एक द्वितीयांश अधिक होवे तो एकसे डेढ़, दोसे अढ़ाई, तीन आदि से साढ़े तीन; साढ़ेचार इत्यादि होते हैं और जब सौ हज़ार लाख इत्यादन्त संख्या वाचक के साथ पौने, सवा, साढ़े आते हैं तब सौ हज़ार इत्यादि संख्या का भाग जानो; जैसा पौने दोसौ १७५ सवा दोसौ २२५ साढ़ेतीन सौ ३५० इत्यादि ॥

क्रियापद विचार १९

क्रियापद का लक्षण और उसके भेद ॥

प्र० क्रियापद किसे कहते हैं ?

उ० जिससे कृति वा स्थिति अर्थात् देह और मन के व्यापार का बोध हो उसे क्रिया पद कहते हैं जैसा लिखता है, बोलता है, शोचता है, खाचुका इत्यादि ॥

प्र० क्रियापद किस से बनता है ?

उ० क्रियापद धातुसे बनता है ॥

प्र० धातु किसे कहते हैं ?

उ० क्रिया का मूल अर्थात् प्रत्ययादि कार्य रहित व्यापार बोधक जो शुद्ध रूप है उसे धातु कहते हैं, जैसा गा, सो, बैठ, कर इ० ॥ भाषा वाले इन धातुओं के आगे **ना** प्रत्यय लगाकर धातु बतलाते हैं, इसमें कुछ हानि नहीं ॥

प्र० धातु कितने प्रकार की हैं ?

उ० धातु दो प्रकार की हैं एक सकर्मक दूसरी अकर्मक ॥

प्र० सकर्मक और अकर्मक क्रियापदों का क्या लक्षण है ?

उ० जिस क्रिया के व्यापार से उत्पन्न फल कर्त्ता से अन्य पदार्थ में जावे वह क्रियापद और उसकी धातु सकर्मक कहाती है, जैसा वह लड़के को पढ़ाता है, और जिस क्रिया के व्यापार का फल कर्त्ताही में रहे उस क्रियापद को और उसकी धातु को अकर्मक कहते हैं, जैसा वह सोताहै॥

उदाहरण ॥

सकर्मक क्रियापद	अकर्मक क्रियापद
वह घरको बनाता है	बालमुकुन्दबैठा है
मोहन पोथीलिखता है	कुत्ता भोंकता है
बालक रोटी खाता है	यज्ञदत्त पढ़ता है

क्रियापद सकर्मक है वा अकर्मक है इसका ज्ञान होने की और भी रीति है ॥

१ जिस क्रियापद से **क्या** और **किसको** ऐसा प्रश्न करके उत्तर मिल सके तो वह क्रियापद सकर्मक जानो, जैसा वह खाता है और खिलाता है इस वाक्य में क्या खाता है और किसको खिलाता है ऐसा प्रश्न करने से **रोटी** और **कुत्तेको** इत्यादि ये उत्तर मिलते हैं इसलिये खाता है और खिलाता है ये क्रियापद सकर्मक हैं जिस धातुका प्रयोग सामान्य भूतकाल में किया जावे तो कर्त्ताको तृतीया विभक्ति का प्रत्यय **ने** लगता है वह धातु सकर्मक जानो जैसा गोबिन्दने बैल छोड़ा, रामने रावण को मारा इत्यादि लाना, भूलना, बोलना, समझाना, बकना, ये कहीं २ अपवाद हैं, और जिस क्रियापद से उत्तर न मिले उसे अकर्मक जानो, जैसा सोता है, बैठा है इत्यादि ॥

धातुओं के भेद ॥

प्र० धातुओं के और कौन २ भेद हैं ?

उ० सिद्ध धातु, साधित धातु, और अनु करण धातु ये तीन भेद हैं; सिद्ध धातुओं का सहाय धातु यह एक भेद है ॥

प्र० सिद्ध धातु किसे कहते हैं ?

उ० जो किसी से न बना होवे वह सिद्ध धातु है; जैसा सो, बैठ, खा, पी इत्यादि ॥ एक धातु के आगे दूसरा धातु आकर मूल धातु का अर्थकाल इत्यादि बतलाता है उसे सहाय धातु कहते हैं; जैसा सो गया, पकाता रहता है, करता होगा, पका करता है इत्यादि ॥

प्र० साधित धातु किसे कहते हैं ?

उ० सिद्ध धातु को प्रत्ययादि कार्य करने से जो नया धातु बनता है वह साधित धातु है; जैसा रिझाना, समझाना, खिलावना इ० ॥ इन के दो भेद हैं प्रयोजक, और नाम धातु ॥

प्र० प्रयोजक क्रिया पद किसे कहते हैं ?

उ० जहां क्रिया के मुख्य कर्त्ता का कोई दूसरा प्रेरक होकर वाक्य में कर्त्ता होता है वहां वह क्रियापद **प्रयोजक** जानो ॥ प्रयोजक क्रियापद का यह धर्म है कि मूल धातु अकर्मक होवे, तो सकर्मक हो जाता है अर्थात् अकर्मक क्रिया पद का कर्त्ता प्रयोजक क्रियापद का कर्म होता है, और मूल धातु सकर्मक होय तो और एक कर्म बढ़जाता है, पर यह कर्म हिन्दी में करण या अपादान रूप से आता है, जैसा अन्न पकता है, और क्रियापद प्रयोजक करने से, वह मनुष्य अन्न पकाता है यहां मनुष्य कर्त्ता और अन्न कर्म हुए हैं- वह घर बनाता है ॥ प्रयोजक क्रियापद करने से मैं उससे घर बनवाता हूं ॥ प्रयोजक क्रियापद की धातु भी प्रयोजक जानो ॥

प्र० नाम धातु किसे कहते हैं ?

उ० नाम धातु उन धातुओं को कहते हैं, जो कि नाम अथवा विशेषण से बनते हैं; जैसा चौड़ा, चौड़ाना; तरस, तरसाना; पानी, पनियाना; आधा, अधियाना; ॥

प्र० अनु करण धातु किसे कहते हैं ?

उ० कार्य सदृश उच्चारण जिस धातु का हो वह अनुकरण धातु कहलाता है जैसा घुरघुराता है इत्यादि ॥

१९ पाठ

क्रियापद के लिङ्ग वचन और पुरुष ॥

प्र० क्रियापद में कौन २ बातें अवश्य हैं?

उ० लिङ्ग, वचन, पुरुष, अर्थ, काल, और प्रयोग अवश्य होते हैं, और इनका ज्ञान क्रियापद के रूप से होता है इन भेदों से क्रियापद के रूप प्रायः बदलते हैं ॥

प्र० क्रियापद के लिङ्ग, वचन, और पुरुष कितने हैं ?

उ० दो लिङ्ग पुंल्लिङ्ग और स्त्री लिङ्ग; दो वचन एक वचन और बहु वचन, तीन पुरुष प्रथम पुरुष, द्वितीय पुरुष, तृतीय पुरुष ॥

पुंल्लिङ्ग

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
प्रथम पुरुष	मैं करता हूं	हम करते हैं
द्वितीय पुरुष	तू करता है	तुम करते हो
तृतीय पुरुष	वह करता है	वे करते हैं

स्त्री लिङ्ग

प्र०-पु	मैं करती हूं	हम करती हैं
द्वि-पु	तू करती है	तुम करती हो
तृ-पु	वह करतीहै	वे करती हैं

---

२० पाठ

अर्थ विचार ॥

प्र० क्रियापद का अर्थ समझाइये और उसके भेद बतलाइये ?

उ० कोई क्रिया अथवा व्यापार करने के विषय में बोलने वाले के मन में जो भाव होवे तद्भाव बोधक जो क्रिया पद का रूप उसे अर्थ कहते हैं और वे अर्थ पांच प्रकार के हैं स्वार्थ, आज्ञार्थ, विध्यार्थ, संशयार्थ और सङ्केतार्थ ॥

१ जब कोई बात है वा नहीं इतना बोध क्रियापद से होताहै तब वह क्रियापद स्वार्थ में रहता है; जैसा वह करता है, उसनेकामनहींकिया ॥

२ जब बोलने वाला **आज्ञा** वा **उपदेश** वा **प्रार्थना** करता है तो उस क्रिया पद को आज्ञार्थ में जानो; जैसा तू काम मत कर; अपने से हलके को कोई काम करने के लिये कहना आज्ञा है और अपने बड़े से कुछ करने के लिये कहना, प्रार्थना है पर कभी २ दोनों अर्थों में क्रियापद के रूप एकसेही आते हैं; जैसा अय राजा मेरा सङ्कट दूर कर, पानी ला, यहां पहिले में प्रार्थना और दूसरे में आज्ञा है ॥

३ आज्ञा का अर्थ गर्भित होकर धर्म, शक्यता, योग्यता, सम्भावना, आशंसा इत्यादि अर्थों का बोध क्रिया पदके रूप से होता है, तब विध्यर्थ में क्रिया पद है ऐसा जानो; जैसा वह काम करे, अर्थात् जो वह काम करे तो योग्य है; होसके सो कर ॥

४ जिस क्रिया पद से सन्देह का बोध होवे, उसे संशयार्थ कहते हैं, जैसा वह गया होगा ॥

५ एक क्रियाकी सिद्धि दूसरी क्रिया पद है तो वह क्रिया सङ्केतार्थ में जानो; जैसा अगर मैं आज तक पाठशाला में पढ़ता तो मेरी बढ़ती होजाती, इस अर्थ को **हेतु हेतु मत्** भी कहते हैं, कभी २ यह अर्थ समझाने के लिये **अगर तो यदि** इत्यादि अव्ययों की योजना करतेहैं; ॥

---

२१ पाठ

काल विचार ॥

प्र० काल किसे कहते हैं ?

उ० क्रिया जिस समय में हुई हो उसे काल कहते हैं, और उसका बोध क्रिया पद के रूप से होता है ॥

प्र० कालके कितने भेद हैं ?

उ० वर्त्तमान, भूत, भविष्य ये तीन भेद हैं ॥

प्र० वर्त्तमान काल किसे कहते हैं ?

उ० जो होरहा है उसे वर्त्तमान काल कहते हैं जैसा मैं पूजाकरताहूं ॥

प्र० भूतकाल किसे कहते हैं ?

उ० वर्त्तमान काल से पूर्व होगया जो समय उसे भूतकाल कहते हैं जैसा नन्दलाल ने पुस्तक पढ़ी, यह भूतकाल सामान्य भूत, अपूर्ण भूत, भूतभूत, वर्त्तमान भूत के भेद से चार प्रकार का है १ जो क्रिया पूर्वकाल में होगईहो और पूर्वकाल का निश्चित ज्ञान न पाया जाय उसे सामान्य भूत कहते हैं, जैसा वह गया, २ भूतकाल में जिस क्रिया की पूर्णता न हो जाय उसे अपूर्ण भूत कहते हैं, जैसा मैं करता था, ३ भूतकाल में क्रिया का प्रारम्भ होकर पूरी होगई होवे तो उसे भूतभूत काल समझो॥ कभी २ जो क्रिया दूसरी भूत क्रिया के पूर्व होगई हो उसका प्रयोग भूत भूतकाल में होता है, जैसा आप के आने के पूर्व वह गया था ४ जो क्रिया भूतकाल में प्रारम्भ होकर वर्त्तमान काल में समाप्त हुई है उसे वर्त्तमान भूत कहते हैं, जैसा मैंने उसको मारा है, इसे आसन्न भूत भी कहते हैं॥

प्र० भविष्यत्काल किसे कहते हैं ?

उ० भावी अर्थात् होने वाली क्रिया के समय को भविष्यत्काल कहते हैं जैसा वह जावेगा इ० ॥

---

२२ पाठ

प्रयोग विचार ॥

प्र० प्रयोग किसे कहते हैं ?

उ० हिन्दी में क्रिया पद के लिङ्ग वचन और पुरुष कर्त्ता के अनुसार और कभी २ कर्म के अनुसार होते हैं, और कई एक स्थलों में दोनों के भी अनुरोध से क्रियापद नहीं रहता है॥ इस क्रियापद में कर्त्ता और कर्म से ऐक्य या भिन्नत्व वाक्य की रचना से बोधित होता है, इस वाक्य रचना के प्रकार को या इस तरह से क्रियापद के विकृत रूप को प्रयोग कहते हैं॥

प्र० प्रयोग कितने प्रकार के होते हैं ?

उ० कर्त्तरि प्रयोग, कर्म्मणि प्रयोग, भावे प्रयोग ये तीन प्रकार हैं॥

प्र० ये प्रयोग किस रीति से जाने जाते हैं और इन के कुछ भेद हों तो कहो ?

उ० जहां कर्त्ता के अनुसार क्रियापद का रूप होता है वहां कर्त्तरि प्रयोग जानो ॥ कर्त्तरि प्रयोग के दो भेद हैं, एक सकर्मक कर्त्तरि और दूसरा अकर्मक कर्त्तरि ॥ जहां क्रियापद सकर्मक होवे, वहां सकर्म्मक कर्त्तरि प्रयोग होता है; और जहां क्रियापद अकर्मक होवे, वहां अकर्मक कर्त्तरि प्रयोग जानो; जैसा लड़का जाता है, लड़के आते हैं, लड़कियां जाती हैं, मैं जाता हूं-अकर्मक कर्त्तरि, मोहनलाल ख़त लिखता है, शिव प्रसाद पानी पीता है- सकर्मक कर्त्तरि प्रयोग जानो ॥

जहां कर्म के अनुसार क्रियापद हो वहां कर्म्मणि प्रयोग जानो, जैसा रामने सिंह मारा, सिंहिनी मारी, मैंने ख़त भेजा, चिट्ठी लिखी, इत्यादि ॥

कर्त्ता और कर्म के अनुसार जहां क्रियापद का रूप नहीं होता केवल सामान्यत: पुंल्लिङ्ग तृतीय पुरुष एक वचन में रहता है अर्थात् जहां क्रिया का भावही कर्त्ता हो वहां भावे प्रयोग जानो; जैसा रामलाल ने सिंह को मारा, राम ने सिंहिनी को मारा, इत्यादि प्रयोगों में क्रियापद का लिङ्ग वचन नहीं बदलता इस लिये ये भावे प्रयोग हैं ॥

प्र० ये प्रयोग किस काल और अर्थ में होते हैं ?

उ० ये प्रयोग, धातु वर्त्तमान काल वाचक और भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों से बनते हैं ॥

सब अर्थ और काल में अकर्मक धातु और बोल, भूल, ला, बक, समझ इन सकर्मक धातुओं से कर्त्तरि प्रयोग होता है, जैसा वह जावे, रामलाल घरको पहुंचा, वह बोला, मैं यह बात भूला, वह बासन लावेगी इत्यादि ॥

धातु और वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से जो रूप बनते हैं उनमें सकर्मक धातुओं से कर्त्तरि प्रयोग बनता है; जैसा वह लड़का अपनी मा को बहुत कष्ट देता है, नर्मदा प्रसाद अच्छा बोलता था इ० ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से जो काल और अर्थ बनते हैं उन में **बोल** धातु का गण छोड़ सकर्मक धातुओं से कर्मणि और भावे

प्रयोग होते हैं पर इतना ध्यान में रखना चाहिये कि कर्मणि प्रयोग में कर्त्ता तृतीयान्त और कर्म प्रथमान्त, और कर्म के अनुसार क्रियापद रहते हैं; और भावे प्रयोग में कर्त्ता तृतीयान्त, कर्म द्वितीयान्त; और क्रियापद पुंल्लिङ्ग तृतीय पुरुष एक वचन होते हैं; जैसा मैंने चिट्ठी लिखी, कृष्ण ने शेर मारा; उसने बहुत से देश देखे हैं, कर्मणि प्रयोग ॥ कृष्ण ने शेर को मारा, मैंने आप के यहां सेवक को भेजा था- भावे प्रयोग ॥

---

२३ पाठ

क्रिया पद बनाने की रीति ॥

प्र० धातु से क्रियापद किसरीति से बनते हैं ?

उ० हिन्दी भाषा में क्रियापद बहुधा एकही रीति से बन जाते हैं इस विषय में तीन नियम हैं ॥

१ धातु का शुद्ध रूप अर्थात् धातु साधित भाव वाचक नाम का **ना** गिरा कर जो शेष रहता है वह आज्ञार्थ द्वितीय पुरुष एक वचन का रूप होता है जैसा बोलना से **बोल** यह आज्ञार्थ द्वितीय पुरुष एकवचन का रूप होता है ॥

२ धातु को **ता** प्रत्यय लगाने से वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण होता है जैसा बोलता ॥

३ धातु के अन्त वर्णको **आ** मिलाने से भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण होता है; जैसा बोला ॥

धातु के अन्त में **आ ई ऊ ए ओ** होवें तो पूर्वोक्त आकार आदिकों के पीछे **य** आगम करके ईकार और एकार को ह्रस्व करदेते हैं; जैसा **ला** लाया, **पी** पिया, **छू** छुआ, **दे** दिया, **रो** रोया, परंतु कई धातुओं के रूप और रीति से होते हैं, जैसा **कर** किया, **जा** गया, **हो** हुआ इत्यादि ॥

इन तीन रूपों से और इनसे **हो** इस सहाय धातु के वर्त्तमान और भूतकाल के रूप जो जोड़कर सब **अर्थ** और कालों के रूप बन जाते हैं ॥

यह स्मरण रखना चाहिये कि क्रियापद का रूप पुंल्लिङ्ग एक वचन में आकारान्त होवे, तो अन्त्य आ को बहुवचन में एं स्त्रीलिङ्ग एकवचन में ई और बहु वचन में ईं आदेश होते हैं, यह प्रायःरीति है ॥ जब दो अथवा अधिक रूप स्त्रीलिङ्गी आते हैं तब रूप के अन्त्य ई पर अनुस्वार करदेते हैं; जैसा औरतें बैठती थीं ॥

सहाय धातु हो ॥

	वर्त्तमानकाल		भूतकाल	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
प्र—पु	मैं हूं	हम हैं	मैं था	हम थे
द्वि—पु	तू है	तुम हो	तू था	तुम थे
तृ—पु	वह है	वे हैं	वह था	वे थे
		स्त्री-	मैं थी	हम थीं इ० ॥

२४ पाठ

केवल धातु से बने हुए अर्थ और काल ॥

प्र० शुद्धधातु से कौन २ अर्थ और काल बनते हैं ?

उ० शुद्धधातु से हेतुहेतुमद्भविष्यकाल, और आज्ञार्थ के रूप बन जाते हैं ॥

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल ॥

धातु से वक्ष्यमाण प्रत्यय लगाने से हेतुहेतुमद्भविष्यकाल के रूप बन जाते हैं ॥ इसके रूपों में लिङ्ग भेद नहीं होता ॥ प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्र-	ऊं	एं
द्वि-	ए	ओ
तृ-	ए	एं

जब धातु अकारान्त है तब उसके अंत्य अ के स्थान में ये प्रत्यय आदेश होते हैं; जैसा बोलूं, बोले इ० ॥ धातु के अन्त में आकारादि स्वर

होवे तो **ऊं** और **ओ** प्रत्ययों को छोड़ बाक़ी के प्रत्ययों के पीछे **व** आगम विकल्प से होता है; जैसा खावे वा खाए ॥

और जब आगम नहीं होता तब ये प्रत्यय धातुओं के आगे जोड़े जाते हैं; कभी २ **ए** को य आदेश करते हैं; जैसा लावे, लाए, जाय, खाय इ० ॥

धातु एकारान्त हो तो **ऊं** और ओ को छोड़ शेष प्रत्ययों के पीछे **व** आगम विकल्प से पूर्वोक्त नियम से होताहै, पर जब आगम नहीं करते हैं तब धातुके एकारके स्थानमें उन प्रत्ययोंको आदेश करतेहैं; जैसा दे धातु

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
देऊं	देवें	दूं	दें
देवे	देओ	दे	दो
देवे	देवें	दे	दें

भविष्यकाल ॥

हेतु हेतु मद्भविष्यकाल बोलूंगी, देऊंगा, दूंगा इ० ॥

आज्ञार्थ ॥

दे, बोल, खा, पी इत्यादि ॥

प्र० वर्त्तमानकालवाचकधातुसाधित विशेषण से कौन २ काल बनते हैं ?

उ० सङ्केतार्थभूत, वर्त्तमानकाल, और अपूर्ण भूत ॥

सङ्केतार्थभूत ॥

बोलता, बोलते, बोलती, बोलतीं इ० ॥

वर्त्तमानकाल ॥

बोलता है, बोलते हैं इत्यादि ॥

अपूर्णभूत ॥

बोलता था, बोलती थी इ० ॥

प्र० भूतकाल वाचक धातुसाधित विशेषणसे कौन २ काल बनते हैं?

उ० सामान्य भूतकाल, वर्त्तमान भूतकाल, और भूत भूतकाल बनते हैं ॥

सामान्य भूत ॥

बोला, बोली, बोले इत्यादि ॥

वर्त्तमान भूत ॥

बोला है, बोले हैं इत्यादि ॥

भूत भूत ॥

बोलाथा, बोले थे, बोलीथी इ० ॥

प्र० धातु से पूर्वोक्त रूपों के सिवाय और कौन २ रूप बनते हैं?

उ० आदर पूर्वक आज्ञार्थ और भविष्य काल का प्रयोग बनाना हो तो धातु को **इये इयो** वा **इयेगा** ये प्रत्यय लगा देते हैं; आकारान्त धातु हो तो अंत्य **अ** के स्थान में इन प्रत्ययों को आदेश करते हैं; धातु के अन्त में **ई** वा **ए** हो तो उस धातु को **जिये जियो जियेगा** ये प्रत्यय लगाते हैं; और **ए** कारको **ई** में बदलतेहैं, बाकी की धातुओं को **इये** इत्यादि प्रत्यय लगाते हैं; जैसा लाइये, पीजिये ॥

धातु साधित भाव वाचक नाम ॥

शुद्ध धातु से **ना** प्रत्यय जोड़ने से भाव वाचक नाम होता है और उससे विभक्ति प्रत्यय आकारान्त पुंल्लिङ्ग नामवत् होते हैं; जैसा बोलना; बोलने का, की, के, बोलने में इत्यादि ॥

कर्तृ वाचक धातु साधित नाम ॥

बोलने वाला-बोलनेहारा इत्यादि ॥

धातु साधित विशेषण ॥

बोलता, बोलताहुआ; बोला, बोलाहुआ इत्यादि ॥

धातु साधित अव्यय ॥

जैसा बोल, बोलकर, बोलके, बोलकरके, बोलकरकर इत्यादि-**ता** प्रत्ययान्त वर्त्तमान कालवाचक धातुसाधित विशेषण के **ता** को **ते** आदेशकरके आगे **ही** अव्यय जोड़ने से तत्काल बोधक धातु साधित अव्यय बन जाता है जैसा बोलतेही इत्यादि ॥

---

२५ पाठ

क्रियापद के रूप ॥

प्र० पूर्व में क्रियापद बनाने के नियम आपने कहे उनके अनुसार बने हुये रूप कहिये ?

उ० क्रियापद के रूप समझ में सुलभ से आवें इसलिये तीन भागों में बनाकर लिखता हूं ॥

होना·· अकर्मक .. ..
हो ·· शुद्धधातु .. ..
होता·· वर्त्तमान कालवाचकधातु साधित विशेषण
हुआ·· भूतकालवाचक धातुसाधित विशेषण ..

शुद्ध धातु से बने हुए काल ॥

कर्त्तरि प्रयोग ॥

हेतु हेतुमद्भविष्यकाल——विध्यर्थ वर्त्तमानकाल

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्र- पु-	मैंहोऊं-हों	हमहोवें-होएं-हों
द्वि-पु-.	तूहोवे-होए-होय-हो	तुमहोवो-हो
तृ-पु-	वह होवे-होए-होय-हो	वे होवें-होएं-हो-होंय

स्वार्थ भविष्य काल ॥

मैंहोऊंगा-हूंगा	हमहोवेंगे-होएंगे-होंगे
तूहोवेगा-होयगा-होगा	तुमहोओगे-होगे
वहहोवेगा-होएगा-होगा	वेहोवेंगे-होएंगे-होंगे
स्त्री- मैं होऊंगी-हूंगी	हमहोवेंगी-होएंगी-होंगी-इ०

आज्ञार्थ वर्त्तमान काल ॥

मैंहोऊं-हों	हम होवें-होएं-हों
तू हो	तुम होओ-हो
वहहोवे-होय-हो	वे होवें-होएं-हों

वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए काल ॥

कर्त्तरि प्रयोग ॥

॥ सङ्केतार्थ भूतकाल—स्वार्थरीति भूतकाल ॥

पुंल्लिङ्ग

मैं होता	हम होते
तू होता	तुम होते
वह होता	वे होते
स्त्री-मैं होती	हम होतीं- इत्यादि ॥

स्वार्थ वर्त्तमान काल ॥

मैं होताहूं	हम होते हैं
तू होता है	तुम होते हो
वह होता है	वे होते हैं
स्त्री-मैं होती हूं	हम होतीं हैं-इ० ॥

स्वार्थ अपूर्ण भूत काल ॥

मैं होता था	हम होते थे
तू होता था	तुम होते थे
वह होता था	वे होते थे
स्त्री-मैं होती थी	हम होती थीं इत्यादि ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों से बने हुए काल ॥

कर्त्तरि प्रयोग ॥

स्वार्थ सामान्य भूतकाल ॥

मैं हुआ	हम हुए
तू हुआ	तुम हुए
वह हुआ	वे हुए
स्त्री-मैं हुई	हम हुईं इत्यादि ॥

स्वार्थ वर्त्तमान भूतकाल ॥

मैं हुआ हूं	हम हुए हैं

तू हुआ है — तुम हुए हो
वह हुआ है — वे हुए हैं
स्त्री-मैं हुई हूं — हम हुईं हैं-इ० ॥

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैं हुआ था — हम हुए थे
तू हुआ था — तुम हुए थे
वह हुआ था — वे हुए थे
स्त्री-मैं हुई थी — हम हुईं थीं-इ० ॥

आदर पूर्वक आज्ञार्थ ॥

हूजिये हूजियो हूजियेगा इत्यादि ॥

धातु साधित नाम ॥

होना·······भाव वाचक होने वाला ॥ होनेहारा···· कर्तृवाचक

धातु साधितविशेषण ॥

होता— होता हुआ- स्त्री-होती-होतीहुई- } वर्तमानकालवाचक { ए-हुआ-स्त्री-हुई-भूत काल वाचक ॥

धातु साधित अव्यय ॥

हो - होकर - होके - होकरके- ···· समुच्चयार्थक
होतेही ·······················तत्काल बोधक।

बोल धातु का गया छोड़ सकर्मक धातुओं का यह धर्म है कि जिन कालों के रूप भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बनते हैं, उनमें सकर्मक क्रियापद के कर्ता से तृतीया विभक्ति होती है, यह आगे लिखे हुये रूपों से समझ में आवेगा ॥

मारना सकर्मक ॥

मार·······शुद्ध धातु
मारता· ······वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण ॥
मरा······भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण ॥

केवल धातु से बने हुये काल ॥

कर्त्तरि प्रयोग ॥

हेतु हेतु मद्भविष्य काल—विध्यर्थ वर्त्तमान काल ॥

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
प्र-	मैं मारूं	हम मारें
द्वि-	तू मारे	तुम मारो
तृ-	वह मारे	वे मारें

स्वार्थ भविष्यत्काल ॥

	मैं मारूंगा	हम मारेंगे
	तू मारेगा	तुम मारोगे
	वह मारेगा	वे मारेंगे
स्त्री-	मैं मारूंगी	हम मारेंगी

आज्ञार्थ वर्त्तमान काल ॥

मैं मारूं	हम मारें
तू मार	तुम मारो
वह मारे	वे मारें

वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुये काल ॥

सङ्केतार्थ भूत वा स्वार्थ रीति भूत काल ॥

पुरुष	एकवचन	पुरुष-बहुवचन
	मैं मारता	हम मारते
	तू मारता	तुम मारते
	वह मारता	वे मारते
स्त्री-	मैं मारती	हम मारतीं

स्वार्थ वर्त्तमान काल ॥

मैं मारता हूं	हम मारते हैं
तू मारता है	तुम मारते हो

वह मारता है — वे मारते हैं

स्त्री- मैं मारती हूं — हम मारतीं हैं इ० ॥

स्वार्थ अपूर्ण भूतकाल ॥

मैं मारता था — हम मारते थे

तू मारता था — तुम मारते थे

वह मारता था — वे मारते थे

स्त्री- मैं मारती थी — हम मारतीं थीं

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए काल

कर्मणि वा भावे प्रयोग ॥

स्वार्थ सामान्य भूत काल ॥

पुरुष एकवचन		पुरुष- बहुवचन	
मैंने, तूने, उसने	मारा	हमने, तुमने, उन्होंने	मारा

स्वार्थ वर्त्तमान भूतकाल ॥

मैंने, तूने, उसने	मारा है	हमने, तुमने, उन्होंने	माराहै

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैंने, तूने, उसने	मारा था	हमने, तुमने, उन्होंने	माराथा

आदर पूर्वक आज्ञार्थ ॥

मारिये ..... मारियो ...... मारियेगा ..... इत्यादि ॥

धातु साधित नाम ॥

मारना .. भाववाचक .. मारनेवाला .. मारने हारा .. कर्तृ वाचक

धातु साधित विशेषण ॥

पुं-मारता-मारता-हुआ स्त्री-मारती-मारती-हुई	वर्त्तमानकालबा-	मारा, माराहुआ मारी, मारी हुई	भूतकाल वाचक

धातु साधित अव्यय ॥

मार .... मारकर .... मारके .... मारकरके .... समुच्चयार्थक

मारतेही .... तत्काल बोधक

गिरना अकर्मक धातु ॥

गिर .... शुद्ध धातु

गिरता .... वर्त्तमान कालवाचक धातु साधित विशेषण

गिरा .... भूतकाल वाचक धातुसाधितविशेषण ....

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल भविष्यकाल .... आज्ञार्थवर्त्तमानकाल .. सङ्केतार्थभूतकाल .. .. वर्त्तमानकाल .. .. .. अपूर्णभूतकाल	इस धातु के इन छः कालों के रूप मार धातु के रूपों के सदृश होते हैं ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए काल

कर्त्तरिप्रयोग ॥

स्वार्थ सामान्य भूतकाल		स्वार्थ वर्त्तमान भूतकाल	
पुं-एकवचन	पुं-बहुवचन	पुं-एकवचन	पुं-बहुवचन
मैं गिरा	हम गिरे	मैं गिरा हूं	हम गिरे हैं
तू गिरा	तुम गिरे	तू गिरा है	तुम गिरेहो
वह गिरा	वे गिरे	वह गिरा है	वे गिरे हैं
स्त्री-मैं गिरी	हम गिरीं	स्त्री- मैं गिरी हूं	हम गिरीं हैं

स्वार्थभूत भूतकाल ॥

मैं गिरा था	हम गिरे थे	वह गिरा था	वे गिरे थे
तू गिराथा	तुमगिरे थे		

स्त्री-मैं गिरीथी हम गिरीथीं शेषरूप मारधातु के सदृश होतेहैं ॥

खाना सकर्मक ॥

मुख्यभाग
- खा .. .. शुद्धधातु
- खाता .. वर्त्तमानकाल वाचक धातु साधितविशेषण
- खाया .. भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण

धातु से बने हुये काल ॥

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल—विध्यर्थ वर्त्तमान काल

पुरुष एकवचन	पुरुष बहुवचन
प्र- मैं खाऊं	हम खाएं खावें
द्वि- तू खाए खावे खाय	तुम खाओ खावो
तृ- वह खाए खावे खांय	वे खाएं खावें खांय

स्वार्थ भविष्य काल ॥

मैं खाऊंगा	हम खाएंगे खावेंगे
तू खाएगा खावेगा	तुम खाओगे खावोगे
वह खाएगा खावेगा	वे खाएंगे खावेंगे
स्त्री- मैं खाऊंगी	हम खाएंगी इ० ॥

आज्ञार्थ वर्त्तमान ॥

मैं खाऊं	हम खाएं खावें
तू खा	तुम खाओ खावो
वह खाए खावे	वे खाएं खावें

वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए काल ॥

सङ्केतार्थ भूतकाल स्वार्थरीति भूतकाल ॥

पुरुष एक वचन	पुरुष बहु वचन
मैं खाता	हम खाते
तू खाता	तुम खाते
वह खाता	वे खाते
स्त्री- मैं खाती	हम खातीं इ० ॥

स्वार्थे वर्त्तमान काल ॥

मैं खाता हूं	हम खाते हैं
तू खाता है	तुम खाते हो।
वह खाता है	वे खाते हैं
स्त्री- मैं खाती हूं	हम खातीं हैं इत्यादि ॥

स्वार्थ अपूर्ण भूतकाल ॥

मैं खाता था	हम खाते थे
तू खाता था	तुम खाते थे
वह खाता था	वे खाते थे
स्त्री- मैं खाती थी	हम खातीं थीं इत्यादि ॥

कर्मणि या भावे प्रयोग ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए रूप

स्वार्थ सामान्य भूतकाल ॥

मैंने, तूने, उसने	खाया	हमने, तुमने, उन्होंने	खाया

स्वार्थ वर्त्तमान भूतकाल ॥

मैंने, तूने, उसने	खाया है	हमने, तुमने, उन्होंने	खाया है

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैंने, तूने, उसने	खाया था	हमने, तुमने, उन्होंने	खाया था

आदर पूर्वक आज्ञार्थे ॥

खाइये, खाइयो, खाइयेगा,

धातु साधित नाम ॥

खाना·····भाववाचक, खाने वाला-खानेहारा-कर्तृ वाचक

धातु साधित विशेषण ॥

खाता—खाता हुआ·····वर्त्तमान कालवाचक

खाया—खाया हुआ······ भूतकाल वाचक ··

धातु साधित अव्यय ॥

खा—खाकर—खाके—खा करके·· ···समुच्चयार्थक

खातेही ··············· तत्काल वाचक

सोना अकर्मक ॥

मुख्यभाग:
- सो ····शुद्ध धातु
- सोता ···वर्त्तमान कालवाचकधातु साधित विशेषण
- सोया ··· भूतकाल वाचक

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल··
स्वार्थभविष्यकाल········
आज्ञार्थवर्त्तमानकाल····
सङ्केतार्थभूतकाल·········
स्वार्थवर्त्तमानकाल ······
स्वार्थअपूर्णभूत ···········

} इसधातुकेइनकालोंकेरूप खा धातुके तुल्य

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों से बने हुये काल

कर्त्तरि प्रयोग ॥

स्वार्थ सामान्य भूतकाल ॥

पुरुष एकवचन	पुरुष बहुवचन
मैं सोया	हम सोये
तू सोया	तुम सोये
वह सोया	वे सोये

स्वार्थे वर्त्तमान भूतकाल ॥

पुरुष एक वचन	पुरुष बहुवचन
मैं सोया हूं	हम सोये हैं
तू सोया है	तुम सोये हो
वह सोया है	वे सोये हैं

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैं सोया था	हम सोये थे
तू सोया था	तुम सोये थे
वह सोया था	वे सोये थे

शेष रूप खा धातु के सदृश होते हैं ॥

इसी रीति से हिन्दी भाषा में जो धातु हैं उनके रूप बनालो और छः धातुओं के भूतकाल वाचक विशेषण के रूप और प्रकार से बनते हैं वे नीचे लिखे हैं ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण ॥

धातु	एकवचन		बहुवचन		आदर पूर्वक आज्ञार्थ
	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	
जा	गया	गई	गये-गए	गईं	
कर	किया	की	किये	कीं	कीजिये—कीजियो
मर	मुआ	मुई	मुए	मुईं	
हो	हुआ	हुई	हुए	हुईं	
दे	दिया	दी	दिये	दीं	दीजिये—दीजियो
ले	लिया	ली	लिये	लीं	लीजिये—लीजियो

इनमें से होना जाना मरना अकर्मक हैं और करना देना लेना सकर्मक। होना धातु के रूप लिखे हैं—जाना और मरना इनके रूप गिरना धातु के रूपवत् होते हैं—करना देना लेना इनके रूप सकर्मक धातु के रूपवत् होते हैं- **जा** धातु तो संस्कृत धातु **या** जाना से निकली और **गया**

यह रूप संस्कृत **गम** धातु=जाना से बनाहै; भूतकाल वाचक विशेषण **जाया** की योजना केवल संयुक्त क्रिया पद में होती है; जैसा जाया करता है इत्यादि ॥

संस्कृत धातु कृ करनासे हिन्दी धातु **कर** निकली है और इस धातु के भूतकाल वाचक विशेषण और आदर पूर्वक आज्ञार्थ के रूप **करा** वा **करिये** होते हैं, पर ये रूप प्राय: प्रचार में नहीं आते, इनके स्थान में **की** धातु से बने हुए रूप किया कीजिये क्रमसे आते हैं ॥

मरना संस्कृत धातु **मृ**=मरना से निकली है ॥ **मुआ** यह रूप संस्कृत से प्राकृत भाषा के द्वारा आया है, उसमें **ऋ** के बदले **उ** होता है, **मरा** यह भूत काल वाचक धातु साधित विशेषण केवल संयुक्त क्रिया पद में आता है जैसा मरा चाहता है **भया** यह रूप कभी २ हुआ के स्थान में आता है और संस्कृत **भू** धातु से निकला है ॥

---

२५ पाठ

कर्मवाच्य क्रियापद ॥

प्र० कर्मवाच्य क्रियापदका लक्षण और इसके बनाने की रीतिबतलाइये ?

उ० जो नाम तत्वत: अर्थ में क्रिया का कर्म है जिस पर क्रियाके व्यापार का फल होवे यह जब क्रिया पदका **उद्देश्य**+ हो तब क्रियापद का रूप कर्म वाच्य कहलाता है ॥

कर्मवाच्य क्रियापद हिन्दी में हर जगह नहीं लाते हैं ॥ जहां कर्त्ता ज्ञात न होय वा छिपाहो वहां ऐसे क्रिया पदकी योजना प्राय: करते हैं जैसा, वह मारा गया, देखा जायगा इ० ॥

हिन्दी भाषा में कर्मवाच्य क्रिया पद बनाने की यह रीति है, कि सकर्मक धातुके भूत काल वाचक विशेषण के आगे **जा** धातुके रूप सब काल और अर्थ में जोड़ना; इसभूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणका रूप लिङ्ग वचनानुसार बदलता है; जैसा ॥

+ वाक्य में जिस के विषय कोई बात कही जाय उसे उद्देश्य कहते हैं ॥

मारा जाना ॥

माराजा···आज्ञार्थ द्वितीय पुरुष एक वचन या शुद्ध धातु
माराजाता··वर्त्तमानकाल वाचक धातु साधित विशेषण
मारा गया··भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण

धातुसे बने हुए काल ॥

हेतु हेतु मद्भविष्यकाल—विध्यर्थ वर्त्तमान काल ॥

पुं० एकवचन	पुं० बहुवचन
मैं मारा जाऊं	हम मारे जावें-जांय
तू मारा जावे-जाय	तुम मारे जाओ
वह मारा जावे-जाय	वे मारे जावें-जांय
स्त्री- मैं मारी जाऊं	हम मारीजावें इत्यादि ॥

स्वार्थ भविष्यकाल ॥

मैं मारा जाऊंगा	हम मारे जावेंगे-जाएंगे
तू मारा जावेगा	तुम मारे जाओगे
वह मारा जावेगा	वे मारे जावेंगे-जाएंगे
स्त्री- मैं मारी जाऊंगी	हम मारी जावेंगी इ० ॥

आज्ञार्थ वर्त्तमान काल ॥

मैं मारा जाऊं	हम मारे जावें
तू मारा जा	तुम मारे जाओ
वह मारा जावे	वे मारे जावें
स्त्री- मैं मारी जाऊं	हम मारी जावें

वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषणसे बने हुए रूप

सङ्केतार्थ भूत ॥

मैं, तू, वह } मारा जाता   हम, तुम, वे } मारे जाते

एकवचन	बहुवचन
स्त्री- मैं मारी जाती	हम मारी जातीं

स्वार्थ वर्त्तमान काल ॥

मैं मारा जाता हूं	हम मारे जाते हैं
तू मारा जाता है	तुम मारे जाते हो
वह मारा जाता है	वे मारे जाते हैं
स्त्री- मैं मारी जाती हूं	हम मारी जातीं हैं इ० ॥

स्वार्थ अपूर्ण भूतकाल ॥

मैं		हम	
तू	मारा जाता था	तुम	मारे जाते थे
वह		वे	
स्त्री- मैं मारी जाती थी		हम मारी जातीं थीं इ० ॥	

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए रूप

स्वार्थ सामान्य भूत काल ॥

मैं		हम	
तू	मारा गया	तुम	मारे गये
वह		वे	
स्त्री- मैं मारी गई		हम मारी गईं ॥	

स्वार्थ वर्त्तमान भूतकाल ॥

मैं मारा गया हूं	हम मारे गये हैं
तू मारा गया है	तुम मारे गये हो
वह मारा गया है	वे मारे गये हैं
स्त्री- मैं मारी गई हूं	हम मारी गईं हैं

स्वार्थ भूत काल ॥

मैं		हम	
तू	मारा गया था	तुम	मारे गये थे
वह		वे	

स्त्री- मैं मारी गई थी   हम मारी गई थीं

आदर पूर्वक आज्ञार्थ में—मारे जाइये, मारे जाइयेगा

धातु साधित नाम ॥

भाव वाचक ·· ·· ·· ·· मारा जाना

कर्तृ वाचक ·· ·· ·· ·· ·· मारा जानेवाला - मारा जाने हारा

धातु साधित विशेषण—मारा जाता, मारा जाता हुआ, मारा गया, मारा गया हुआ ॥

धातु साधित अव्यय ॥

मारा जाकर - मारा जाके - मारा जाकरके - समुच्चयार्थक

माराजातेही ·· ·· ·· ·· ·· ·· ·· ·· ·· ·· तत्काल बोधक

---

२६ पाठ

क्रियापद के अप्रसिद्धकाल ॥

प्र० आपने क्रियापद के रूप बहुधा सब अर्थ और कालमें बनाने की रीति बतलाई - पर संशयार्थ क्रियापद के रूप बनाने के नियम नहींकहे सो कहिये ?

उ० अच्छा प्रश्न किया—सङ्केतार्थ के रूप भी और बनते हैं, उनका प्रकार सुनो ॥

संशयार्थ वर्त्तमान वा भविष्य काल ॥

बोलता होवे - होगा इत्यादि ॥

संशयार्थ भूतकाल ॥

बोला होवे - होगा ॥

सङ्केतार्थ वर्त्तमानकाल ॥

मैं बोलता होऊं - होऊंगा	हम बोलते होवें -होवेंगे
तू बोलता होवे - होवेगा	तुमबोलते होओ- होओगे
वह बोलता होवे - होवेगा	वे बोलते होवें - होवेंगे
स्त्री-मैं बोलती होऊं - होऊंगी	हम बोलती होवें -होवेंगी

संभयार्थ भूतकाल ॥

मैं बोला होऊं - होऊंगा | हम बोले होवें - होवेंगे
तू बोला होवे - होवेगा | तुम बोले होओ - होओगे
वह बोला होवे - होवेगा | वे बोले होवें - होवेंगे
स्त्री-मैं बोली होऊं - होऊंगी | हम बोली होवें - होवेंगी

सङ्केतार्थ वर्त्तमानकाल ॥

मैं, तू, वह } बोलता होता | हम, तुम, वे } बोलते होते
स्त्री-मैं बोलती होती | हम बोलतीं होतीं

सङ्केतार्थ भूत ॥

मैं, तू, वह } बोला होता | हम, तुम, वे } बोले होते
स्त्री-मैंबोली होती | हम बोली होतीं इ० ॥

इस प्रकार से सब धातुओं के रूप बनाना ॥

---

२७ पाठ

प्रयोजक क्रिया पद विचार ॥

प्र० यहां तक तो सिद्ध धातु के रूप बनाने की रीति आपने बतला दी वह मैं समझा, अब साधित क्रियापद किस प्रकार से बनते हैं यह मुझे समझाइये ?

उ० हिन्दी भाषा में साधित क्रियापद बहुतसे आते हैं और उनका लक्षण पूर्व्व में किया है अब इन के बनाने के नियम लिखता हूं ॥

१ मुख्य नियम यह है कि मूलधातु को प्रयोजक करना होतो धातु के अन्त्य वर्ण को आ मिलाते हैं, प्रयोजक वा सकर्मक धातु के,

और भी द्विकर्मक वा प्रयोजक करना हो तो मूलधातु के अंत्यवर्ण के आगे वा जोड़ देते हैं; जैसा ॥

मूलधातु, सकर्मक वा	प्रयोजक	द्वितीय प्रयोजक
जल	जलाना	जलवाना
पढ़	पढ़ाना	पढ़वाना
बन	बनाना	बनवाना
बज	बजाना	बजवाना
गिर	गिराना	गिरवाना
छिप	छिपाना	छिपवाना
मिल	मिलाना	मिलवाना
सुन	सुनाना	सुनवाना
पैर	पैराना	पैरवाना
दौड़	दौड़ाना	दौड़वाना
समझ	समझाना	समझवाना
सरक	सरकाना	सरकवाना

२ द्व्यक्षर धातुओं के आद्य अक्षर में दीर्घ स्वर होवे तो उसको ह्रस्व कर आ वा वा जोड़ देते हैं, एकाक्षर धातु का स्वरदीर्घ हो तो उसको भी ह्रस्व करके आगे ला वा लवा प्रत्यय जोड़ देते हैं, ह्रस्व करने से आ को अ ई वा ए को इ ऊ वा ओ को उ आदेश क्रम से होते हैं; जैसा

मूल वा सिद्धधातु,	प्रयोजकधातु,	द्वितीयप्रयोजक धातु,
जाग	जगाना	जगवाना
भीग	भिगाना	भिगवाना
भूल	भुलाना	भुलवाना
लेट	लिटाना	लिटवाना
बोल	बुलाना	बुलवाना
पी	पिलाना	पिलवाना
दे	दिलाना	दिलवाना

धो	धुलाना	धुलवाना

३ कई एक अकर्मक धातुओं के आद्य अक्षर में ह्रस्व स्वर होवे तो उसको दीर्घ करदेते हैं, पर यह नियम प्रयोजक से प्रयोजक करना हो तो बे काम है, प्रथम नियम से वा साथ जोड़ाजाता है; जैसा ॥

कटना	काटना	कटवाना
पलना	पालना	पलवाना
बंधना	बांधना	बंधवाना
खुलना	खोलना	खुलवाना
मरना	मारना	मरवाना

४ कई एक धातुओं को आद्य स्वरको गुण आदेशकर उनमें, ट, क, ह, होवें तो उनके स्थान में, ड, च, ख, आदेश क्रम से होते हैं, द्वितीय प्रयोजक तो प्रथम नियम से होता है; जैसा ॥

बिकना	बेचना	बिकवाना	बिचवाना
टूटना	तोड़ना	तुड़ाना	तुड़वाना
फटना	फाड़ना	फड़ाना	फड़वाना
छूटना	छोड़ना	छुड़ाना	छुड़वाना
फूटना	फोड़ना	फुड़ाना	फुड़वाना
रहना	रखना	रखाना	रखवाना

५ कई एक धातुओं के प्रयोजक के दो दो रूप होते हैं; जैसा

सीखना सिखाना सिखलाना सिखवाना
बैठना बिठाना बैठाना बिठवाना बैठलाना बैठालना बिठालना
देखना दिखाना दिखलाना दिखवाना
रखना रखाना रखवाना इत्यादि ॥

नाम धातु ॥

कई नाम वा विशेषण के अंत्यवर्ण का लोपकर इया प्रत्यय जोड़ देते हैं, और आद्यस्वर ह्रस्व होता है; जैसा पानी-पनियाना- आधा-अधियाना ऐसी धातुओं को नाम धातु कहते हैं ॥

२८ पाठ

संयुक्त क्रियापद विचार ॥

प्र० संयुक्त क्रियापद किसे कहते हैं ?

उ० संयुक्त क्रियापद उस क्रियापद को कहते हैं जो अर्थ बिशेष में प्रधान धातु और सहाय धातुसे बनता है; उसके पांच प्रकारहैं १ गौरवार्थेक २ शक्त्यर्थ बोधक ३ समाप्ति वाचक ४ पौनः पुन्य बोधक ५ आशंसार्थेक इत्यादि ॥

१ गौरवार्थेक क्रियापद उसे कहते हैं जो शुद्ध क्रियापद से अर्थ की विशेषता बताता है और वह प्रधान धातु के आगे डाल दे जा इत्यादि धातुओं के रूप लगाने से बनता है; जैसा मारडालता है, रख देता है, खा जाता हूं, यहां यह स्पष्ट है कि मारता है इससे मारडालता है इसमें अर्थ गौरव है; इन क्रियापदों का यह धर्महै कि अप्रधान धातुका अर्थ तत्वतः कुछ नहीं परन्तु उसके योगसे प्रधान धातुका अर्थ दृढ़ होता है; छोड़देना, फेंकदेना, गिरादेना, काटडालना, तोड़डालना, होजाना, मरजाना ॥

२ शक्त्यर्थ बोधक वा सम्भावनार्थ क्रियापद काम कर सक्ता है ॥

३ समाप्ति वाचक वह कर चुका, कह चुकना, मार चुकना, लेचुकना, लाचुकना इत्यादि ॥

४ पौनः पुन्य बोधक क्रियापद मारा करताहै, मारा करतेहैं, आया करना, बोला करना, किया करना इत्यादि ॥

५ आशंसार्थेक क्रियापद बोला चाहता है, किया चाहता है, पढ़ा चाहना, देखा चाहना; यह क्रियापद कभी २ आसन्न भावीक्रिया बतलाता है जैसा मरा चाहता है, गिरा चाहता है इत्यादि ॥

प्र० संयुक्त क्रियापद के मुख्यभेद और उनका अर्थ मैं समझा, उसके और कोई भेद हो तो कहिये ?

उ० कभी २ नाम वा विशेषणके आगे धातु जोड़ने से संयुक्त क्रियापदवत् रूप बन जाता है; जैसा मेरे अपराध को क्षमाकर ॥ सातत्य

वाचक क्रियापद वह करता रहता है, वे करते रहतेहैं, मारती जाती है, मारती जाती हैं, लिखता जाना, बोलता रहना, इत्यादि ॥

स्थितिवाचक क्रियापद, गाने आताहै, रोते दौड़ना, हंसते चलना इ०॥

धातु साधित भाववाचक नाम के समान्य रूप से दे और पा धातुके रूप जोड़ने से अनुमति और लग धातु के रूपोंकी योजना करनेसे प्रारम्भ समझा जाता है; जैसा अनुमति देना-वह मुझे जाने देताहै, उसको काम करने दो ॥

अनुमति पाना-वह लिखने पावे, जाने पाता है॥

प्रारम्भः ·····वह काम करने लगा, पढ़नेलगी ॥

पर ऐसी जगह में करने का व्याकरन से पदच्छेद करने में ऐसा किया जावे तोभी ठीक है ॥ कभी२ नाम और विशेषण से क्रियापद की योजना करने से नाम साधित क्रियापद होताहै जैसा ग़ोता खाना - ग़ोता मारना, जमा करना वा होना- खड़ा करना इत्यादि ॥ गाड़ी को खड़ी कर ऐसे स्थान में खड़ीकर इतना क्रियापद जानो-कई क्रियापद पुनरुक्ति वाचक होतेहैं जैसा बोलता चालता है, बोल चालकर, समझा बुझाकर इत्यादि ॥

---

२९ पाठ

अव्यय विचार ॥

प्र० अव्यय किसे कहते हैं ?

उ० जिस शब्द को विभक्त्या दिकार्य नहीं होताहै, उसे अविभक्तिक अथवा अव्यय कहते हैं; इसका रूप सदा वैसाही बना रहताहै अर्थात् कुछ भेद नहीं होता और इनका वाक्य रचना में बहुत प्रयोजन पड़ता है; जैसा तब, फिर, यहां इ० ॥

प्र० अव्ययों के भेद कौन २ हैं सो कहिये ?

उ० अव्ययों के चार भेद हैं, क्रिया विशेषण, उभयान्वयी, शब्दयोगी, उद्गारवाची, अथवा विस्मयादि बोधक ॥

क्रिया विशेषण अव्यय ॥

प्र० क्रिया विशेषण अव्यय किसे कहते हैं और उसके के प्रकार हैं ?

उ० जिस शब्द से क्रिया के गुण वा प्रकार का बोध होवे, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसा धीरे चलता है, बहुत बकता है इत्यादि ॥

सामान्यत: जितने शब्द विशेषण हैं वा विशेषण से होवें वे सब क्रिया विशेषण होते हैं; हिन्दी भाषा में जो क्रिया विशेषण वारम्वार आते हैं वे पांच सर्वनामों से बने हैं, उनका एक कोष्ठक आगे दिया है यह, वह, कौन, जौन, तौन इन पांच सर्वनामों से स्थल वाचक, कालवाचक, प्रकारार्थक, परिमाण वाचक, क्रिया विशेषण अव्यय, बनते हैं ॥

	यह	वह	कौन	जौन	तौन	
१	अब	०	कब	जब	तब	कालवाचक
	०	०	कद	जद	तद	
२	यहां	वहां	कहां	जहां	तहां	स्थलवाचक
३	इधर	उधर	किधर	जिधर	तिधर	
४	यों	वों	क्यों	ज्यों	त्यों	प्रकारार्थ वा गुणवाचक
५	ऐसा	वैसा	कैसा	जैसा	तैसा	
६	इत्ता	उत्ता	कित्ता	जित्ता	तित्ता	परिमाणवाचक
७	इतना	उतना	कितना	जितना	तितना	

निश्चय वाचक अथवा दृढ़ता बोधक क्रिया विशेषण अभी, कभी, तभी, कधी, इत्यादि हैं ॥

इसी प्रकार से दूसरे वर्ग के क्रिया विशेषणोंके अंत्य **आं** को **ईं** आदेश करते हैं और चौथे वर्ग के क्रिया विशेषणोंके अंत्य वर्णके आगे **ही** मिला देते हैं; जैसा यहीं-कहीं-वोंहीं-योंहीं इत्यादि ॥ इन अव्ययों के आगे **लों तक तलक** इत्यादि प्रत्ययों का योग करने से मर्यादा बोधित होती है; जैसा अबलों-अबतक-अबतलक-जबतक- जबतलक इत्यादि ॥ इनमें से कभी २ द्विरुक्ति और कभी २ एक वा दो का योग करने से क्रिया

विशेषण बनजाते हैं जैसा कभी २ जहां तहां, जहां कहीं, जबकब, जब कभी इत्यादि ॥

कई एक क्रिया विशेषणों के साथ निषेधार्थक न की योजना करने से अनिश्चितता वा सर्व व्यापकता के अर्थका बोध होता है; जैसा बरस में मेरे हाथ में कभी न कभी आवेगा, कहीं न कहीं, जब तब इत्यादि ॥

क्रिया विशेषण अव्ययों के और उदाहरण ॥

प्रकारार्थक—अकस्मात्- अचानक- अर्थात्-केवल- परस्पर-ठीक-तत्वतः विशेषतः शीघ्र-वृथा-निपट-यथार्थ-सच-अवश्य-निःसन्देह-साधारणरूपसे-निःसंशय इत्यादि ॥

स्थलवाचक—आस-पास-आगे-पीछे-निकट-नज़दीक-पार-सर्वत्र-परे इ० ॥

काल वाचक—आज-कल-परसों-नरसों-हररोज़-प्रतिदिन-सदा-बारम्बार तुरन्त-एकदा-फिर-इत्यादि ॥

प्र० कौन २ शब्द वा शब्द समुच्चय अर्थ में क्रिया विशेषण होते हैं और किस रूप से वाक्य में आते हैं ?

उ० कई गुण विशेषण और सर्वनामका प्रथमान्त रूप वा सामान्य रूप क्रिया विशेषण होता है जैसा वह सुन्दरलिखता है अच्छा बोलता है, सीधे चलो, धीरे बोलो, वह अपना काम कैसा करता है इत्यादि ॥

धातु को कर करके इत्यादि प्रत्यय जोडनेसे जो रूप बनता है उसकी कभी २ क्रिया विशेषणवत् योजना करते हैं; जैसा उसने हँसकर कहा, यहां हंसकर क्रिया विशेषणहै ॥ पंचम्यन्त नामका अर्थ कई जगह क्रिया विशेषणवत् होता है; जैसा जो मनुष्य नीति से चलता है वह सुख पावेगा, दिलसे काम करोगे तो प्रयत्न सफल होगा, किस तरह या किस तरह से काम करोगे इत्यादि ॥

क्रिया विशेषण के साथ कभी २ विभक्ति प्रत्ययों का योग करदेते हैं; जैसा यहां का रहने वाला, आजका काम, यहां से जाओ, कहां को जाते हो इत्यादि ॥ ऐसे स्थल में षष्ठी प्रत्ययान्त शब्दविशेषणवत् और शेष शब्द क्रिया विशेषणवत् मानना ॥

उभयान्वयी अव्यय विचार ॥ +

प्र० उभयान्वयी अव्यय का क्या लक्षण है और उसके के प्रकार हैं ?

उ० जिस अव्यय का सम्बन्ध दो शब्दों के अथवा दो वाक्यों के अन्वय की तरफ होता है उसे उभयान्वयी अव्यय कहते हैं; जैसा और, पर, इत्यादि ॥ राम और कृष्ण आये, इस वाक्य में **और** शब्द से राम और कृष्ण इनका अन्वय आगमन क्रिया में है अर्थात् राम आया और कृष्ण भी आया॥

जो उभयान्वयी अव्यय बारम्बार बोलने लिखने में आते हैं, उनका कुछ परिगणन ॥

समुच्चय वाचक ...... और - भी

कारण वाचक ...... क्योंकि

पक्षान्तर बोधक .. पर-परन्तु- किन्तु - वा-या-अथवा- नहींतो- चाहें

सङ्केतार्थक .... यदि-जो-तो-तथापि- तोभी

स्वरूप बोधक ...... कि

शब्द योगी अव्यय ॥

प्र० शब्दयोगी अव्यय किसे कहते हैं और उनकी योजना - किस रीति से होती है ?

उ० जिस अव्यय से स्थल और काल का बोध होता है और जिस की योजना नाम और सर्वनाम के साथ होनेसे उनका षष्ठ्यन्त सामान्य रूप प्राय: होता है, उसे शब्द योगी अव्यय कहते हैं ॥ हिन्दी भाषा में शब्द योगी अव्यय तो केवल सप्तमी विभक्त्यन्त नाम हैं परन्तु विभक्ति प्रत्यय लुप्त हैं, इस लिये जब इन अव्ययों की योजना की जावे तब पूर्वनाम को और सर्वनाम षष्ठी विभक्ति का के प्रत्यय लगाते हैं और उसके आगे अव्ययों को बोलते; पर बिन वा बिना यह शब्द योगी अव्यय बहुधा नाम के पूर्व आता है; जैसा, मर्द के आगे, लड़के के पास, उसके; समक्ष, बिना स्याही के काम नहीं चलता है ॥

+ उभयान्वयीविचार को शब्द योगी अव्यय विचार के पीछे पढ़ो ॥

शब्द योगी अव्ययों की गणना ॥

आगे - अन्दर - भीतर - ऊपर - बाहर - बराबर - बदल - बदले- समीप - बीच - पास - पीछे - तले - सामने - गिर्द - नज़दीक -नीचे- पार - बाद - बिन - बिना - साथ - लिये - मारे-समक्ष ॥

इनमें से कोई २ शब्दयोगी अव्यय सर्वनामों के साथ आवें तो उनका विभक्ति सामान्य रूप होता है, षष्ठी का प्रत्यय नहीं जोड़ते हैं; जैसा जिसलिये, उसबिना; किसलिये इत्यादि ॥

सहित- समेत-सुधा इत्यादि शब्दयोगी अव्यय नाम के साथ आवेंतो नाम से षष्ठी विभक्ति नहीं होती; जैसा बाल गोपाल समेत कृष्ण जी आये, गोपी सहित इत्यादि ॥

शब्द योगी अव्यय नाम वा सर्वनाम के साथ न आवें तो वे क्रिया विशेषण अव्यय होते हैं ॥

केवल प्रयोगी विस्मयादि बोधक अव्यय ॥

प्र० केवल प्रयोगी अव्यय क्या बतलाता है ?

उ० जिन अव्ययों से कहने वाले का दुःख हर्ष धिक्कार धन्यता इत्यादि मन के भाव समझे जाते हैं, उन्हें केवलप्रयोगीअव्यय कहतेहैंजैसा॥

दुःख और धिक्कार बोधक—बापरे, हाय हाय, अरे रे, ऊः, हाहा, धिक्, दूर दूर, चुप, छिः

हर्ष और धन्यता बोधक—जय जय, शाबाश, वाहवा, धन्य धन्य, वा जी वा, सम्मुखी करण बोधक—अय, ओ, अरे, हे, अबे ॥

साधित शब्द विचार ॥

---

३० पाठ

धातु साधित शब्द ॥

पूर्व में मूल प्रकृति को और साधित शब्दों को विवक्षित रूप बनाने के लिये जो विभक्ति प्रत्ययादि कार्य विशेष करना अवश्य है, उसका वर्णन

क्रिया अब मूल सिद्ध शब्दों से जो साधित शब्द बनते हैं उनका व्युत्पत्ति प्रकार लिखता हूं ॥

प्र० साधित शब्द किसे कहते हैं ?

उ० जो शब्द मूल शब्द से प्रत्ययादि लगाके बनते हैं, उनको साधित शब्द कहते हैं ॥

प्र० साधित शब्दों के कितने भेद हैं ?

उ० दो; एक, धातु से बने हुए शब्द इनको संस्कृत में कृदन्तकहते हैं; दूसरा, धातु से अन्य जो शब्द उनसे बने हुए शब्द इनको संस्कृत में तद्धित कहते हैं ॥

प्र० धातु साधित शब्दों के के प्रकार हैं, और वे शब्द किस रीति से बनते हैं यह मुझे समझाइये ?

उ० धातु साधित शब्द तीन प्रकारके हैं नाम, विशेषण, और अव्यय, ये धातु के आगे प्रत्ययों की योजना करने से बनजाते हैं ॥

धातु साधित नाम ॥

धातुके आगे कौन २ प्रत्यय जोड़ने से धातु साधित नाम बनते हैं ?

उ० ना—धातु के आगे यह प्रत्यय लगाने से और कभी २ केवल धातु का शुद्धरूप भाव वाचक नाम होता है; जैसा सोना, करना, बोलना, चाह, बोल इ० ॥

वाला, हारा—भाववाचक नाम के अंत्य **ना** को **ने** में बदल कर आगे इन प्रत्ययों को जोड़ने से कर्तृवाचक होता है; जैसा बोलने वाला, बोलने हारा, करने वाला, करने हारा इत्यादि ॥

अक, वैया—कई धातुओं को ये प्रत्यय मिलाकर कर्तृवाचक बनाते हैं; जैसा पाल, पालक; पूज, पूजक; जीत, जितवैया; जल, जलवैया इत्यादि ॥

कई धातुओं से भाववाचक आगे लिखेहुए प्रत्यय बहुल करके+ लगाने से होते हैं ॥

+ कहीं होना और कहीं न होना इसको बहुल कहते हैं ॥

धातु	प्रत्यय	साधित शब्द
कह	आ	कहा
बो	आई	बोआई
मिल	आप	मिलाप
जल	न	जलन
पी	आस	प्यास
भुला	वा	भुलावा
सजा	आवट	सजावट
घबरा	आहट	घबराहट ॥

साधनार्थक नाम ॥

कतर—नी—कतरनी; झाड़— ऊ—झाड़ू ; बेल— अन—बेलन इ० ॥

धातु साधित विशेषण ॥

प्र० धातु साधित विशेषण किसरीति से बनता है ?

उ० वर्त्तमान और भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों का वर्णन क्रियापद प्रकरण में किया है; उन धातु साधित विशेषणों की वाक्य में योजना करना होवे, तो उनके आगे हो धातु के भूतकाल वाचक विशेषण के रूपों का योग लिङ्ग वचनानुसार करते हैं ॥

पुंल्लिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बोलताहुआ	बोलतेहुए	बोलतीहुई	बोलतीहुईं
बोलाहुआ	बोलेहुए	बोलीहुई	बोलीहुईं

सकर्मक धातु से बनाहुआ वर्त्तमान काल वाचक विशेषण कर्तृवाचक होता है; और भूतकाल वाचक विशेषण कर्म वाचक होता है, जैसा करता हुआ मनुष्य, किया हुआ काम इ० ॥

अकर्मक धातु से बनेहुए, वर्त्तमान काल वाचक और भूतकाल वाचक विशेषण सदा कर्तृवाचक होते हैं; जैसा जाता हुआ आदमी, गया हुआ आदमी इत्यादि ॥

धातु साधित अव्यय ॥

प्र० धातु साधित अव्यय किसरीति से बनते हैं ?

उ० शुद्धधातु वा उस से कर, के कर के कर कर इत्यादि प्रत्यय जोड़ने से भूतकाल वाचक अव्यय होता है जैसा बोल बोलकर, बोलकर के, बोल के इत्यादि ॥

---

२१ पाठ

धात्वन्य शब्द साधित—साधित नाम ॥

प्र० धातुओं से अन्य जो शब्द उन से और शब्द कैसे बनते हैं यह बतलाइये ?

उ० वान-मान-ई-नाम को ये प्रत्यय मिलाकर स्वामि वाचक शब्द होता है अर्थात् नाम बोधित वस्तु उस प्राणी के पास है; **ई** प्रत्यय अंत्य स्वरको आदेश होता है; जैसा धनवान, बुद्धिमान, पापी इत्यादि ॥

वाला—नाम को यह प्रत्यय जोड़ने से कर्तृ वाचक वा स्वामि वाचक होता है, आकारान्त पुंल्लिङ्ग नाम के अंत्य **आ** को **ए** आदेश कर प्रत्यय जोड़ा जाता है; जैसा घोड़े वाला, बैलवाला, धनवाला इ० ॥

पूर्वोक्त अर्थमें कई एक नामों से और भी प्रत्यय बहुल करके होते हैं; जैसा ॥

नाम	प्रत्यय	सिद्धनाम	नाम	प्रत्यय	सिद्धनाम
राह	वर	राहवर	नाल	बन्द	नालबन्द
मशाल	ची	मशालची	ज़मीन	दार	ज़मींदार
लड़का	पन	लड़कपन			

नाम	प्रत्यय	सिद्धशब्द	नाम	प्रत्यय	सिद्धशब्द
लोहा	आर	लोहार	उमेद	वार	उमेदवार
पानी	हारी	पनहारी			
घड़ि	याल	घड़ियाल			

इसरीतिसे और भी जानो ॥

भाव वाचक ॥

विशेषणों से भाव वाचक, करना होतो ये प्रत्यय लगाने से होते हैं ॥

विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक	विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक
गरम	ई	गरमी	कम	ती	कमती
बूढ़ा	पा	बुढ़ापा	भला	पन	भलापन
मीठा	स	मिठास	बुरा	ई	बुराई
कड़वा	हट	कड़वाहट	लघु	त्व, ता,	लघुत्व, लघुता
				संस्कृतमें त्व ता होते हैं	
चतुर	आई	चतुराई		इत्यादि और भी जाना ॥	

कहीं २ य प्रत्यय होता है वहां आद्य स्वर को वृद्धि और अंत्य स्वरका लोप करके जो अंत्य हल् रहा उसे य में जोड़ते हैं, जैसा उदार य औदार्य कृपण य कार्पण्य-सुन्दर-य-सौन्दर्य, इत्यादि ॥

न्यून वाचक ॥

आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द के अन्त आ को ई आदेश करने से न्यून वाचक होता है, जैसा, रस्सा, रस्सी; लोटा, लोटी; डोला, डोली; छुरा, छुरी इ० ॥

शब्द	प्रत्यय	साधितशब्द
बेटी	इया	बिटिया
बाग़	ईचा	बग़ीचा
तोप	अक	तुपक

साधित विशेषण ॥

नाम से विशेषण बनाने होवें तो आगे लिखे हुए प्रत्यय जोड़ने से हो जाते हैं; जैसा ॥

नाम	प्रत्यय	साधितविशेषण	नाम	प्रत्यय	सा०वि०
भूख	आ	भूखा	मोह-धर्म-	अक-इक-	मोहक-धार्मिक
बल	ई	बली	दुःख	इत	दुःखित
बल	इष्ट	बलिष्ट	रङ्ग	ईला	रङ्गीला

घर	ऊ	घरू		पच	गुना	पचगुना
सागर	वाला	सागरवाला		नाम	वर	नामवर
धन	वन्त	धनवन्त		दया	वान	दयावान
				कृपा-दया	लु-	कृपालु, दयालु

---

३२ पाठ

उपसर्ग विचार ॥

प्र० जिस भांति से धातु वा अन्य शब्द के आगे प्रत्ययों की योजना होने से साधित शब्द बनते हैं वैसे शब्द के पूर्व अक्षर वा अक्षर समुच्चय जोड़ने से साधित शब्द होते हैं वा नहीं ?

उ० ठीक प्रश्न क्रिया धातु वा अन्य शब्द के पूर्व अर्थ रहित एक वर्ण वा वर्ण समुच्चय जोड़ा जाता है, अन्य शब्दके योगसे वे सार्थक होतेहैं, इनको संस्कृत में उपसर्ग कहतेहैं, उपसर्ग के योगसे भिन्न २ अर्थ होते हैं ॥

अ—निषेधार्थक, जैसा अपूर्व, असत्य, अमृत इ० ॥ शब्दके आदिमें स्वर हो वे तो अन् होता है; जैसा अनादि, अनायास, अनिष्ठ इ० ॥

अप—वियोगार्थक, अपराध-अपकीर्त्ति इ० ॥

अति—बहुत, दूर अतिदुष्ट, अति कृपण इ० ॥

अधि—अधिक, ऊपर, अधिपति, अधिकार इ० ॥

अनु—पीछे, समान, अनुयायी, अनुसार, अनुरूप इ० ॥

अन्त—भीतर; अन्तर्गत इ० ॥

अभि—तरफ़; अभिप्राय, अभिलाष इ० ॥

अव—नीचे, वियोग, दूर; अवगुण, अवतार, अवज्ञा इ० ॥

आ—प्रति, उलटा, मर्याद, अवधि, आराम, आगमन, आदान, आमूल इ० ॥

उत्—ऊपर, उत्पन्न, उत्कर्ष इ० ॥

उप—निकट, सदृश; उपगुरु, उपवन इ० ॥

कु—ख़राब, कुत्सित; कुमार्ग, कुपुत्र इ० ॥

दुस्-दुर्—कठिन, खराब; दुराचार, दुर्घट, दुष्कर्म इ० ॥

नि——नीचे, निकृष्ट, निपात इ० ॥
निर्——बाहर, निषेध; निरपराध, निराकार इ० ॥
परा——पीछे, पराजय; पराभव इ० ॥
परि——आसपास; परिपूर्ण; परिभ्रमण इ० ॥
प्रति——विरुद्ध, उलटा; प्रत्युत्तर, प्रतिस्पर्धी इ० ॥
स-सह——सकाम, सलज्ज इ० ॥
वि——वियोग; विधवा, विजातीय इ० ॥
सु-सं——अच्छा; सुपुत्र, सुगम, सुमार्ग, सुलभ, सम्मान, सङ्गति इ० ॥

---

२३ पाठ

सामासिक शब्द विचार ॥

प्र० सामासिक शब्द किसे कहते हैं ?

उ० दो अथवा अधिक शब्द मिलकर जो एक शब्द बनता है, उसे सामासिक शब्द कहते हैं; जैसा देवाज्ञा, मा बाप, गिल्लीदण्डा, सेलापगड़ी, इत्यादि ॥ यहां गिल्ली और दण्डा ये दो शब्द मिलकर गिल्लीदण्डा यह शब्द हुआ है, इसीतरह से और भी जानो ॥

इन शब्दों का आपस में जो सम्बन्ध है, उसे समास कहते हैं, जैसा गिल्लीदण्डा यह द्वंद्व समास है; समास से जो बना हुआ शब्द है उसे सामासिक शब्द कहतेहैं, और जिससे समासका अर्थ समझा जावे उसवाक्य को विग्रह कहते हैं; जैसा देवाज्ञा, देव की जो आज्ञा सो देवाज्ञा ॥

प्र० समास कितने प्रकार के हैं ?

उ० समास छः प्रकार के हैं; **द्वंद्व तत्पुरुष कर्मधारय द्विगु बहुव्रीहि और अव्ययी** भाव ॥

द्वंद्व समास ॥

प्र० द्वंद्व समास किसे कहते हैं ?

उ० दो अथवा अधिक शब्दों का योग होकर बीचके **और** शब्द का लोप होवे, उसे द्वंद्व जानो; इस समास में उत्तर शब्द जो लिङ्गवही

सामासिक शब्द का लिङ्ग बना रहता है, राम कृष्ण, मा बाप, इनको पुल्लिङ्ग जानो; यहां राम और कृष्ण मां और बाप, यह विग्रह है ॥

हिन्दी भाषा में द्वंद्व का और भी एक प्रकार है उसे समाहार द्वंद्व कहते हैं, दो शब्दों के योग से तदन्तर्गत का समावेश होता है, जैसा हाथ पांव टूटे, यहां हाथ और पांव के बीच में जो अवयव हैं उनका भी संग्रह होता है, इसीतरह से सेठसाहूकार, दालरोटी इत्यादि जानो ॥

तत्पुरुष समास ॥

प्र० तत्पुरुष समास किसे कहते हैं और उसके कै प्रकार हैं ?

उ० तत्पुरुष समास उसे कहते हैं कि जिसमें उत्तर पद प्रधान हो और उसकी तरफ़ पूर्व शब्द की विभक्ति का सम्बन्ध होकर विभक्ति का लोपहो इसमें द्वितीयादि विभक्तियों के योग से छः प्रकार होते हैं, जैसा

विभक्तिकेतत्पुरुष	विग्रहवाक्य	सिद्धसामासिकशब्द	विभक्तिलोप
२ द्वितीयातत्पुरुष	द्विजकोताड़न	द्विजताड़न	द्वितीयाकालोप
३ तृ- त-	भक्ति से वश्य	भक्तिवश्य	तृ-लो-
४ च- त-	यज्ञकेलियेस्तम्भ	यज्ञस्तम्भ	च-लो-
५ पं- त-	पदसेच्युत	पदच्युत	पं- लो-
६ ष- त-	देवकाभक्त	देवभक्त	ष- लो-
७ स- त-	शास्त्रमेंनिपुण	शास्त्रनिपुण	स- लो-

जब प्रौढ़ भाषा में सर्वनाम का समास होता है, तब उसका रूप संस्कृत के नियम से होजाता है जैसा मेरा जन्म, मज्जन्म; तेरा भाग्य, त्वद्भाग्य; मेरा वस्त्र, मद्वस्त्र; तेरागुण, त्वद्गुण; यहां मैं तू के मत त्वत् संस्कृत के अनुसार रूप होते हैं इसी तरह से और भी जानो ॥

हिन्दी भाषा में सर्वनामकेरूप संस्कृत के रूपवत् समासमें होते हैं ॥

हिन्दी में सर्वनाम के रूप	संस्कृतमें	सामासिक रूप
वह-वे	तत्-चरित्र	तच्चरित्र, तद्गुन
मैं हम	मत्-भाग्य	मद्भाग्य, अस्मद्भाग्य
	अस्मत्-	

तू तुम ... त्वत्-गृहं ... त्वद्गृहं, युष्मद्गृहं युष्मंत्

यह ये ... एतत्-देशीय ... एतद्देशीय

प्र० कर्म धारय समास का लक्षण बतलाइये ?

उ० जहां वक्ता की इच्छा से दोनों शब्दों का भाव तुल्य हो अथवा दोनों का उपमान उपमेय भाव सम्बन्ध होवे अगर विशेष्य विशेषण भाव होवे तो उस समास को कर्म धारय जानो, जैसा ॥

भक्तिमार्ग......भक्तिवहीमार्ग ......भक्तिरूपीमार्ग

चन्द्रमुख चन्द्रवत्मुख उपमान वाची वत का लोप हुआ

नीलकमल नीलऐसा जो कमल विशेष्य विशेषण भाव समास

द्विगु समास ॥

प्र० द्विगु समास किसे कहते हैं ?

उ० जहां पूर्व पद संख्यावाची होकर, पूर्वोत्तरपदों से समास किया जाताहै उसे द्विगु समास कहतेहैं, और यह समास बहुधा समाहार अर्थमें आता है; जैसा अष्टाध्यायी, आठ अध्यायों का समूह उसे अष्टाध्यायी कहते हैं, इसी तरह से चतुर्युग, त्रैलोक्य इत्यादि जानो ॥

बहुब्रीहि समास ॥

प्र० बहुब्रीहि समास किसे कहते हैं ?

उ० जहां दो अथवा अधिक शब्दों के योग से अन्य पदार्थ का बोध होता है, उसे बहुब्रीहि जानो; जैसा चक्रपाणि चक्र है पाणि में जिसके अर्थात् विष्णु का बोध होता है; इसी तरह से चतुर्भुज (विष्णु) दशमुख, (रावण) जानो ॥ ये बहु ब्रीहि समास बने हुए शब्द विशेषण होते हैं, और इनका लिङ्ग वचन विशेष्य के अनुसार होता है ॥ यह समास द्वितीयादि छः विभक्तियों में होता है, परंतु हिन्दी में बहुधा तृतीया, षष्ठी, सप्तमी इन विभक्तियों के उदाहरण आते हैं; जैसा जित क्रोध, जीता है क्रोध जिसने, दीर्घ बाहु, दीर्घ अर्थात् बड़े हैं बाहु जिसके,

बहु धनिका नगरी, बहुत हैं धनिक जिस नगरी में, इत्यादि जानो॥

अव्ययी भाव समास॥

प्र० अव्ययी भाव समास किसे कहते हैं?

उ० जिस में हर, प्रति इत्यादि अव्ययों के साथ दूसरे शब्द से समास होता है, उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं; जैसा हर घड़ी, प्रति दिन इत्यादि, और ये शब्द क्रिया विशेषण होते हैं॥

---

१ पाठ

वाक्य का लक्षण रूप और पृथक्करण॥

वाक्य विचार॥

प्र० वाक्य विचार में किस का वर्णन किया जाता है?

उ० शब्दों की योजना अर्थात् किस स्थल में कौन शब्द किस रीति से रखना चाहिये और उनका परस्पर सम्बन्ध इत्यादिकों का विचार किया जाता है॥

प्र० वाक्य किसे कहते हैं?

उ० शब्दों की सुसंबद्ध व्यवस्था जो बात पूरी करे उसे वाक्य कहते हैं; जैसा गोबिन्द सोता है, धीमर मछली मारता है॥

प्र० वाक्य के कौन २ रूप होते हैं?

उ० वाक्य के पांच प्रकार के रूप होते हैं; कथनात्मक, प्रश्नार्थक+, आज्ञार्थक, विस्मयादि बोधक, इच्छा प्रबोधक; जैसा वह घर को गया, यहां उसका उद्देश्य करके घरका जाना कथन है; तू क्या करता है, यह प्रश्नार्थक है; तू हाट को जा, यह आज्ञार्थक; वाः क्या समयोचित उत्तर दिया, विस्मयादि बोधक; ईश्वर तुम्हें सुखी रक्खे, यह इच्छा प्रबोधक है॥

प्र० वाक्य में कौन २ शब्द अवश्य हैं?

+ कथनात्मक और प्रश्नार्थक वाक्यों की रचना कभी २ एकसी ही होती है॥ निर्णय उसका पूर्वा पर सम्बन्ध से होता है जैसा तुम आओगे यहां क्या लग सके तो प्रश्न होगा पर दूसरा कोई वाक्य जोड़ा जाय और क्या न लग सके तो कथनात्मक होगा॥ जैसा तुम आओगे तो मेरा सन्देशाभी लेजाओ॥

७० वाक्य में **उद्देश्य** और **विधेय** अवश्य हैं, जिस के विषय कोई बात कही जाय उसे उद्देश्य कहते हैं; और उद्देश्य के विषय में जो बात कही जाय उसे विधेय कहते हैं; जैसा वह आया, इस वाक्य में **वह** उद्देश्य और **आया** विधेय है, इस से स्पष्ट है कि प्रत्येक वाक्य में कम से कम नाम वा नाम समान दूसरा शब्द और क्रियापद ये दो चाहिये, सकर्मक क्रियापद होवे तो कर्म अवश्य चाहिये, यह वाक्य की केवल मूल स्थिति समझाई; उद्देश्य और विधेय को बढ़ाना होतो दोनों के साथ गुण बोधक शब्दों का योग करना चाहिये इस प्रकार से वाक्य के चार भाग हुए दो प्रधान और दो अप्रधान ॥

प्रधान		अप्रधान	
उद्देश्य	विधेय	उद्देश्य गुणवाचक	विधेयगुण वाचक
नाम, सर्वनामविशेषण वा कभी२वाक्य	क्रियापद, वा हो धातु के साथ नाम वा विशेषण	विशेषण, वा विशेषणवत् शब्द वा वाक्य	क्रिया विशेषण, वा क्रिया विशेषणवत् शब्द वा वाक्य

उद्देश्य के घरमें नाम, सर्वनाम इत्यादि जो लिखे हैं उनसे यह समझो कि नाम वा सर्वनाम वा विशेषण वा वाक्य उद्देश्य होता है ॥ इसी तरह से और भी जानो ॥

उदाहरण ॥

"चिड़िया उड़ती है .. .. .. यहां नाम उद्देश्य है .. ..

"वह,, गया- .. .. .. सर्वनाम- .. ..

"बहुत से,, बुलाये गये थे किन्तु थोड़ेसे,, पसन्द हुए- विशेषण- .. ..

लोगोंको उचित है कि"क्रोध, ईर्षा, छल, लालच, घमण्ड, चुगली आदि बुराइयों को अपने चित्तमें, न रहने देवें,, ... वाक्य .. ..

"विद्यावान" पुरुष सब जगह प्रतिष्ठा पाता है- यहां विशेषण उद्देश्य गुण वाचक है- .. ..

जिसके पास विद्या है," वह सब जगह प्रतिष्ठा- पाता है- .. .. .. विशेषणवत् वाक्य ..

"अच्छे चाल चलनका," मनुष्य सब जगह मान्य- होता है- .. .. .. विशेषणवत् शब्द ..

"ध्यान पूर्वक," काम करता है- .. .. यहां क्रियाविशेषण विधेय गुण वाचक है .. ..

वह "दिल लगाके," वा "दिलसे," काम करता है क्रिया विशेषणवत् शब्द ..

"जैसा चोकस मनुष्य काम करता है," वैसा वह करता है क्रिया विशेषणवत् वाक्य ..

वह "नहीं देख सकता," .. .. यहांक्रियापद विधेय है ..

वह "अंधा है- .. .. हो धातुके साथ विशेषण ..

ऐसे स्थल में है को केवल उद्देश्य और विधेय का संयोजक अर्थात् मिलाप करने वाला कहते हैं; पर उस बाग़ में एक वृक्ष है, ऐसे स्थान में है मुख्य क्रियापद वा विधेय होता है, बहुधा है का समावेश विधेय में किया जाता है ॥

वाक्य का अर्थ पूरा होने के लिये जो शब्द अवश्य है, उसे विधेयार्थ + पूरक कहते हैं; ॥

और जिस शब्द से वाक्य के अर्थ का विशेष ज्ञान होता है, उसको विधेयार्थ वर्धक कहते हैं, वाक्य का पृथक्करण इसरीति से होता है; जैसा ॥

विद्यावान मनुष्य सब जगह प्रतिष्ठा पाता है,

उद्देश्य	विधेय	विधेयार्थपूरक	विधेयार्थ वर्धक
विद्यावान मनुष्य	पाताहै	प्रतिष्ठा	सब जगह

+ सकर्मक क्रियापदकेसाथ कर्म को अवश्य कहना चाहिये ॥ यह कर्म सदा विधेयार्थपूरक होता है ॥

प्र० वाक्य में शब्दों की योजना किस तरह से होती है ?

उ० सामान्यतः वाक्य के अवयवों की व्यवस्था इस तरह से होती है, कि पहिले कर्त्ता वा उद्देश्य, दूसरे विधेय पूरक वा कर्मादि कारक, और सब के पीछे क्रियापद आता है; विशेषण विशेष्य के पूर्व और षष्ठ्यन्त नाम वा सर्वनाम सम्बन्धी के पूर्व आते हैं ॥ जैसा मैंने शेर को तलवार से खाल के लिये भरका से निकलतेही जङ्गल में मारा, उसने अपने छोटे भाई को मारा यह नियम छोटे वाक्यों के लिये है ॥ कविता में और गद्य में जहां विरोध वा किसी शब्द को ज़ोर से कहना हो तहां यह नियम काम में नहीं आता; जैसा ॥

शकुन्तला नाटक ॥

इनको (अर्थात् दुर्वासा को) छोड़ और किसीको ऐसी सामर्थ्य नहीं है कि अपराधी को आपसे भस्म करदे ॥

रामायण में ॥

रङ्गभूमि आये द्वौ भाई । अस सुधि सब पुर बासिन पाई ॥
चले सकल गृह काजविसारी । बालक युवा जरठ नर नारी ॥

---

२ पाठ

कर्त्ता और क्रियापद का मिलाप ॥

प्र० कर्त्ता और क्रियापद का मिलाप किस तरह से होता है ?

उ० वाक्य में नाम वा सर्वनाम वा विशेषण उद्देश्य होवे तो वह सदा प्रथमा विभक्ति में रहता है ॥ साधारणतः हिन्दी में क्रियापद का लिङ्गवचन और पुरुष कर्त्ता के लिङ्ग वचन और पुरुष के सदृश होते हैं, पर इस नियम के कई अपवाद हैं उन को ध्यान में रक्खो ॥

(१) आदरार्थ में एक वचनान्त कर्त्ता के साथ बहुवचनान्त क्रियापद आता है ॥

(२) मनुष्य से अन्य जीव वा पदार्थ बोधक शब्द दो अथवा अधिक एक वचन में आवें तो क्रियापद एकवचन में विकल्प से आता है ॥

(३) कर्त्ता भिन्न लिङ्ग होवे तो क्रियापद पुंल्लिङ्ग में आता है, वा सब से निकट जो कर्त्ता होवे तदनुसार होता है ॥

(४) जब क्रियापद सकर्मक धातु साधित भूत काल वाचक विशेषण से बना होवे तब कर्त्ता को तृतीया विभक्तिका प्रत्यय लगाते हैं कर्म प्रथमान्त होवे तो तदनुसार क्रियापद का रूप बनता है, और कर्म द्वितीया विभक्ति में हो तो क्रियापद तृतीय पुरुष पुंल्लिङ्ग एक वचन में आता है ॥

उदाहरण।

वह लिखता है, वह लिखती है, वे लिखते हैं, वे गाती हैं, हे सखी हमारी सहेली शकुन्तला का गान्धर्व विवाह हुआ, और पति भी उसी के समान मिला इससे हमारे मनको सुख हुआ परन्तु फिरभी चिन्ता न मिटी ॥

(१) इसकी कुछ चिन्ता मत करो, ऐसे गुणवान मनुष्य कधी निर्लज्ज नहीं होते हैं, अब चिन्ता की बात यह है कि न जानें पिता कण्व इस वृत्तान्त को सुनकर क्या कहेंगे ॥ यहां **मनुष्य** और **पिता** एकवचन हैं तो भी क्रियापद बहुवचन में है ॥

शत्रु का पराजय करके राजा फिर नगर में आये और राज करने लगे ॥

(२) अभी बैल और घोड़ा पहुंचा है यहां दो कर्त्ता हैं पर क्रियापद एक वचन में है ॥ जन धन स्त्री और राज मेरा क्यों न सब गया आज ॥

(३) उसके मा बाप भाई तीनों उसके विवाह की चिन्ता में थे, यहां यद्यपि एक कर्त्ता स्त्री लिङ्ग है तथापि क्रियापद पुंल्लिङ्ग में है, उसकी गाड़ी ऊंट घोड़े हाथी लादे जाते हैं, लड़के लड़कियां वहां दौड़तीं थीं इस वाक्य में क्रियापद निकट कर्त्ता लड़कियां के अनुसार है ॥

(४) हम बन बासियों ने ऐसे भूषण आगे कभी नहीं देखे थे, यह वही मृगछौना है जिसको कों तैने पुच सम पाला है ॥

वाक्यांश व वाक्य क्रियापदका कर्त्ता होवे तो क्रिया पद तृतीय पुरुष पुंल्लिङ्ग एकवचन में आता है; जैसा इनका थोड़ा सीधा होना भी बहुत है, लोगों को उचित है कि जो काम करना हो उसके गुण दोष पहिले शोच लेवें ॥

क्रियापद के कर्त्ता भिन्न २ पुरुष वाचक होवें तो यह नियम है कि प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम कर्त्ता होवे तो क्रियापद प्रथम पुरुष में चाहिये, द्वितीय और तृतीय पुरुष वाचक कर्त्ता होवे तो क्रियापद द्वितीय पुरुष में चाहिये जैसा हम तुम उस काम को करेंगे, तुम और वे जाओ ॥

---

३ पाठ

विशेष्य विशेषण का मिलाप ॥

प्र० विशेष्य विशेषण की योजना वाक्य में कैसी होती है ?

उ० विशेषण सदा प्रत्यक्ष वा अध्याहृत नाम वा सर्वनाम का गुण बतलाता है और वह प्रायः विशेष्यके पूर्व आताहै, पूर्व में लिखा है कि आकारान्त विशेषणोंकोछोड़ शेष विशेषणोंके रूप में विशेष्यके लिङ्ग वचनानुसार कुछ भेद नहीं होता; आकारान्त विशेषण का लिङ्ग वचन विशेष्य के अनुसार होता है, उसका यह स्वभाव है कि विशेष्य पुंल्लिङ्ग बहु वचनान्त होवे वा एक वचन में द्वितीयादि विभक्त्यन्त वा शब्दयोगी अव्यय समेत हो, तो विशेषण के अंत्य **आ** को **ए** आदेश करके सामान्य रूप करते हैं; और विशेष्य स्त्रीलिङ्ग हो तो **आ** को **ई** आदेश होता है ॥ यह नियम जो शब्द विशेषण के समान अर्थात् सर्वनाम और धातु साधित विशेषण वाक्य में आते हैं उन्हें भी लगता है; जैसा सीधा मनुष्य, सीधे मनुष्य, सीधे मनुष्यों को, सीधी स्त्री या सीधी स्त्रियां, सीधी स्त्रियों को, गङ्गा के तीरपर घर बनायाहै, इस लड़के का पालने हारा कौन है, तुम्हारी घड़ी अच्छी है, उसका मन उदास है, **पांचवां** लड़का, पांचवें लड़के ने, गिराहुआ घर, गिरी हुई हवेली ॥

सामान्य नियम ये हैं कि विशेषण विशेष्य के साथ आवे तो उस विशेषण से बहुवचन के प्रत्यय आं ईं एं ओं वा विभक्ति प्रत्यय नहीं जोड़ते; जैसा अच्छी किताबें, अच्छे लड़कों को ॥ पर विशेष्य प्रत्यक्ष न होवे तो विशेषण में बहुवचन के प्रत्यय और विभक्ति प्रत्ययका योग

होता है, जैसा गरीबों का देना उचित है धनवान का सर्वत्र आदर होता है, साधु अपने समान सबों को मान कर उनपै दया करते हैं ॥

आकारान्त विशेषण के विशेष्यको को प्रत्यय का योग करके विशेषण क्रियापद के साथ जोड़ा जावे तो उसके रूप में कुछ भेद नहीं होता; जैसा उसके मुंह को काला करो, पर यह नियम सर्वत्र व्यापक नहीं है, क्योंकि नाम यदि स्त्रीलिङ्ग होवे तो विशेषण स्त्रीलिङ्गी बहुधा रखते हैं यद्यपि उसका योग क्रियापद के साथ क्रिया हो; जैसा लाठी को सीधी कर, रस्सी को लम्बी करो ॥

विशेषण भिन्न लिङ्गी दो वा अधिक नामों का गुण बतावे तो विशेषण पुंल्लिङ्ग नाम के अनुसार होता है, पर अंत्य विशेषण स्त्री लिङ्गी होकर विशेषण के निकट होवे तो विशेषण स्त्रीलिङ्ग में आता है जैसा उसके मा बाप जीते हैं, उसके लड़के लड़कियां अच्छी हैं ॥ परन्तु विशेष्य अप्राणि-वाचक नाम होवे तो विशेषण समीप विशेष्य के अनुसार रहता है; जैसा कपड़े बासन किताबें बहुत अच्छी हैं, कलकी हाट में अनाज तरकारी फल महंगे थे ॥

जब दो अथवा अधिक विशेषण नाम का गुण बतावें और उन में से एक दूसरे का विशेषण हो, तो भी उनमें से आकारान्त विशेषण का रूप विशेष्यके लिङ्ग वचनानुसार होता है; जैसा बड़ा ऊंचा वृक्ष, बड़ी लम्बी रस्सी ॥

---

४ पाठ

कारक विचार ॥

प्र० कारक किसे कहते हैं और वे कितने प्रकार के हैं ?

उ० जिसका क्रिया में अन्वय हो अर्थात् सम्बन्ध हो उसे कारक कहते हैं, उसके छः प्रकार हैं; जैसा कर्त्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण ॥

प्रथमा विभक्ति का वर्णन ॥

प्र० प्रथमा विभक्ति कौन अर्थ बतलाती है ?

७० कर्त्ता, कर्म, विधेय, अवधि, परिमाण इन पांच अर्थों में प्रथमा होती है ॥ कर्त्ता—जो क्रिया के व्यापार को करे उसे कर्त्ता कहते हैं ॥ वह दो प्रकार का है; एक, प्रधान; दूसरा, अप्रधान; जिस कर्त्ता के लिङ्ग वचन और पुरुष के अनुसार क्रियापद का लिङ्गवचन और पुरुष होता है उसे प्रधान कर्त्ता कहते हैं जैसा गुरु विद्यार्थियों को पढ़ाता है, इसी प्रकार से लड़के रोटी खाते हैं; औरतें नहाती हैं इत्यादि वाक्यों में जानो ॥ अप्रधान कर्त्ता का वर्णन, तृतीया के वर्णन में करेंगे ॥ एकनाम वा सर्व-नाम दो अथवा अधिक क्रियापदों का कर्त्ता होवे तो वह केवल प्रथम क्रियापद के पूर्व आता है, और शेष क्रियापदों के साथ उसका अध्याहार करते हैं; जैसा मैं अपने मालिक के पास जाऊंगा और कहूंगा कि महा-राज मुझ से यह अपराध हुआ है कृपा करके क्षमा कीजिये ॥

कर्म—कर्मवाचक शब्द से प्रथमा विभक्ति होती है; जैसा देवदत्त ने पोथी लिखीहै, सुन्दर लालने किताब बेची, लक्ष्मीने कपड़े धोये इत्यादि; यहां लिखना वेचना धोना आदि व्यापारों का फल पोथी किताब कपड़ों पर है इसी से वे कर्म हैं और प्रथमा विभक्ति में हैं ॥

विधेय—नाम वा सर्वनाम को उद्देश्य करके उसके विषय में किसी एक अर्थका विधान किया जावे, तो उस विधेयवाचक नाम से प्रथमा होती है; जैसा हीरा लाल ब्राह्मण है, वज़ीरा मुसल्मान है, यहां हीरा लाल वा वज़ीरा का उद्देश्य करके ब्राह्मणत्व और मुसल्मानी का विधान किया है इसलिये ब्राह्मण और मुसल्मान विधेयार्थ में प्रथमा हैं ॥

कई एक अकर्मक, कर्मवाच्य क्रियापद, होना, दिखाना, कहाना आदि अर्थवाचक के साथ प्रथमान्त नाम विधेयका अर्थ पूरा करने के लिये आता है; जैसा पत्थर, लोहा, खड़िया, कोयला, नोन आदि सब धातु विशेष हैं; जो झाड़ होता है उसमें जड़सेही अनेक डालियां फूटती हैं, भाषण से वह बड़ा पण्डित दीखता है प्रथम जीवधारी जो अपने आप हिल चल सकते हैं वे जीव जन्तु कहाते हैं ॥

अवधि--काल वा अन्तर की मर्यादा बतलाना हो तो तद्वाचक नाम

से प्रथमा होती है; जैसा दो महीने वह यहां रहेगा, नागपुर सागर से एक सौ पैंतीस कोस दूर है ॥

परिमाण- किसी वस्तु के परिमाण का बोध करना हो, तो परिमाण + वाचक से प्रथमा होती है, जैसा दो सेर सुपारी, पांच पसेरी; गेहूं ॥

द्वितीयादि विभक्ति का वर्णन ॥

प्र० द्वितीया विभक्ति किससे होती है ?

उ० जो क्रिया का कर्म है उससे द्वितीया विभक्ति होती है; जैसा गुरू लड़कों को पढ़ाता है, जब कर्म को निश्चित करना हो, तब द्वितीया का प्रत्यय को लगाते हैं; जैसा किताब को लाओ ॥

अप्राणि वाचक नाम कर्म होवे तो प्राय: उन से द्वितीया के प्रत्यय का योग नहीं करते; जैसा ख़त लिखो, कई एक शब्द ऐसे हैं कि वे निश्चित होतो भी उनको प्रत्यय लगाना चाहिये; व्यक्ति वाचक अर्थात् विशेष नाम, अधिकारि वाचक, और व्यापार कर्तृ वाचक इत्यादि शब्दों से को प्रत्यय का योग करना चाहिये जैसा विष्णु को भेजो, न्यायाधीश को बुलाओ इत्यादि ॥ जब वाक्य में कर्म और संप्रदान दोनों आवें तो कर्म प्राय: प्रथमा में रखते हैं और संप्रदान वाचक से चतुर्थी होती है, संप्रदानार्थक शब्द नाम वा सर्वनाम होवे और कर्म द्वितीयान्त होवे तो नाम के आगे को और सर्व नाम के आगे ए अथवा एं प्रत्यय लगाते हैं; जैसा मर्द को कपड़े इनाम दो, उसने अपने भाई के हिस्से को उसकी बेटी को दिया, मैंने अपनी लड़की को उसे सौंप दिया ॥

गत्यर्थ क्रियापदों के साथ स्थलवाचक नाम से अधिकरणार्थ में द्वितीया होती है ॥ इसी तरह क्रिया के होने का समय जिस नाम से बोधित हो उससे भी द्वितीया होती है ॥ जैसा गङ्गा को गया, दिल्ली को पहुंचा, देश और काल वाचक नाम से द्वितीया के प्रत्यय का लोप करते हैं, परन्तु

+ दो महीने वहां रहेगा, दो सेर सुपारी ऐसे वाक्यों में क्रमसे तक और भर शब्दों का अध्याहार करके कोई २ लोग महीने और सेर इनको सप्तम्यन्त रूप मान लेते हैं ॥

उस के पीछे विशेषण या विशेषण तुल्य शब्द होवे तो उसका सामान्य रूप होता है; जैसा उस दिन वह मेरे घर आया था, उस काल मास्क नो बजता था सो तो मेघसा गाजता था ॥

तृतीया विभक्ति ॥

प्र० तृतीया विभक्ति से कौन २ अर्थ बोधित होते हैं ?

उ० तृतीया के मुख्य अर्थ पांच हैं; कर्त्ता, करण, हेतु, अङ्ग विकार, साहित्य ॥ कर्त्ता-तृतीया का प्रत्यय **ने** कर्त्ता से लगाते हैं, जब वाक्य में क्रियापद **बोल** धातुका गण छोड़ शेष सकर्मक धातु के भूतकाल वाचक विशेषण से बना होवे, ऐसे प्रयोग में कर्त्ता के अनुसार क्रियापद का लिङ्ग वचन नहीं होता है, इसलिये उसे अप्रधान कर्त्ता कहते हैं; जैसा मैंने कुत्ता देखा ॥ तत्वत: बोलधातु का गण और अपूर्ण भूतकाल को छोड़कर सकर्मक धातु के भूतकाल में जो प्रयोग होते हैं, वहां कर्त्ता को तृतीया विभक्ति का प्रत्यय **ने** जोड़ते हैं, जब ऐसे वाक्य में कर्म प्रथमान्त होता है, तब उसके लिङ्ग वचनानुसार क्रियापद का लिङ्ग वचन होता है, वह कर्मणि प्रयोग जानो; जैसा हीरा लाल ने पोथी लिखी, उसने घोड़े भेजे ॥ और जब कर्म से **को** प्रत्यय का योग करतेहैं, तब क्रियापद सामान्यत: पुंलिङ्ग तृतीय पुरुष एक वचन में होता है और उसे भावे प्रयोग कहते हैं; जैसा उसने कुत्ते को देखा, पार्वती ने रोटी को खाया, सोभालाल ने बकरी को मारा, उस लड़के ने चूहे को पकड़ा इत्यादि ॥ अप्रधान कर्त्ता कहां आता है यह विद्यार्थियों को ध्यान में रखना चाहिये ॥

अकर्मक क्रियापद के साथ अप्रधान कर्त्ता कभी नहीं आता ॥ केवल शुद्ध धातु से और वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से जो काल और अर्थ बनते हैं उनके साथ नहीं आता है फिर वह धातु सकर्मक वा अकर्मक हो ॥ **बोल भूल ला** इत्यादि धातुओं के साथ नहीं आता है; जैसा, वह बोला, वह सन्देशा लाया; उर्दू व्याकरण में लिखा है कि लाना का अर्थ ले आना, यहां अंत्यावयव आ धातु अकर्मक है, इससे यह नियम

समझ में आता है कि जब संयुक्त क्रियापद का अंत्यावयव अकर्मक होवे और सब क्रियापद सकर्मक होवे, तो भी अप्रधान कर्त्ता की योजना नहीं करते हैं; जैसा वे फ़क़ीर खाना खागये हैं, मैं ख़त लिख चुका इत्यादि ॥ दो वाक्य **और** उभयान्वयी अव्यय से जोड़े गयेहों, उनका कर्त्ता एकही होवे, और पहले वाक्य में क्रियापद अकर्मक होवे और दूसरे में क्रियापद सकर्मक होवे तौभी दूसरे वाक्य में अप्रधान कर्त्ता के कहने की कुछ अवश्यकता नहीं है, परन्तु वाक्य की रचना अप्रधान कर्त्ता के अनुसार होती है; जैसा वह झट फिर आई और कहा अर्थात् उसने कहा ॥

जिस वाक्यमें क्रियापद प्रयोजक वा कर्मवाच्य वा अकर्मक होवे, वहां कर्तृवाचक नाम से **से** प्रत्यय होता है; जैसा मैंनेयह काम उससे करवाया, तुझसे रूखी रोटी क्योंकर खाई गई थी, वह मुझसे मारा गया था, यह अपराध उससे हुआ; मुझसे लिखना नहीं बनता है ॥

करण-क्रिया के होने के लिये जो साधन वा जिसके द्वारा क्रिया हो उसको क्रिया के अन्वय से करण कहते हैं; करण वाचक से तृतीया का प्रत्यय लगाते हैं; जैसा सिपाही ने तलवार से चीते को मारा, यहां मारने की क्रिया तलवार के द्वारा हुई इसलिये तलवार करण है और उससे तृतीया का प्रत्यय **से** हुआ; ऐसेही कलम से लिखा, हाथ से उठाया, पांवसे रगड़ा इत्यादि जानो ॥

+

हेतु-कोई क्रिया होनेके वा करने के लिये जो कारण हो उसे हेतु कहते हैं, तद्वाचक शब्दसे तृतीया का **से** प्रत्यय होता है; जैसा आपकी दवासे आराम हुआ, तुम्हारे आने से मेरा काम हुआ; गायन से संतोष होता है, यहां **दवा आना गायन** ये हेतु हैं, उनसे तृतीया हुई ॥

अङ्गविकार-जिस अङ्गावयव में विकार होवे उससे तृतीया होती है; जैसा आंखों से अंधा, पांव से लंगड़ा, कानसे बहरा इत्यादि ॥

साहित्य-क्रिया करने में कर्त्ता के साथ जो रहे उसे साहित्य बोलते

+ अंगावयव का अर्थ शरीर का भाग ॥

हैं ॥ और तद्वाचक से तृतीया होती है; जैसा हज़ारी मल्ल एक आदमी से आया, हरभान एक कपड़े से गया, राजा पचास हज़ार फ़ौज से चढ़ आया है इत्यादि ॥

मूल्यवाचक से भी तृतीया होती है; जैसा पांच रुपये से किताब मोल ली इत्यादि ॥

कभी २ क्रिया करने का प्रकार वा रीति बताने के लिये नाम से तृतीया होती है, जैसा, उसको किसी ने नहीं कहा पर अपनेही दिलसे सीखने लगा, अन्तःकरण से काम करो, मेरे तरफ़ क्रोध से देखता है ॥

तृतीया के प्रत्यय का कभी २ लोप होता है; जैसा मैंने उसके हाथ चिट्ठी भेजी है, न आंखों देखा न कानों सुना, यहां **हाथ** से **आंखों** से **कानों** से चानों ॥ **पूछ** कह और तदर्थक धातु के साथ नाम वा सर्वनाम से **को** की जगह से आता है जैसा राजा से बिनती की, मैं उससे सच कहता था मैंने आपसे पूछा इत्यादि ॥

चतुर्थी का वर्णन ॥

प्र० संप्रदान किसको कहते हैं ?

उ० जिसको कुछ दिया जावे अथवा जिसके निमित्त कुछ किया होवे उसे संप्रदान कहते हैं और उससे चतुर्थी होती है; जैसा वह ब्राह्मण को गाय देता है, उसने गोपाल को पोथी दी, गुरूजी स्नानको गये हैं, पीनेको पानी लाओ; वह नाटक देखने को गया है ॥

हो धातु के साथ धातु साधित भाववाचक नाम आकर आवश्यकता बतावे, तो उसके पूर्व कर्तृवाचक शब्द से चतुर्थी होती है; जैसा हमें आज सभा को जाना है, इसको अभी पाठ सीखना है ॥

योग्यता आदि अर्थ बोधक विशेषण और उनके विरुद्ध शब्द वा नमस्कार वा कुशल आदि शब्दों के साथ नाम से चतुर्थी होती है; जैसा लड़कों को उचित है कि माता पिता का आदर करें; लोगोंको योग्य है कि सत्य बोलना, उदारता, दया, पराये दोषको ढकना, सहना, विवेक, उपकार करना आदि अच्छी २ बातों को अङ्गीकारकरें; बड़े आदमियों को

उचित नहीं है कि कभी झूठ बोलें; आपको नमस्कार; आपको कुशल हो ॥

पञ्चमी का वर्णन ॥

प्र० अपादान का क्या अर्थ है और यह कारक किस विभक्ति से जाना जाता है ?

उ० किसी को अवधि मानकर उससे वियोग वा विभाग वा न्यूनाधिक भावादि अर्थका बोध होवे, तो वह अपादान कहाता है और उससे पञ्चमी होती है जैसा गांवसे आया है, घोड़े से गिरपड़ा, गोविन्द से राम प्रसाद बड़ा है, उस घोड़ेसे यह घोड़ा छोटा है, आगरे से कलकत्ता पूर्वहै इत्यादि ॥

अकर्मक क्रियापद के साथ उत्पत्ति स्थान वाचक से पञ्चमी होती है; जैसा ब्रह्माके मुख से ब्राह्मण पैदा हुये, हिमालय पर्वत से गङ्गा निकली है॥ कभी २ सप्तम्यन्त से पञ्चमी होती है; जैसा बाज़ार में से लाया, घोड़े पैसे गिरपड़ा इत्यादि ॥ वस्तुओं के समूह में से कुछ अंश अलग करना होतो सप्तम्यन्त नाम से पञ्चमी होती है॥ जैसा उनमें से चार बाक़ी रहगये, सन्दूक़ में पन्द्रह रुपये रक्खे हैं उनमें से पांच लो ॥

सप्तमी का वर्णन ॥

प्र० सप्तमी विभक्ति का अर्थ क्या है और किससे वह होती है ?

उ० क्रिया का अधिकरण अर्थात् आधार तद्वाचक शब्द से सप्तमी के प्रत्यय में, पै, पर,—होते हैं; जैसा धनमें मन रखता है, घोड़े पै बैठा जाता है, तालाब में स्नान करता है, हाथी पर बैठा है, पढ़ने में ध्यान लगावे तो अच्छा है ॥

कभी २ आधेय वाचक से सप्तमी होती है; जैसा, पांवमें जूता उंगली में अंगूठी इत्यादि ॥

बीच अनुसार विषयक आदि अर्थों में नाम से सप्तमी होतीहै; जैसा इन दोनों में कुछ भेद नहीं है, वह अपने जेठोंकी चाल पर चलेगा, इस बात पर तुम्हारा कहना क्या है ॥

जिस बात में प्राणिवाचक वा अप्राणिवाचक नाम का गुण प्रगट करना;

हो तो तद्वाचक से सप्तमी होती है; जैसा सखा राम भट्ट वेद विद्या में निपुण है, बोलने में कठोर पर हृदय में दयावान है ॥

कभी २ सप्तमी का लोप करते हैं; जैसा गङ्गा के तीर रहता है, घोड़े चढ़ आया पर गधे चढ़ जावेगा ॥

भर यह शब्द नाम के आगे आकर नाम से बोधित वस्तु की समग्रता बताता है; जैसा दिन भर खेलता रहता है, सेर भर घी ॥

सम्बोधन का वर्णन ॥

प्र० सम्बोधन किसको कहते हैं ?

उ० किसी को चिताकर सम्मुख करना, इसे सम्बोधन कहते हैं और इसमें भी प्रथमा होती है उसका फल प्रवृत्ति वा निवृत्ति होता है; जैसा अय गोविन्द तू पाठशाला को जा, यहां गोविन्द सम्बोधन है उसे चिताकर पाठशाला को जाने में प्रवृत्त करता है; ऐसे और भी जानो ॥ मोहनलाल, पढ़ने में ध्यान दे, गोपाल, खेलना छोड़; हे राम, मेरा काम कर दे इ० ॥

षष्ठी का वर्णन ॥

प्र० षष्ठी विभक्ति की योजना कहां की जाती है यह नहीं कहा सो मुझे समझाइये ?

उ० जो दो वस्तुओं पर है और दोनों से भिन्न रूप है अर्थात् जो एक शब्द पर दूसरे शब्द का आश्रय बतावे उसे सम्बन्ध कहते हैं। उनमें एक सम्बन्धी है और दूसरा कृत सम्बन्धी, अर्थात् जिस पर दूसरे शब्द का सम्बन्ध है उसे सम्बन्धी कहते हैं, जिसका सम्बन्ध रहता है उसे कृत सम्बन्धी कहते हैं ॥ का की के ये प्रत्यय कृत सम्बन्धी से होते हैं; और कृत सम्बन्धी सम्बन्धी की विशेष्यता बतलाता है उसका अन्वाय सम्बन्धी में है इसी से उसे कारकत्व अर्थात् क्रियान्वयित्व नहीं है, और कारकों में नहीं गिना जाता ॥ जैसा, राजा का घोड़ा, यहां कृत सम्बन्धी राजा उससे षष्ठी विभक्ति हुई राजा का सम्बन्ध घोड़े की तरफ़ है ॥ सम्बन्धी पुंल्लिङ्ग प्रथमा के एक वचन में होवे, तो कृतसम्बन्धी से का और पुंल्लिङ्ग होकर बहुवचनान्त

वा द्वितीयादि विभक्त्यन्त होवे वा शब्दयोगी अव्यय के संग आवे, तो कृतसम्बन्धी से के प्रत्यय होता है; जैसा राजा का घोड़ा, राजा के घोड़े, राजा के घोड़े पर, राजा के घोड़ों का, राजा के घोड़ों पर इत्यादि ॥

सम्बन्धी स्त्रीलिङ्ग होवे, तो कृत सम्बन्धी से **की** प्रत्यय होता है; जैसा राजा की घोड़ी राजा की घोड़ियां इत्यादि ॥ कृत सम्बन्धी सम्बन्धी के पूर्व बहुधा आता है ॥ सम्बन्ध कई प्रकार का होता है ॥ बोध होने के लिये कुछ बताता हूं ॥

वाक्य	सम्बन्ध	वाक्य	सम्बन्ध
राजा की घोड़ी	स्वस्वामिभाव	राजाकासिपाही	सेव्य सेवकभाव
तुलसीदासकीरामायण	कर्तृकर्मभाव	मनसारामकीलड़की	जन्यजनकभाव
चांदीकेतोड़े	द्रव्यजन्यभाव	हाथकीउंगली	अङ्गाङ्गिभाव

कभी २ अधिकरण में षष्ठी होती है—रात का सोया है, दिनका थका हुआ है ॥

कभी २ षष्ठी का अर्थ निमित्त होता है—वैद्य के यहां जाने की सामर्थ्य अबतक नहीं आई; क़ीमत, परिमाण, उमर, मुद्दत, शक्यता, समग्रता, योग्यता आदि अर्थों में षष्ठी की योजना की जाती है ॥ जैसा,

चारआनेकीचीमड़ी पांचरुपयेकागोटा	क़ीमत	पन्द्रहबरसकालड़का .. दस बरसकी लड़की .. यहपच्चीसबरसकाहालहै	उमर औरमुद्दत
दो हाथ का कपड़ा तीनहाथका सोंटा	परिमाण	मैं आज ठहरने का नहीं शक्यता खेतकाखेत, घरकाघर-समग्रता अर्थात् सब खेत, सब घर	

यह बात कहने योग्य नहीं है—योग्यता ॥

शब्द-योगी अव्यय नाम के साथ होवे तो षष्ठी का के प्रत्यय लगाते हैं; जैसा पत्थर के नीचे; कभी २ इस प्रत्यय का लोप भी होता है—पत्थर पर, तुम्हारी सहायता बिना यह काम नहीं होगा ॥

जब कोई पदार्थ दो अथवा अधिक मनुष्यों का है यह बतलाना हो तब अंत्य नाम से षष्ठी होती है; जैसा यह बग़ीचा मोहनलाल शिवप्रसाद और बेनीराम का है॥ सादृश्य, समता, अनुसार, समीपता, योग्यता, आधीनता आदि गुण वाचक विशेषणों के पूर्व शब्द योगी अव्ययवत् नाम से षष्ठी होती है, जैसा, उस स्त्री का मुख चन्द्रमा के सदृश है, ज्ञान हीन मनुष्य पशु के समान है, यह धर्मशास्त्र के अनुसार है, वह लड़का राजा के समीप रहता था, पतिव्रता स्त्री का यह धर्म है कि अपने पति के आधीन रहे, ऐसा हार राजा को नज़र करने के योग्य है ॥

---

५ पाठ

सर्वनाम ॥

प्र० वाक्य में सर्वनाम की योजना किस रीतिसे होती है सो कहिये?

उ० जिन पुरुष वाचक सर्वनामों के लिये क्रियापदोंके पृथक् २ रूप हैं, उन रूपों के साथ सर्वनामों की योजना करना अवश्य नहीं; परन्तु जब विरोध अथवा विशेष्यता बतलाना हो तब उनकी योजना करते हैं, जैसा करता हूं, लिखते हो, यहां पहिले में प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम और दूसरे में द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम का बोध होता है; इसलिये उनका स्पष्ट उच्चारण अवश्य नहीं; क्या तुम हो मैंने नहीं जाना ॥

पुरुष वाचक सर्वनामों के बहुवचनान्त रूप आदरार्थ में वा सामान्य संभाषण में एक वचन की जगह आते हैं—हमने तुमको एक बार कह दिया है कि ऐसी बात हमारे पास मत निकालो, हमने सुना कि तुम्हारे भाई आज बम्बई को जाएंगे कृपा करके उनसे कह दो कि हमारे लिये पांच सौ रुपये तक मोतियों की जोड़ी लावें ॥

जब बोलने वाला और जिसके साथ वह बोलता है वे दोनों समान पदवी के होवें तब प्रत्येक को अपने विषय में एक वचन बोलना चाहिये और दूसरे को बहुवचन में, बहुत बड़े पदवी का आदमी अपने विषयमें

बोले तो बहुवचन में बोलता है पर यह सभ्यरीति नहीं है और किसी को एक वचन में बोलना अच्छा नहीं है ॥

तीसरे के विषय में बोलना हो और वह अपने से बड़ा होवे तो बहु-वचन में और हलका होवे तो एक वचन में बोलना चाहिये, पर समक्ष में बहुवचन में बोलना उचित है और वह अति श्रेष्ठ हो, तो आप इस सर्वनाम की योजना करते हैं; बराबरी वाले को वा बड़े को समक्ष बोलना हो, तो भी आप इस सर्वनाम की योजना करते हैं, **आप** जब कर्ता हो तो क्रियापद तृतीय पुरुष बहुवचन में चाहिये ॥

यथार्थ बहुत्व बताना होवे तो सर्वनामों के आगे **लोग** शब्द की योजना करते हैं; जैसा हम लोगों में यह चाल नहीं है, पर तुम लोगों में हो तो करो, आप लोगों को इससे बड़ा लाभ होगा ॥

ईश्वर की प्रार्थना करने में अति आदर बताने के लिये वा अतिनीच मनुष्य को बोलने में वा अत्यन्त स्नेह की जगह द्वितीय पुरुष एकवचन की योजना करते हैं; जैसा हे भगवान तू सब प्राणियों का पालन कर्त्ता है, तूने सब सृष्टि उत्पन्न की इ० ॥ अरे तू कौन है ? बताव जल्द, क्यों यहां आया; बेटा, यहां आ मुझे मुंह चुम्बने दे ॥

भिन्न पुरुष वाचक सर्वनाम वाक्य में कर्त्ता होवें और उभयान्वयी अव्यय से पृथक् किये गये हों, तो प्रत्येक कर्त्ता के सङ्ग क्रियापद को बोलना चाहिये; जैसा तुम जाओ वा वे जावें, किसी तरह से काम करना चाहिये ॥ वाक्य में भिन्न पुरुष वाचक सर्वनाम कर्त्ता हो तो पहिले प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम पश्चात् द्वितीय और उसके पीछे तृतीय पुरुष वाचक सर्व-नाम आते हैं; हम तुम क्या कर सकेंगे, तुम और वे वहां जाकर बैठो और पाठ याद करो ॥ सर्वनाम अन्य विभक्ति में आवें तो भी यह नियम जानो; जैसा हमसे और तुमसे कुछ नहीं कह सकते हैं ॥

प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम क्रियापद के कर्म होते हैं, तब उनको सदा द्वितीया विभक्ति होती है; जैसा वह मुझको वा मुझे मारता है, मैं तुझे वा तुझको देता हूं ॥ जब तृतीय पुरुष वाचक सर्व-

नाम सकर्मक क्रियापद का कर्म होता है, तब सामान्यत: उस सर्वनाम से द्वितीया विभक्ति बहुधा होती है; जैसा उसको मारो, उनको बुला दो इ० ॥ **मेरा तेरा तुम्हारा अपना** आदि षष्ठ्यन्त रूपों की योजना जिन रूपों में **का की के** प्रत्यय किये जाते हैं उनके सदृश होती है; जैसा मेरी भूमि, मेरा हाथ, अपने भाइयों से झगड़ा कभी न करना ॥

कर्त्ता और क्रिया को छोड़ जो वाक्यांश उसमें कर्तृ सम्बन्धी षष्ठ्यन्त सर्वनाम की जगह **अपना** इस सर्वनाम का प्रयोग करते हैं; जैसा वह अपना काम करता था अपना= उसका ॥ तुमने अपना नया घर देखा है, अपना = तुम्हारा ॥ मैं यह बात अपने बाप से कहूंगा अपने = मेरे; हम और हमारे बाप अपने देश को जांयगे; यहां जाने का कर्त्ता बाप और हम हैं, इस कारण से **अपना** की योजना नहीं हुई ॥

और पृथक्ता कहना हो तो कभी २ द्विरुक्ति होती है जैसा वे अपने२ घरको गये ॥ **आप** अर्थात् निजका वाचक सामान्य सर्वनाम का प्रयोग आदरार्थक आप शब्द से भिन्न है, और उसकी योजना तीनों पुरुष और दोनों वचनों में होती है; जैसा मैं आप करूंगा तुम्हारी सहायता न चाहिये; तुम आप क्यों न गये; तुम कुछ मत बोलो, वे आप जांयगे; इन्द्रियों की विद्या में अभ्यास करेंगे तो उन्हें देखने और प्रकाश और प्रतिबिम्ब का भेद आपसे आप खुल जायगा ॥

पूर्व भाग में कह आयेहैं कि सर्वनाम का वचन नाम के वचन के अनुसार होता है फिर वह नाम प्रत्यक्ष हो वा अध्याहृत हो ॥ सर्वनाम नाम के पूर्व विशेषण **सा** आवे और नाम से द्वितीयादि विभक्ति का योग करना हो वा उसके सङ्ग शब्द योगी अव्यय जोड़ना हो, तो सर्वनाम के सामान्य रूप मात्रकी योजना करना चाहिये अर्थात् प्रत्ययों का योग नहीं होता जैसा आप ऐसे धर्मज्ञ जो मुझ अतिथि को मारने को उठे; तुम भले आदमी को झूठ बोलना उचित नहींहै; कदाचित् कोई इस बात का सन्देह करे; पृथ्वी जल और वायु इन तीनों में जीव रहते हैं उन जीवों में मुख्य

दो भेद हैं; जिस धरती में अन्न और तरकारी उपजते हैं उसे खेत कहते हैं सब पुस्तकें हाथसेही लिखी जाती हैं वा और किसी प्रकार से भी होती हैं, किस मनुष्य को बुलाते हो ॥ **क्या** सर्वनाम का सामान्य रूप **काहे** नाम के पीछे विशेषण वत् कभी नहीं आता जैसा काहे के लिये बुलाते हैं, काहे की घड़ी बनी है ॥

प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम से सादृश्यार्थक **सा सी से** प्रत्यय जोड़े जांय तो उनके सामान्य रूप से जोड़ते हैं; जैसा तुझसा चतुर दूसरा नहीं ॥

कभी २ **यह** और **वह** इन एक वचन रूपों की बहु वचन में योजना करते हैं; जैसा यह दोनों भाई न्यायाधीश के पास गये, वह दान धर्म में कुछ पैसा देते हैं ॥

सम्बन्धी सर्वनाम **जो** वा **जौन** और तदर्थवाचक **सो** वा **तौन** वा **वह** अपने २ वाक्य में बहुधा सब से पहिले आते हैं ॥ पूर्व वाक्य में **जो** सर्वनाम का प्रयोग किया जावे, तो उत्तरवाक्य में **सो** वा **वह** सर्वनाम की योजना करनी चाहिये ॥ और जिस वाक्य में सम्बन्धी सर्वनाम होवे वह प्राय: पहिले आता है ॥ उनसे साधित शब्द अर्थात् जैसा, तैसा, जितना आदि शब्दों की योजना पूर्वोक्त प्रकार से होती है; जैसा, जो घोड़े तुमने भेजे राजा ने बहुत पसन्द किये, जो यत्न करता है सो फल पाता है, जो तुमने कहा सोसब सच है, जहां धन तहां डर, जैसा दोगे वैसा पाओगे, जितना चाहिये तितना लो, चौकस वह आदमी है जो कि काम से पहिले परिणाम को सोचै ॥

प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनामों के सङ्ग जो सम्बन्धि सर्वनाम आवे, तो उनके पश्चात् आता है; जैसा तुम जो ग़रीब, हो इतना घमण्ड क्यों करते हो, मैं जो आज दश वर्ष से पढ़ता हूं क्या कुछ नहीं जानता हूं ॥

कभी २ बिना नाम के **जो** की योजना सामान्य अर्थ में करते हैं; जैसा जो ऐसा काम करेगा **सो** दण्ड पावेगा ॥ **कि** यह शब्द **जो** के

साथ बारम्बार आता है परन्तु अर्थ की विशेषता नहीं होती; जैसा जो दुःख कि हम को पहुंचा है दिल में न लावें ॥

जो यह सम्बन्धी सर्वनाम **जो** उभयान्वयी अव्यय अर्थात् **यदि** से भिन्न है और उसका ज्ञान वाक्य में पूर्वापर सम्बन्ध से होता है; जैसा जो आप आज्ञा दें तो मैं उसे पकड़ लाऊं ॥

कौन कोई क्या कुछ इनकी योजना की रीति सर्वनाम प्रकरण में बतलाई है ॥ उन के उदाहरण यहां लिखे जाते हैं जैसा कौन है अर्थात् कौन मनुष्य है, क्या है अर्थात् क्या चीज़ है, कोई उस घर में रहता है, उस ठेकी में कुछ नहीं है, इस ठेक में कुछ है, किसी बन में एक सियार था, राजा से किसी को अधिकार मिलता वा किसी कारण से प्रतिष्ठा बढ़ाई जाती है; कोई सेठ, कोई कङ्गाल, कोई राज सेवक होते हैं परन्तु जहां जङ्गली लोग रहते हैं वहां राजा का कुछ प्रवन्ध नहीं होता; कुछ लोग वहीं जमा हुए थे, क्या निर्बुद्धि आदमी है, वा: क्या बात है ॥

नाना प्रकार बतलाने के लिये **क्या** शब्द की द्विरुक्ति करते हैं जैसा क्या २ चीज़ें आई हैं, क्या २ लोग जमा हुए हैं ॥

कभी २ **क्या** उभयान्वयी भी होता है; जैसा खेत में क्या बाग़ में हुआ यहां **क्या** शब्द का अर्थ **अथवा** है ॥

तुल्यता के अभाव में **कहां** शब्द की योजना करते हैं; जैसा कहां सूर्य्य कहां खद्योत, कहां राजा भोज कहां गङ्गा तेली ॥

निषेधार्थक वा संदेह बोधक अर्थात् जहां प्रश्न सूचित हो ऐसे वाक्य में सम्बन्धी सर्वनाम की जगह कौन और क्या प्रश्नार्थक सर्वनाम आते हैं, जैसा मैं नहीं जानता हूं कि वह किस जगह गया है, मुझे स्मरण नहीं कि कौन २ आये थे और कौन २ नहीं, वह जानता है कि तुम्हें क्या २ चाहिये अर्थात् तुम्हें जो जो चाहिये सो सब वह जानता है ॥ इसी तरह से उनसे साधित क्रिया विशेषणादिकों की योजना होती है; जैसा न जाने वह कब आवेगा ॥

---

६ पाठ

क्रियापद का अधिकार ॥

प्र० वाक्य में शब्दों पर क्रियापद का अधिकार रहता है इसका अर्थ मैंने नहीं समझा कृपा करके बतलाइये ?

उ० कोई २ क्रियापद ऐसे होते हैं कि उनके साथ दूसरे शब्द अर्थात् नाम वा सर्वनाम किसी एक निश्चित रूप से सदा आते हैं; तुम जानते हो कि सकर्मक क्रियापद होवे तो कर्म अवश्य चाहिये और कभी २ संप्रदानार्थक शब्द की योजना करनी चाहिये; जैसा मैंने उसको किताब दी, मैं पलंग पर सोता हूं, मैं रोटी खाता हूं, दूसरे वाक्य में सोता हूं इस क्रियापद के संग पलङ्ग शब्द आया है और अर्थानुरोध से उस नाम से सप्तमी विभक्ति का प्रत्यय जोड़ा गया दूसरी विभक्ति का नहीं, तीसरे वाक्य में **खाता** हूं इस क्रियापद के साथ रोटी इस नाम को कहना अवश्य है नहीं तो अर्थ पूरा न होगा और वह कर्म रूपसे आया है अन्य विभक्ति अर्थात् तृतीयादिकों के प्रत्यय नहीं जोड़ेगये इससे स्पष्ट है कि क्रियापद के अनुरोध से कारकों की योजना होती है ॥

प्र० वाक्य में नाम वा सर्वनाम पर क्रियापद का किसी एक प्रकार का अधिकार होता है यह मैं समझा, अब किस क्रियापद के संग नाम वा सर्वनाम किस रूप से आते हैं यह समझाइये ?

उ० पूर्व में कह आये हैं कि होना दिखाना कहाना आदि अर्थ बोधक अकर्मक और कर्मवाच्य क्रियापद के साथ नाम विधानार्थ प्रथमा में आता है; जैसा रामलाल अब बड़ा महाजन हुआ, जो पुत्र अपने माता पिता की आज्ञा को मानते हैं वे सुपुत्र कहाते हैं ॥

सकर्मक क्रियापद के कर्म के स्थान में नाम अथवा सर्वनाम आता है तब पूर्व नियम से प्रथमा वा द्वितीया विभक्ति होती है; जैसा ऐसे बली यदुकुल में कौन उपजे जिन्होंने सब असुरों समेत महाबली कंस को मारा मेरी बेटियों को रांड़ किया, परंतु आप का यह पुत्र है जो

वेश्याओं के सङ्ग आपकी सम्पत्ति खा गया है, जोहीं आया तोहीं आपने उस के लिये बछड़ू मारा है ॥

प्रयोजक क्रियापद और बतलाना, दिखाना, पहराना आदि सकर्मक क्रियापद के संग दो कारक अर्थात् कर्म और संप्रदान अवश्य आते हैं, उनमें से कर्म प्रायः प्रथमान्त आता है जैसा लड़की को खाना खिलाकर घर को जाओ, उसे यह कपड़ा पहनाओ, उसको एक रुपया दो, तब उसने उनको अपनी सम्पत्ति बांट दी ॥

बोलना के साथ नाम से चतुर्थी होती है और कहना के सङ्ग उससे तृतीया का **से** प्रत्यय जोड़ा जाता है- मैं उठके पिता के पास जाऊंगा, और उन से कहूंगा हे पिता मैंने स्वर्ग के विरुद्ध आपके सामने पाप किया; इस नियम का अपवाद भी कई एक स्थान में देख पड़ता है, जब वह उन के सामने आया तब उनसे एक बात बोल न सका ॥ किसी की स्थिति वा गुण वा मनो विकार बतलाना हो और वह नाम वा सर्वनाम अकर्मक धातु जैसा **आना बनाना भाना चाहना पड़ना पहुंचना रहना सोचना लगना मिलना और होना** इनके साथ जब आवे तब उससे चतुर्थी विभक्ति होती है; जैसा मुझे नींद आती है; मुझे इस बात में सन्देह है; उसे देख नहीं पड़ता; न उन्हें नींद आती थी, न भूख प्यास लगती थी; हमको चाहिये कि वहां जावें; यहां और दूसरे स्थानमें **चाहिये** का अर्थ योग्य है, ऐसा है योग्यार्थक **चाहिये** के योग में चतुर्थी पुरुष वाचक से होती है; जैसा हमको जाना चाहिये; तुमको जाना चाहिये, जब **चाहिये**, का कर्त्ता वाक्य होताहै तब उस वाक्य में क्रियापद विध्यर्थ में आता है; जैसा मुझे चाहिये कि बहुत परिश्रम करूं न कछु वे ले गये न हम लेजायंगे इसलिये सभों को ऐसा काम करना चाहिये कि परलोक में जाकर भी उजले रहें ॥

भीति, छिपाना, लजाना, वियोग, भिन्नता, सावधानी आदि अर्थ-बोधक क्रियापदों के साथ नाम से पञ्चमी होती है; जैसा वह तुम से

डरता है, यह बात मुझसे मत छिपाओ, वह अपनी दशा से लजाता है, मैं जीते जी तुम से अलग कभी न हूंगी, चौकस मनुष्य दुष्टों से सावधान रहता है ॥

गत्यर्थ क्रियापद के साथ नाम से सप्तमी भी होती है, किस समय स्थान, वा स्थिति में क्रिया होती है यह बोध जिस नाम से होवे उससे सप्तमी का योग होता है; जैसा वे नगर में चले, दो दिन में वह वहां पहुंचेगा, तुम किस घर में रहते हो, वह पलंग पर सोता है, धोखे में मुझसे यह अपराध हुआ ॥

---

७ पाठ

धातु साधित भाव वाचक नाम ॥

प्र० धातु साधित भाववाचक की योजना वाक्य में किस प्रकार से करनी चाहिये ?

उ० धातु को **ना** जोड़ने से भाव वाचक नाम होता है और वह क्रिया का व्यापार वा स्थिति बतलाता है; धातु साधित भाव वाचक नाम से शब्द योगी अव्यय और विभक्त्यादिकों का योग करना हो, तो आकारान्त पुंल्लिङ्ग नाम के समान होता है; पर इससे तृतीया का **ने** प्रत्यय और सम्बोधन नहीं होता और भाव वाचक सकर्मक धातु से बना हो, तो उसके सङ्ग कर्म आता है; जैसा उसका जाना उचित नहीं है, वह घर देखने को आया है, सहायता करने का समय यही है;पढ़ने के लिये आपके पास आया हूं ॥

निश्चयार्थ में धातु साधित भाव वाचक को **का की के** ये षष्ठी के प्रत्यय जोड़कर उस रूप की विशेषणवत् योजना करते हैं; जैसा यह होने का नहीं, मैं नहीं मानने का, कभी २ संप्रदानार्थ में धातु साधित भाववाचक नाम से षष्ठी विभक्ति होतीहै; जैसा वहां जाने की आज्ञा दीजिये॥

गत्यर्थ क्रियापद के साथ संप्रदानार्थ में भाववाचक नाम आवे तो उसके **को** प्रत्यय का लोप कभी २ करते हैं;जैसा वे खेलने वा खेलने के

गये, यह घर देखने को आया है, मैं कल हाट में कई चीज़ें मोल लेने और बेचने जाऊंगा ॥

धातु साधित भाव वाचक नाम वाक्यका उद्देश्य वा विधेय होता है ॥ उद्देश्य वा विधेय के सङ्ग धातु साधित भाव वाचक का रूप आवे तो कभी २ उसकी योजना विशेषणवत् की जाती है, और विशेष्य के अनुसार लिङ्ग वचन होता है ॥ जैसा, लड़के को कमीनों की सोहबतमें रखना ख़राब करना है, बोलना सहज है पर करना कठिन है, तुम्हारी भाषा बोलनी मैंने नहीं सीखी, तलवार की धार पर उंगली रखनी कठिन है, और जो नल ने निर्दयता का काम किया होता तो दमयन्ती को क्षमा करनी चाहिये ॥ आज्ञार्थ में धातु साधित भाववाचक नाम की योजना कभी कभी करते हैं और **मत** वा **न** ये निषेधार्थक अव्यय भी उसके साथ आते हैं; जैसा इस बात को मत भूलना, वहां जाकर ऐसा काम न करना ॥

हो धातु के साथ जब भाववाचक का योग करते हैं, तब आवश्यकता व योग्यता का बोध होता है; जैसा निदान एक रोज़ मरना है सब कुछ छोड़ जाना है, तुमको जाना होगा उसको लिखना होगा ॥

भाववाचक नाम के सामान्य रूप के साथ **लग दे पा** धातुओं का योग क्रम से आरम्भ अनुज्ञा देना और पाना इन अर्थों में होता है जैसा वह कहने लगा, वह लिखने लगा, हम को जाने दो, काम करने दो, वे नहीं आने पाते, मैं खेलने नहीं पाता ॥ शक्त्यर्थ का बोध करनेमें मुख्य धातु से **सक** धातु का योग करते हैं, पर निषेधार्थक अव्यय आवे तो उस धातु के स्थान में कभी २ भाववाचक नामका सामान्य रूप आता है ॥ जैसा वह काम कर सक्ता है, मैं चल न सक्ता था, मैं बोल नहीं सक्ता, मैं नहीं बोल सक्ता हूं ॥

---

८ पाठ

धातु साधित विशेषण ॥

प्र० धातु साधित विशेषणों की योजना किस तरहसे की जाती है?

३० क्रियापद की साधना छोड़ शेष स्थलों में जब धातु साधित विशेषणों का प्रयोग विशेषणवत् किया जाता है, तब उनके रूपों के परे **हुआ हुई हुए** विशेष्य के अनुसार आते हैं; जैसा है कोई ब्रज में मित्र हमारा जो चलते हुए गोपाल को रक्खे, बहुत से लड़के वहां खेलते हुए मैंने देखे, मेरी ब्याही हुई बहन ससुर के यहां आज गई ॥

जब धातु साधित विशेषण विशेष्य के परे आता है, तब सहाय रूप हुआ की योजना कभी २ नहीं करते हैं पर विशेष्य के अनुसार उसका रूप होता है; जैसा जितने गोकुल के गोप ग्वाल थे वे भी अपनी नारियों के शिर पर दहेड़ियां लिवाये, भांति भांति के भेष बनाये, नाचते, गाते, नन्द को बधाई देने आये ॥

कभी २ सकर्मक धातु साधित भूत काल वाचक विशेषण विशेष्य के अनुसार नहीं रहता केवल उसका पुंल्लिङ्ग सामान्य रूप आता है ॥ पर अकर्मक धातु साधित भूतकाल वाचक विशेषण लिङ्ग वचन में विशेष्य के अनुरूप होता है ॥ जैसा, तिनके पीछे मूसल हाथ में लिये एक शूद्र मारता आता है, तुम्हारी लड़की छाता लिये अपने भाई के घर जाती थी, स्त्रियां रङ्ग बरङ्ग बस्त्र पहिने हुए नाचती थीं, वहां किवाड़ खुले पाये भीतर घुसके देखे तो सब सोये पड़े हैं, वह दिक्क हुआ घर आया है, रानी का सिङ्गार बिगड़ा देख एक सहेली बोल उठी ॥

वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण के पुंल्लिङ्ग सामान्य रूपकी योजना कभी २ नामवत् और कभी २ क्रिया विशेषणवत् करते हैं, और यह रूप सकर्मक धातु से बना होवे तो कर्म भी उसके साथ आता है; जैसा मेरे रहते किसी की इतनी सामर्थ्य नहीं जो तुम्हें दुःख दे, इस बात के सुनतेही, यह बात सुनतेही, भोर होतेही, शरदृतु जातेही ॥ पुंल्लिङ्ग वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण के सामान्य रूप की द्विरुक्ति सातत्य बतलाती है, जैसा हमारा काम होते होते हुआ, जाते जाते एक तालाब के पास पहुंचे ॥

९ पाठ

अव्यय विचार ॥

धातु साधित अव्यय ॥

प्र० धातु साधित अव्ययों की योजना कहां और किस प्रकार से होती है?

उ० समुच्चयार्थक धातु साधित अव्यय के पांच प्रकार हैं, वे पूर्व में बतलाये गये हैं ॥

वाक्य में इन अव्ययों का प्रयोजन पड़ता है क्योंकि उनकी योजना करने से वाक्य के अवयवों का मिलाप होता है और उभयान्वयी अव्ययों का प्रयोग करना नहीं पड़ता ॥

उनके रूप से प्रधान क्रिया के पूर्वकाल का बोध होता है इसलिये उन्हें भूतकाल वाचक धातु साधित अव्यय कहने में कुछ दोष नहीं है ॥ उनका सम्बन्ध बहुधा कर्त्ता की तरफ़ और कभी २ कर्म की तरफ़ रहता है; जैसा आज वहां जाकर हमारी किताब लेकर फिर आओ, वह बात सब के मुख से सुनकर बादशाह ने बीरबल से कहा ॥

तत्काल बोधक धातु साधित अव्यय बनाने की रीति पूर्व में बतलाई है, इस अव्यय में गर्भित जो व्यापार वह प्रधान क्रिया के साथही हुआ यह ज्ञान होताहै, इसका अर्थ साधारण रूप से भूतकाल वाचक धातु साधित अव्यय के अर्थ के समान है परन्तु इस से अधिक उद्युक्तता वा जल्दी बूझी जातीहै ॥ पूर्व में कह आये हैं कि इस अव्यय की योजना किंचित् नाम के सदृश होती है, जैसा सुनतेही जरासन्ध अति क्रोध कर सभा में आया और लगा कहने, इतनी बात के सुनतेही हरि कुछ सोच विचार करने लगे, इतनी बात के सुनतेही वह उठ कर चला गया ॥

क्रिया विशेषण, शब्दयोगी अव्यय, और उभयान्वयी अव्यय ॥

प्र० क्रिया विशेषण, शब्द योगी अव्यय, और उभयान्वयी अव्ययों को वाक्य में कहां रखना चाहिये ?

उ० क्रिया विशेषण की योजना वाक्य में जहां चाहिये तहां करते

हैं, परन्तु साधारण नियम यह है कि जिस शब्द का गुण वह बताता है उसके पहिले योजना करनी ठीक है॥

सर्वनाम **जो** वा **कौन** और **तौन** से साधित क्रिया विशेषणों की योजना उन सर्वनामों की योजना के समान होती है अर्थात् पूर्व वाक्य में **जब, जहां, जैसा** इत्यादि आवें तो अनुक्रम से उत्तर वाक्य में **तब तहां तैसा** इत्यादि आते हैं; जैसा जब सत्सङ्ग से रहित होगे तब दुर्जनों की सङ्गति में पड़ोगे, जैसा अब मरे तैसा तब मरे, जो पानी में पैठा तो इसने चतुराई से वे रुपये किसी के हाथ अपने घर भेजदिये॥

जबतक जबलों आदि संयुक्त क्रिया विशेषण बहुधा भूत वा भविष्य कालिक क्रियापदके साथ आते हैं और उस क्रियापदके पूर्व प्रायः निषेधार्थक अव्यय लाते हैं; जैसा जबतक कि मैं न आऊं तब तकवह ठहरे तो तुझे क्या, जब तक मैंने उनसे रुपये की बात नहीं निकाली तब तक वे हर रोज़ हमारे यहां आया करते थे, शब्द योगी अव्यय साधारणतः षष्ठ्यन्त नाम वा सर्वनाम के पश्चात् रखते हैं, परंतु कभी २ उर्दू भाषा की पद्धति के अनुसार उसके पहिले आते हैं; जैसा आगे घर के, तरफ़ शहर के, उभयान्वयी अव्यय **कि** पूर्व शब्द वा वाक्य का बयान करता है; जैसा उनमें से एक ने रुपये वाले से कहा कि अजी क्यों झगड़ते हो लेखा क्यों नहीं सुनते॥

पूर्व वाक्य में सङ्केतार्थ अव्यय जो आवे तो उत्तर वाक्य में तो लाना चाहिये; जैसा जो आप फिर कभी ऐसा वचन कहियेगा, **तो** मैं अपना प्राण तज दूंगी॥ जो तू इसे छोड़ दे तो मैं तुझे एक मोती दूं॥

---

१० पाठ

द्विरुक्ति विचार॥

प्र० शब्द को दो बार कहने से क्या समझा जाता है?

उ० विभाग वा पृथक्ता बताने के लिये संख्या वाचक दो बार लाते हैं; जैसा सब कङ्गालों को दो दो पैसे दो॥

भूतकाल वाचक विशेषण की द्विरुक्ति से परस्पर क्रिया का बोध होता है और उसमें उत्तर पद बहुधा स्त्रीलिङ्गी रहता है; जैसा मारा मारी, ताना तानी, दाबा दाबी इत्यादि ॥

द्विरुक्ति से कभी २ आधिक्यता बूझी जाती है; जैसा वहां बड़े २ वृक्ष हैं, वह धीरे धीरे चलता है, तुम तो बड़े २ दांत निकालते हो ॥

व्याकरण से वाक्य का पदच्छेद ॥

किसी वाक्य के आरम्भ से अन्त तक हर एक शब्द के रूप की व्याकरण रीति से व्याख्या अर्थात् लिङ्ग वचन विभक्ति आदि कहना और उस वाक्य में उनका परस्पर सम्बन्ध कैसा है यह कथन करना उसे व्याकरण पदच्छेद कहते हैं ॥ इससे वाक्य का यथार्थ ज्ञान होता है; जैसा, (हरिने सिंह मारा) हरिने-इकारान्त पुंल्लिङ्ग विशेषण नामकी तृतीया का एक वचन - कर्त्तरि तृतीया—मारा इस क्रियापदका कर्त्ता—शेर यह सामान्य नाम अकारान्त पुंल्लिङ्ग प्रथमा का एक वचन-कर्मणि प्रथमा मारा इस क्रियापद का कर्म मारा यह क्रियापद मार इस सकर्मक धातु का स्वार्थ सामान्य भूतकाल पुंल्लिङ्ग तृतीय पुरुष का एक वचन - इस वाक्य में हरिने-कर्त्ता शेर-कर्म मारा-क्रियापद-कर्मणि प्रयोग ॥

रामने भाई को बुलाया है ॥

रामने-अकारान्त विशेष नाम पुंल्लिङ्ग तृतीया का एकवचन - बुलाया है इस क्रिया का कर्त्ता ॥

भाई को—ईकारान्त सामान्य नाम पुंल्लिङ्ग द्वितीया का एक वचन कर्म बुलाया है क्रियापद का ॥

बुलाया है—बुला इस सकर्मक धातु का स्वार्थ-आसन्न भूतकाल पुंल्लिङ्ग तृतीय पुरुष एक वचन ॥

राम ने—कर्त्ता—भाई को—कर्म—बुलाया है—क्रियापद—भावेप्रयोग ॥

मैं उठ के अपने पिता के पास जाऊंगा ॥

मैं—प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम पुंल्लिङ्ग प्रथमा का एक वचन कर्त्तरि प्रथमा जाऊंगा इस क्रियापद का कर्त्ता ॥

उठके—समुच्चयार्थक पूर्वकाल वाचक धातु साधित अव्यय ॥

अपने—यह सामान्य सर्वनाम षष्ठी का सामान्य रूप **पास** इस शब्द योगी अव्यय के योग से—पास—शब्द योगी अव्यय ॥

जाऊंगा—यह क्रियापद जो इस अकर्मक धातु का स्वार्थ भविष्य काल पुंल्लिङ्ग प्रथम पुरुष का एकवचन ॥

मैं—कर्त्ता, जाऊंगा—क्रियापद, अकर्मक कर्त्तरिप्रयोग ॥

\+

इतना कह उसने तुरन्तही चारों ओरोंके राजाओं को ख़त
लिखे कि तुम अपना दल ले ले हमारे पास आओ ॥

इतना—दर्शक सर्वनाम पुंल्लिङ्ग प्रथमा का एक वचन अर्थ कर्म कह धातु साधित अव्यय का ॥

कह—समुच्चयार्थक धातु साधित अव्यय ॥

उसने—तृतीय पुरुष वाचक सर्व नाम पुंल्लिङ्ग तृतीया का एकवचन लिखे क्रिया का कर्त्ता ॥

तुरन्तही—काल वाचक क्रिया विशेषण अव्यय ॥

चारों—संख्या वाचक विशेषण ओरों का ॥

ओरों के सा०ना०अकारान्त स्त्री० बहुवचन षष्ठी का सामान्य रूप राजा शब्द से विभक्ति का योग होने से ॥

राजाओंको—सा०ना०आकारान्तपुं०चतुर्थीका बहुवचन, अर्थसंप्रदान॥

ख़त—सा०ना०अकारान्त पुंल्लिङ्ग प्रथमा का बहुवचन अर्थ कर्म ॥

लिखे—लिख धा०सकर्मक स्वार्थ सामान्य भूतकाल-पुं०तृ०पु०बहुवचन॥

उसने—कर्त्ता, **ख़त**-कर्म, **लिखे**-क्रियापद ॥ कर्मणि प्रयोग ॥

कि—स्वरूप बोधक उभयान्वयी अव्यय ॥

तुम—द्वि०पु०स०पुंल्लिङ्ग-प्रथमा का बहुवचन **आओ** क्रियापदकाकर्त्ता ॥

अपना—सामान्यस० षष्ठी का बहुवचन सम्बन्ध दल शब्द कीतरफ़, वा सर्वनाम वाचक विशेषण दल शब्द का ॥

\+ जरासन्ध ने ॥

दल—सामान्य नाम अकारान्त पुंल्लिङ्ग प्रथमा का एकवचन अर्थ कर्म ले धातु साधित अव्यय का ॥

लेले—समुच्चयार्थक धातु साधित अव्यय ॥

हमारे—प्रथम पुरुष सर्वनाम पुंल्लिङ्ग बहुवचन षष्ठी का सामान्य रूप **पास** इस शब्द योगी अव्यय के योग से **पास** शब्द योगी अव्यय ॥

आओ—आ धातु अकर्मक आज्ञार्थ वर्त्तमान काल द्वितीय पुरुष बहुवचन **तुम** कर्त्ता **आओ** क्रियापद—अकर्मक कर्त्तरि प्रयोग ॥

———

१ पाठ

छन्दो विचार ॥

प्र० छन्दो बोध का भी वर्णन कीजिये ?

उ० छन्दस् तो अनन्त हैं उन सबों का वर्णन कहां होसक्ता है पर थोड़े प्रसिद्ध २ जोकि बहुधा भाषा में देख पड़ते हैं उनका वर्णन करता हूं सुनो छन्दः **पद्य वृत्त वृत्ति** ये पद्य के नाम हैं ये मात्रा और वर्णके भेद से दो प्रकार के होते हैं जिनमें मात्राओं की गणना होतीहै उन्हें **मात्रा वृत्त** और जिनमें वर्ण अर्थात् अक्षरों की गणना होती है उन्हें **वर्ण वृत्त** कहतेहैं ॥

मात्रा वृत्त का उदाहरण ॥

ज्ञानी तापस शूर कवि कोविद गुण आगार ।
केहि की लोभ बिडम्बना कीन्ह न यहि संसार ॥ १ ॥

वर्णवृत्त का उदाहरण ॥

नमामीशमीशाननिर्व्वाणरूपम् विभुंव्यापकम्ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
नजन्निर्गुणन्निर्विकल्पन्निरीहं चिदाकाशमाकाशबासम्भजेऽहम् ॥२ ॥

ह्रस्व और दीर्घ स्वर के भेद से तीन २ अक्षर के ८ गण मगण नगण भगण जगण सगण यगण रगण तगण बनतेहैं लघुका चिन्ह (।) और गुरुका(ऽ)यहहै॥

आदि मध्य अवसान में भजस होहिं गुरु जानु ।
यरत होहिं लघु क्रमहिं सों मन गुरु लघु सब मानु ॥ ३ ॥

मय भन ये सुख देत हैं रस तज ये दुख देत।
सुखद धरत त्यागत दुखद प्रथमहिं लोग सचेत ॥ ४ ॥

मगण (ऽ ऽ ऽ)	श्रीगङ्गा	सुख	पद्य के आदि में आने से जो
यगण (। ऽ ऽ)	भवानी	सुख	सुखद हैं सो वे सुख और जो
रगण (ऽ । ऽ)	कालिका	दुःख	दुःखद हैं वे दुःख देते हैं
सगण (। । ऽ)	मथुरा	दुःख	
तगण (ऽ ऽ ।)	श्रीराम	दुःख	
जगण (। ऽ ।)	मुरारि	दुःख	
भगण (ऽ । ।)	वामन	सुख	
नगण (। । ।)	कलम	सुख	

२ पाठ

प्र० मात्रा वृत्त के भेद और भी कहिये ?

उ० दोहा १ सोरठा २ पादाकुलक ३ चौपैया ४ पद्मावती ५ रोलावृत्त ६ कुण्डलिका ७ बरवा ८ लवायी ६ हरिगीतिका १० आदि मात्रा वृत्त के भेद अनन्त हैं सोदाहरण लिखता हूं ॥

प्र० १—दोहा का लक्षण कहिये ?

उ० दोहा— छन्दस् के प्रथम और तृतीय चरण में तेरह २ और द्वितीय चतुर्थ में ग्यारह २ मात्रा होती हैं ॥

यथा ॥

श्रीमद वक्र नं कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि।
मृगनयनी के नयन शर के अस लागि न जाहि ॥ ५ ॥

प्र० २—सोरठा का लक्षण कहिये ?

उ० सोरठा—वृत्त के प्रथम तृतीय पाद में ग्यारह २ और द्वितीय चतुर्थ में तेरह २ मात्रा होती हैं ॥

यथा ॥

आयो री घनश्याम एक सखी आचक कह्यो।
विहसत निकसी वाम देखत दुख दूनो भयो ॥ ६ ॥

प्र० ३—पादाकुलक—पादाकुलक का लक्षण कहिये ?

उ० पादाकुलक के कि जिसे भाषामें चौपाई कहते हैं प्रत्येक पद में सोलह २ मात्रा होती हैं ॥

यथा ॥

जब ते राम व्याहि घर आये । नित नव मङ्गल मोद बधाये ॥
भुवन चारि दश भूधर भारी । सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी ॥ ७ ॥

प्र० ४—चौपैया का लक्षण कहिये ?

उ० चौपैया—वृत्त के प्रति चरण में तीस २ मात्रा होती हैं ॥

यथा ॥

प्रेम परायन अति चित चायन मित्र भाव हिय लेखै ।
ऐसे प्रीतिवन्त प्राणी को कल न परै बिन देखै ॥
मन में स्वारथ मुख परमारथ कपट प्रेम दरसावै ।
ऐसे मूढ़ मीति की सुरति सपनेहुं मोहिं न भावै ॥ ८ ॥

प्र० ५—पद्मावती किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस २ मात्रा होती हैं उसे पद्मावती वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

विनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न वर मांगों आना ।
पद पद्म परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ॥
जिहि पद सुर सरिता परम पुनीता प्रकट भई शिव शीश धरी ।
सोई पद पङ्कज जिहि पूजत अजमम शिर धरेउ कृपालु हरी ॥ ६ ॥

प्र० ६—रोलावृत्त किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस २ मात्रा और ११ तेरह पर विश्राम अर्थात् ठहरने का स्थान होता है उसे रोलावृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

हे सीतेश दिनेश वंश पाथोज दिवा कर ।
प्रणत पाल नय पाल दीन बन्धो करुणा कर ॥

अज शङ्कर नुतचरण शरण मांगत मपि मामव ।
बानर धीवर शवर योषि दवने महिमा तव ॥ १० ॥

प्र० ७—कुण्डलिका किसे कहते हैं ?

उ० जिस वृत्तमें प्रथम १ दोहा फिर १ रोला औ सब १४४ मात्रा होती हैं उसे कुण्डलिका कहते हैं ॥

यथा ॥

बिना विचारे जो करै सो पीछे पछिताय ।
काम बिगारै आपनो जग में होत हंसाय ॥
जग में होत हंसाय चित्त में चैन न आवै ।
खाम पान सन्मान राग रङ्ग मन नहिं भावै ॥
कहि गिरिधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है दिन रात्रि कियेजो बिना विचारे ॥

प्र० ८—बरवा छन्दस् का क्या लक्षण है?

उ० जिस के प्रथम और तृतीय पदमें बारह २ और द्वितीय चतुर्थ में सात २ मात्रा होती हैं उसे बरवा छन्दस् कहते हैं ॥

यथा ॥

भज रघुपति पद पङ्कज त्यज सब काम ।
नित रोचन भय मोचन जाकर नाम ॥ १२ ॥

प्र० ९—लवायी वृत्त किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में अट्ठाईस २ मात्रा और अंत्य वर्ण गुरु होते हैं उसे लवायी वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

जे चरण शिव अज पूज्य रज शुभ परशि मुनि पतिनी तरी ।
नख निर्गता सुर बन्दिता त्रैलोक्य पावन सुरसरी ॥
ध्वज कुलिश अंकुश कंज युत बन फिरत कराटक किन्ह लहे ।
पद कंज द्वन्द्व मुकुन्द राम रमेश नित्य भजा महे ॥ १३ ॥

प्र० १०—हरिगीतिका का क्या लक्षण है ?

उ० जिस के प्रत्येक पादमें अट्ठाईस २ मात्रा और १६ बारह मात्रा पर विश्राम और चारों पदों के अन्त में एक २ रगण होता है उसे हरिगीतिका वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

नन्दलाल हित नर बाल तुलसी आल बाल सु लीपहीं ।
पुनि दीपबारि संवारि आर्त्तिक मास कार्त्तिक दीपहीं ॥
मन पूतकारि जन दूत खेलि जगाय माधव गावहीं ।
सखि कूबरी फन्द फन्दि के व्रजचन्द काहरक आवहीं ॥ १४ ॥

---

३ पाठ

वर्ण वृत्त ॥

प्र० वर्णवृत्त के भी कुछ भेद कृपाकर समझाइये ?

उ० चामरवृत्त १ पञ्चचामर २ तोटकवृत्त ३ भुजङ्ग प्रयात ४ आदि अनेक हैं सोदाहरण लिखता हूं ॥

प्र० १—चामर वृत्त का लक्षण कहिये ?

उ० जिसमें गुरु लघु के क्रम से सोलह २ अक्षर का चरण होता है उसे चामर वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

नाम कर्म मात मोहिं देहु ते नमस्सदा ।
सो सुनी कही तहीं गहो स्वनाम अर्त्थदा ॥
काल राचिहै तुहीं तुहीं अडोल बालिका ।
नाम तोर जे कहैं तिन्हैं करै स्वकालिका ॥ १५ ॥

प्र० २ — पञ्चचामर का क्या लक्षण है ?

उ० इस के विपरीति अर्थात् लघु गुरु के क्रम से इतनेहीं वर्णों का पञ्च चामर छन्दस् होता है ॥

यथा ॥

नमामि भक्त बत्सलं कृपालु शील कोमलम् ।
भजामि ते पदाम्बुजं अकामिनां स्वधामदम् ॥

निकाम श्याम सुन्दरं भवाम्बुनाथ मन्दरम् ।
प्रफुल्ल कंज लोचनम् मदादि दोष मोचनम् ॥ १६ ॥

प्र० ३--तोटक वृत्त का लक्षण कहिये ?

उ० जिसके प्रत्येक पाद में चार २ सगण होतेहैं उसे तोटक वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

जय राम रमा रमणं शमनम् भवताप भयाकुल पाहि जनम् ।
अवधेश सुरेश रमेश विभो शरणागत मांगत पाहि प्रभो ॥ १० ॥

प्र० ४--भुजङ्गप्रयात किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में चार २ यगण होते हैं उसे भुजङ्गप्रयात वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

निराकार मोङ्कार मूलन्तुरीय ङ्गिरा ज्ञान गोतीत मीश ङ्गिरीशम्
करालम्महा काल कालङ्कृपालुम् गुणागार संसार पारन्नतोऽहम् ॥ १८ ॥

अधिक भेद और उदाहरण ग्रन्थ की वहुलता से नहीं लिखे ॥

इति

कठिन शब्दोंका कोष ॥

ना० = नाम, वि० ना० = विशेष नाम, पुं० = पुंल्लिङ्ग, स्त्री० = स्त्रीलिङ्ग, वि० = विशेषण, अ० = अव्यय, स० ना० = सर्वनाम ॥

अ

अंक ना०पुं० चिन्ह निशानी संख्या ..
अङ्गाङ्गिभाव ना०पुं० शरीरके अवयवों [का सम्बन्ध
अंत्य वि० अन्तका
अंत्याक्षर- ना० पुं० अंत का अक्षर ..
अकारान्त वि० जिस शब्द के अंत में [अकार है
अज्झल ना०पुं० अच् और हल् अर्थात् [स्वर और व्यञ्जन
अदर्शन ना० पुं० नहीं देख पड़ना ..
अधिकार ना०पुं० एक शब्द का संबंध दूसरे शब्दकी तरफ़ होकर एक के रूप में विकार करने की सामर्थ्य [दूसरे में रहतीहै वह सामर्थ्य
अध्याहार ना० पुं० वाक्यको पूराकरने [केलिये बाहरसे शब्द लाना
अध्याहृत-वि० जिसशब्दकाअध्याहार [किया है
अनिश्चितता ना०स्त्री०जिसकानिश्चय [नहींहै उसकीस्थितिअनिर्णीतपन

अनुकरण ना० पुं० नकल
अनुनासिक वि० नाकसे जिन अक्षरों [का उच्चारण होता है
अनुभव ना०पुं० मानस ज्ञान ..
अनुयायी ना०पुं०पीछेजानेवाला,सेवक
अनुरोध ना०पुं०अनुरूपहोना,वाकरना
अनुसार ना०पुं० अनुरूपहोना, अथवा [अनुरूप
अनेकवर्णात्मक वि० जिसशब्दमेंएकसे [अधिकवर्ण हैं
अन्य वि० दूसरा कोई
अन्वय ना०पुं०वाक्यकेशब्दोंका परस्पर [सम्बन्ध
अपभ्रंश ना० पुं० अपशब्द अशुद्धशब्द
अपवाद ना० पुं० नियमसे बाहरहोने [वालेशब्द इ०
अब्ज ना० पुं० कमल
अवभरण ना० पुं० पानीका भरना ..
अभाव ना० पुं० न होना ..
अर्थानुरोध ना०पुं० अर्थके अनुरूपहोना
अर्पण ना० पुं० देना ..